

गामती

विशेषांक

त्रिपुरा : एक परिचय

पंचम संस्करण | 2021



प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा)

त्रिपुरा, अगरतला

पिन - 799006

आइए, हम सब मिलकर इन बातों को अपनाकर राजभाषा हिंदी का मान बढ़ाएं...

- ❖ सभी वार्तालाप में अपनी अभिव्यक्ति हिंदी में ही करें।
- ❖ धारा 3(3) के कागजात हिंदी/द्विभाषी में ही जारी करें।
- ❖ केवल हिंदी/द्विभाषी में बने फॉर्म/मसौदे का ही प्रयोग करें।
- ❖ सभी अधिकारी/कर्मचारी अपना हस्ताक्षर रोमन लिपि के बदले देवनागरी लिपि में करने का प्रयास करें।
- ❖ फाइलों पर विषय अनिवार्य रूप से हिंदी/द्विभाषी में ही लिखें।
- ❖ कम्प्यूटरों में हिंदी का इस्तेमाल यूनिकोड प्रणाली द्वारा बढ़ाएं।
- ❖ सभी फाइल-कवर, पत्र-शीर्ष, नामपट्ट, साइन-बोर्ड, रबर की मुहरें द्विभाषी में ही बनवाएं।

आवरण पृष्ठ विवरण : पुष्पवंत पैलेस (भूतपूर्व में राजभवन) त्रिपुरा के राज्यपाल का आधिकारिक निवास था। पुष्पवंत पैलेस को महाराजा बीरेंद्र किशोर माणिक्य देवबर्मन बहादुर (शासनकाल 1909-1923) ने 1917 में बनवाया था। उन्होंने एक हरे-भरे पहाड़ी पर एक स्थान का चयन किया, जिसे कुंजबन के नाम से जाना जाता है, जो उज्जयंता महल के उत्तर में 1 किमी की दूरी पर स्थित है। यह कुल 1.76 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला है। महल परिसर के भीतर सुव्यवस्थित गार्डन हैं। बगीचे के दक्षिणी हिस्से को आम लोगों के लिए खोल दिया गया है और इसे रवींद्र कानन नाम दिया गया है।

आवरण पृष्ठ फोटोग्राफी : श्री पार्थसारथी चक्रवर्ती
आवरण पृष्ठ डिज़ाइन : श्री अमर आनन्द मिंज

रचनाकारों के विचार से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

- संपादक मंडल



गामती

पंचम संस्करण | 2021

त्रिपुरा: एक परिचय

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा)

त्रिपुरा, अगरतला

पिन - 799006



हिंदी दिवस 2021

के अवसर पर माननीय
गृहमंत्री जी का संदेश



राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA



प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

“मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।”

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलतः इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियों को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

“जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।”

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल ‘कंठस्थ’ को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए ‘लीला हिंदी ऐप’,- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप तथा ‘ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप’ भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह ‘प्र’ की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह ‘प्र’ की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

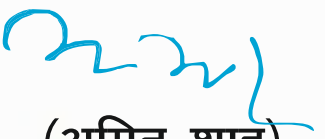
दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूँ कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियों को पुनः हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ, वंदे मातरम !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021


(अमित शाह)



गोमती परिवार



बैठी मुद्रा में

श्री बि. आर. मंडल, प्रधान महालेखाकार महोदय (मध्य में)

श्री एम. नागेश्वर रेड्डी, उपमहालेखाकार (बाईं ओर)

श्री संजय राव कामिनेनी, उपमहालेखाकार (दाईं ओर)

खड़ी मुद्रा में

श्री पार्थसारथी चक्रवर्ती, व. ले. प. अधिकारी (बाएं से पंचम)

श्री नृपेंद्र चंद्र बिश्वास, व. ले. प. अधिकारी (बाएं से प्रथम)

श्री मनिकांत राय, स. ले. प. अधिकारी (बाएं से द्वितीय)

सुश्री सोमवती, व.हिंदी अनुवादक (बाएं से तृतीय)

श्री अमर आनन्द मिंज, क. हिंदी अनुवादक (बाएं से चतुर्थ)

पत्रिका परिवार

प्रधान संरक्षक
श्री बिभास रंजन मंडल
प्रधान महालेखाकार

संरक्षक
श्री एम. नागेश्वर रेड्डी
उपमहालेखाकार (प्रशासन)

प्रधान संपादक
श्री पार्थसारथी चक्रवर्ती
व. ले.प. अधिकारी

संपादक
सुश्री सोमवती
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

सहयोगी संपादक मंडल
श्री मणिकांत राय, स.ले.प.अ.
श्री अमर आनन्द मिंज, क. हिंदी अनुवादक
श्री कुमार मृणाल, व. लेखापरीक्षक
श्री विनोद कुमार सोनी, आं. प्र. प्र.
श्री पंकज कुमार, आं. प्र. प्र.
श्री अमित कुमार, आशुलिपिक

संदेश



त्रिपुरा राज्य स्वयं में एक महासागर-सा है जिसमें विविधताओं, विषमताओं, रीति-रिवाज और संस्कृति की अनन्त गहराई विद्यमान है। भारत के उत्तर-पूर्व में स्थित क्षेत्रफल की दृष्टि से देश का तीसरा सबसे छोटा राज्य त्रिपुरा अपनी जैव-विविधता, वन-संपदा और ऐतिहासिक स्थल से ओत-प्रोत है। त्रिपुरा केरल को पीछे छोड़कर भारत का सबसे शिक्षित राज्य (94.65%) बन गया है। उत्तर-पूर्व में यह दूसरा बड़ा जनसंख्या वाला राज्य है। जहाँ रवीन्द्रनाथ टैगोर और त्रिपुरा के बीच हमेशा से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है, वहीं एस. डी. बर्मन, आर. डी. बर्मन, दीपा कर्माकर आदि ने देश को विश्व-जगत में गौरवान्वित किया है। त्रिपुरा का शक्तिपीठ- त्रिपुरा सुंदरी मंदिर, पिलक, मोइनमती व बक्सनगर: बौद्ध एवं हिन्दू पुरातत्व स्थल, चतुर्दश-देवता व कस्बा काली मंदिर, उनाकोटि में पत्थरों पर उकेरी नक्काशी, नीरमहल, छबिमुरा, त्रिपुरा राजवंश का इतिहास आदि प्राचीन भारत के इतिहास को समृद्ध बनाता है। प्राकृतिक सौन्दर्य के मामले में भी त्रिपुरा अद्वितीय है। इस राज्य का लगभग 70% हिस्सा वनों और पहाड़ों से घिरा है। त्रिपुरा का रुद्रसागर झील, डंबुर झील, गोमती नदी, औषधीय पौधे व वनस्पतियाँ, चाय बागान व बांस बागान आदि प्राकृतिक सुन्दरता में चार चाँद लगा देती हैं। विविधता के मामले में भी त्रिपुरा अव्वल है। यहाँ की स्थानीय जनजाति एवं उनकी भाषाएँ, पारंपरिक परिधान व जायकेदार व्यंजन भी अनुपम हैं।

वार्षिक हिंदी पत्रिका गोमती के पांचवे अंक, “त्रिपुरा: एक परिचय” के माध्यम से हमारा कार्यालय पाठकगण को त्रिपुरा की अथाह गहराई तक ले जाना चाहता है। इसमें राजभाषा हिंदी की अहम् भूमिका है। यह राष्ट्र की सम्पर्क भाषा होने के ही प्रत्येक भारतवासी की हृदयांगिनी भी है। इसी भूमिका को बांधते हुए हमारे कार्यालय को विशेषांक “त्रिपुरा: एक परिचय” का विमोचन करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। अतः आशा है की इस अंक के प्रबुद्ध पाठक इसे रुचिकर एवं उपयोगी पाएंगे। फिर भी प्रतिक्रिया, जोकि बौद्धिक स्तर पर सहयोगिनी है, पाठकगण पर निर्भर है।

अंततः हिंदी पत्रिका गोमती के पांचवे अंक, “त्रिपुरा: एक परिचय” विशेषांक के सफल प्रकाशन के लिए ढेर सारी शुभकामनाएं।

वि. आर. मंडल

(बि. आर. मंडल)

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

त्रिपुरा, अगरतला



संदेश



हम सब वैभवशाली भूमि भारत के निवासी हैं। हमारा देश कितना वैविध्यपूर्ण और बहुरंगी है एवं हम इसके विषय में बहुत कम जानते हैं। अभी भी हम बहुत से क्षेत्रों और जनजातियों की संस्कृति तक नहीं पहुंच सके हैं। पूर्वोत्तर भारत के निवासी विभिन्न घाटियों व पर्वतीय तलहटियों में बिखरे हुए हैं, जिस वजह से वे अनेक विशिष्ट संस्कृतियों से युक्त हैं। पूर्वोत्तर भारत में ही अपनी एक अलग पहचान और सांस्कृतिक रंगों से भरपूर त्रिपुरा राज्य का अपना एक अलग ही आभामंडल है जहां बंगाली और कोकबोरोक भाषा के साथ-साथ हिंदी भाषा का भी समान महत्व एवं दर्जा है। हमारा अथक प्रयास है कि लोग हिंदी भाषा के माध्यम से त्रिपुरा राज्य का परिचय प्राप्त करें। हिंदी भाषा के विकास में यह विशेषांक एक अभिप्रेरक है। इसे ध्यान में रखकर इस पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है जिसे लेकर मैं अति आनन्दित एवं प्रसन्न हूं।

“गोमती पंचम” का “त्रिपुरा : एक परिचय” पर केंद्रित विशेषांक के लिए संपादक-मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

एम एन रेड्डी

(एम. नागेश्वर रेड्डी)

उपमहालेखाकार (एएमजी-। एवं प्रशासन)



त्रिपुरा विविधताओं व बहुलताओं के मामले में भारत का एक अनूठा और दिलचस्प राज्य है। किस्म-किस्म की भाषाएं, रीति-रिवाज़, खान-पान, रहन-सहन, लोकगीत, नृत्य, धर्म-संप्रदाय, सामाजिक संरचनाएं व संस्थाएं इस प्रदेश को बेहद वैविध्यपूर्ण राज्य बनाती हैं। यहां की भौगोलिक स्थिति, हस्तशिल्प, वनस्पतियां, जायकेदार व्यंजन आदि अत्यंत खास हैं। हिंदी भाषा एक ऐसी शक्ति है जिसके द्वारा हम अपने अनुभवों, विचारों, दर्शनों आदि को लोगों तक सरलता से पहुंचा सकते हैं। हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'गोमती-V' के 'त्रिपुरा : एक परिचय' पर केंद्रित विशेषांक द्वारा हमारा प्रयास है कि लोग 'त्रिपुरा' राज्य के विषय में जानने के लिए हिंदी भाषा को अपना मार्गदर्शक बनाएं और अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा राजभाषा हिंदी को व्यावहारिक रूप में अधिकाधिक प्रयोग में लाया जाए।

'गोमती-V' का 'त्रिपुरा : एक परिचय' पर केंद्रित विशेषांक का विमोचन करते हुए मुझे काफी सुखद अनुभव हो रहा है। 'गोमती परिवार' को इस विशेषांक के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक अभिनंदन।

(संजय कामिनेनी)

उपमहालेखाकार (एएमजी-II)



भारत का 'त्रिपुरा' राज्य पर्यटन की दृष्टि से आकर्षण का केंद्र है। यहां की प्राकृतिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर पर्यटकों को अपनी ओर लुभाती है। 'त्रिपुरा' के परिदृश्य में पाए जाने वाले व्यापक विविधता और सांस्कृतिक विरासत लोगों को अनुसंधान एवं मनोरंजन के कई विकल्प प्रदान कर रहे हैं। 'गोमती-V' के 'त्रिपुरा : एक परिचय' पर केंद्रित विशेषांक द्वारा हिंदी भाषा के माध्यम से त्रिपुरा के भौगोलिक एवं प्राकृतिक भव्यता, सांस्कृतिक सौंदर्यपरकता एवं पवित्र विरासत मूल्यों को संजोकर रखने का हमारा प्रयास है।

'गोमती-पत्रिका' के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(नृपेंद्र चंद्र बिश्वास)

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

प्रधान संपादक की कलम से

त्रिपुरा पूर्वोत्तर भारत का एक छोटा सा सुंदर राज्य है। विविधता से भरपूर। यह राज्य प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ ऐतिहासिक वास्तुकला और लोक-संस्कृति में भी समृद्ध है। महँगे और अपर्याप्त परिवहन व्यवस्था के कारण भारत के अन्य राज्यों के लोग स्वतंत्रता के इतने वर्षों के बाद भी त्रिपुरा के बारे में अधिक नहीं जानते हैं। त्रिपुरा का इतिहास काफी प्राचीन है। फा और माणिक्य के राजाओं ने यहां सदियों से शासन किया है। उन प्राचीन ऐतिहासिक स्मारकों के खंडहर आज भी त्रिपुरा की प्राचीन राजधानी उदयपुर में देखे जा सकते हैं। वहीं दूसरी ओर उनाकोटि, छबिमुरा, पिलक या बॉक्सनगर में प्राचीन धार्मिक स्थापत्य को देखा जा सकता है। राज्य के कई हिस्सों में बिखरे हुए विभिन्न ऐतिहासिक स्मारक भी हैं।

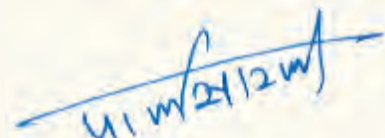
त्रिपुरा में 19 विभिन्न आदिवासी समुदायों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। दूसरी ओर बंगालियों के पास भी बहुत समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। विभिन्न भाषाओं और जातियों के इस मेल ने त्रिपुरा को सामाजिक एकता की मिसाल बना दिया है। साल के अलग-अलग समय पर, विभिन्न त्योहारों के माध्यम से, सभी सामूहिक रूप से इस एकता का जश्न मनाते हैं।

त्रिपुरा के वन संसाधन भरपूर हैं, जिनमें चार वन्यजीव अभ्यारण्य शामिल हैं। त्रिपुरा के कुल क्षेत्रफल का 60% वन है। नतीजतन, इस राज्य में प्रदूषण का स्तर कम है और वर्षा प्रचुर मात्रा में होती है। इतने अधिक जंगल होने के कारण त्रिपुरा में जानवरों और पक्षियों की कई प्रजातियाँ देखी जा सकती हैं। इनमें से उल्लेखनीय है तमाशा बंदर, जो दुनिया में बहुत कम जगहों पर पाया जाता है।

हम त्रिपुरा के इस विविध संसाधन के साथ इस साल का 'गोमती स्पेशल एडिशन' प्रकाशित कर रहे हैं। हमारा मुख्य उद्देश्य विभिन्न निबंधों के माध्यम से आपको त्रिपुरा के विभिन्न खजाने से परिचित कराना है। इसके अलावा, मेरा मानना है कि जो लेखक इसमें शामिल हुए हैं, वर्तमान कोविड महामारी के दौरान उनकी मानसिक स्थिति में कुछ हद तक सुधार जरूर हुआ है।

आप सभी खुश रहें, स्वस्थ रहें और सावधान रहें।

॥ जय हिन्द ॥



(श्री पार्थसारथी चक्रवर्ती)

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक की कलम से

कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'गोमती-V' का त्रिपुरा राज्य पर केंद्रित विशेषांक आप सब आदरणीय पाठकगण को सहृदय प्रस्तुत है। त्रिपुरा पर केंद्रित विशेषांक निकालने की परिकल्पना माननीय प्रधान महालेखाकार 'श्री बिभास रंजन मंडल' जी की थी जो स्वयं एक हरफनमौला व्यक्तित्व हैं। उनके आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन से ही गोमती पत्रिका का यह अंक आप सबके कर-कमलों में समर्पित है। भारत के उत्तर-पूर्वी सीमा पर स्थित त्रिपुरा राज्य क्षेत्रफल की दृष्टि से देश का तीसरा सबसे छोटा राज्य है। इसके उत्तर, पश्चिम और दक्षिण में बांग्लादेश की सीमा लगती है। बांग्ला और त्रिपुरी भाषा (कोकबोरोक) यहां की मुख्य भाषाएं हैं। ऐसा कहा जाता है कि त्रिपुरा राज्य में ययाति वंश के 39वें राजा 'त्रिपुरा' के नाम पर इसका नाम 'त्रिपुरा' पड़ा। एक मत के मुताबिक स्थानीय देवी त्रिपुरा सुंदरी के नाम पर यहां का नाम त्रिपुरा पड़ा। यह हिंदू धर्म के 51 शक्तिपीठों में से एक है।

त्रिपुरा में लगभग अपने ढाई वर्ष के कार्यकाल के उपरान्त मैंने पाया कि त्रिपुरा के सभी लोग हिंदी बोलते भी हैं और बखूबी समझते भी हैं। संस्कृत भाषा से उपजने के कारण बंगाली और राजभाषा हिंदी में बहुत सारी समानताएं भी हैं। अतः मैं उन सभी अहिंदी भाषी अधिकारियों/कर्मचारियों का तहेदिल से आभार प्रकट करना चाहूंगी जिन्होंने अपने रोजमर्रा के व्यस्ततम क्रिया-कलापों से समय निकालकर गोमती पत्रिका में अपना साहित्यिक योगदान दिया। यह राजभाषा हिंदी के प्रति उनका छोटा ही सही लेकिन सराहनीय प्रयास है।

त्रिपुरा पर विशेषांक निकालने का हमारा एकमात्र उद्देश्य यही है कि गोमती के इस अंक द्वारा त्रिपुरा राज्य से जुड़े हर पहलू पर रोशनी डाली जाए। महान दार्शनिक एवं आध्यात्मिक गुरु स्वामी विवेकानंद जी ने भी जीवन के व्यापक अर्थ को समझने के लिए पूरे भारत का पैदल भ्रमण किया था और सेंट ऐंगस्टीन का भी कथन है कि "दुनिया एक किताब है और जो यात्रा नहीं करते वे केवल एक पन्ना पढ़ते हैं।" अतः आप सब गोमती के इस ज्ञानवर्धक अंक द्वारा अपनी जगह पर ही बैठे हुए त्रिपुरा राज्य का वर्चुअल (आभासी) भ्रमण करें और पत्रिका पढ़ने के बाद अपने बहुमूल्य सुझाव से हमें अवगत कराएं ताकि पत्रिका के संवर्धन में मदद मिलें।

आपकी शुभाकांक्षी
सोमवती
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

पाठकों की कलम से

मन की भाषा प्रेम की भाषा,
हिंदी है भारत जन की भाषा।

गोमती पत्रिका के चतुर्थ अंक को जिन पाठक कार्यालयों ने सराहा है उनकी सूची निम्नानुसार है: -

क्र.सं.	कार्यालय का नाम	क्र.सं.	कार्यालय का नाम
1	कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), छत्तीसगढ़, रायपुर	10	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.), हरियाणा, चण्डीगढ़
2	कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), राजस्थान, जयपुर	11	कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, केंद्रीय मुंबई
3	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना	12	कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (आर्थिक एवं सेवा मंत्रालय), नई दिल्ली
4	प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखंड, राँची	13	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षेत्र ले. प.), प. बंगाल, कोलकाता
5	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), पंजाब, चंडीगढ़	14	कार्यालय महानिदेशक (ले.प.) केंद्रीय, कोलकाता
6	कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), मध्य प्रदेश, भोपाल	15	कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक), रायपुर, छत्तीसगढ़
7	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हिमाचल प्रदेश, शिमला	16	कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय व्यय), नई दिल्ली
8	कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), लखनऊ	17	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड
9	कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), राजस्थान, जयपुर		

आप सभी पाठकगणों का तहेदिल से आभार एवं धन्यवाद। आशा करते हैं कि भविष्य में भी आप अपने बहुमूल्य विचारों एवं प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत कराते रहेंगे।



अनुक्रमणिका

क्र. सं.	रचना का नाम	रचनाकार (श्री/सुश्री)	पृ.सं.
1.	त्रिपुरा एवं गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर	श्री बिभास रंजन मंडल, माननीय प्रधान महालेखाकार	1
2.	नीरमहल एवं रुद्रसागर झील (रामसर स्थल)	एच. एमेन्तोली सोहे, स.ले.प.अ.	6
3.	त्रिपुरा का दुर्गा-पूजा महोत्सव	मनिकांत राँय, स.ले.प.अ.	8
4.	शक्तिपीठ - त्रिपुरा सुंदरी मंदिर, माताबाड़ी	समरजीत बनर्जी, स.ले.प.अ.	12
5.	जंपुई हिल एवं ऑरेंज फेस्टिवल	अभिजीत पात्रा, व.ले.प.अ.	14
6.	त्रिपुरा की नदियां	जय शंकर परमार, स.ले.प.अ.	15
7.	सिपाहीजला राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्यजीव संरक्षण	पार्थसारथी चक्रवर्ती, व. ले. प. अ.	17
8.	त्योहारों व उत्सवों का राज्य (त्रिपुरा)	गौतम सरकार, स.ले.प.अ.	20
9.	उनाकोटि - पत्थरों पर उकेरी नक्काशी	उत्तम धर, स.ले.प.अ.	22
10.	त्रिपुरा के चाय बागान	नृपेंद्र चन्द्र बिश्वास, व.ले.प.अ.	24
11.	त्रिपुरा की वनस्पतियां	रूपक भट्टाचार्य, स.ले.प.अ.	29
12.	त्रिपुरा की झीलें (डंबुर लेक आदि)	संतोष कुमार, स.ले.प.अ.	30
13.	उज्जयंता पैलेस - राज्य संग्रहालय	पंकज कुमार, आं.प्रं.प्र.	33
14.	त्रिपुरा : भौगोलिक दृष्टिकोण व जलवायु	नमित कुमार, आशुलिपिक	35
15.	आजीविका, अर्थव्यवस्था, आर्थिक गलियारा : विकास की ओर बढ़ता त्रिपुरा	प्रिंस चौधरी, एमटीएस	36
16.	चतुर्दश मंदिर व कसबा काली मंदिर	कुमार मृणाल, व.ले.प.	39
17.	पिलक, मोइनमोती एवं बक्सनगर : बौद्ध एवं हिंदू पुरातत्व स्थल	सोमवती, व. हिन्दी अनुवादक	41
18.	दीपा कर्माकर : ओलंपिक तक की उड़ान	ऋषभ राज, एमटीएस	45

19.	नोबेल विजेता : रवीन्द्रनाथ टैगोर का योगदान	बिल्टू साहा, स.ले.प.अ.	48
20.	त्रिपुरा में रबर प्लांटेशन - सामाजिक, आर्थिक व पर्यावरणीय प्रभाव	अमर आनंद मिंज, क. हिंदी अनुवादक	51
21.	लोकनृत्य एवं पारंपरिक परिधान	प्रधान चौधरी, एमटीएस	54
22.	रोमांच एवं रहस्य से भरपूर छबिमुरा	अमित कुमार, आशुलिपिक	56
23.	स्थानीय जनजातियां एवं उनकी प्रमुख भाषाएं	रोहित कुमार, एमटीएस	58
24.	त्रिपुरा के पारंपरिक एवं जायकेदार व्यंजन	आशीष कुमार गुप्ता, एमटीएस	60
25.	त्रिपुरा की महिलाएं एवं सशक्तिकरण	विशाल सिंह, एमटीएस	63
26.	त्रिपुरा के हस्तशिल्प (हैंडीक्राफ्ट्स)	श्री विनोद कुमार सोनी, आं.प्र.प्र.	65
27.	त्रिपुरा राजवंश का इतिहास	चंद्रिमा बिश्वास, एमटीएस	68
28.	‘त्रिपुरा’ एवं ‘अगरतला’ के नामकरण का इतिहास	पुष्पेंद्र कुमार, आं.प्र.प्र.	71
29.	त्रिपुरा एवं संविधान की छठी अनुसूची	प्रतीक बिरिंग, एमटीएस	72
30.	त्रिपुरा के ग्रीष्मकालीन अतिथि	दीपायन चक्रवर्ती, स. पर्यवेक्षक	75
31.	त्रिपुरा की लुप्तप्राय ब्रू / रियांग जनजाति में श्रम के बदले श्रम देने की प्रथा	किशोर जमातिया, व. लेखापरीक्षक	78
32.	सचिन देब बर्मन(एस.डी.बर्मन)और राहुल देब बर्मन(आर.डी.बर्मन)	सामग्री संकलन: अमर आनंद मिंज, प्रेरणा: माननीय प्रधान महालेखाकार	83
33.	डाक टिकट और त्रिपुरा	सामग्री संकलन: अमर आनंद मिंज, प्रेरणा: माननीय प्रधान महालेखाकार	84
34.	त्रिपुरा राजवंश की कला और संस्कृति की समृद्ध विरासत	रूपक देबबर्मा, स.ले.प.अ.	85
35.	कार्यालयीन गतिविधियां		89
36.	वार्षिक कार्यक्रम		95

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग से प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिकाओं के नाम का सूची विवरण

माननीय प्रधान महालेखाकार 'श्री बिभास रंजन मंडल' ने वर्ष 2020 में मनाये गये हिंदी पखवाड़े के दौरान सुझाव दिया कि भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग से प्रकाशित होने वाली सभी कार्यालयों की हिंदी पत्रिकाओं के नाम की पुनरावृत्ति से बचने के लिए सभी कार्यालयों से प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिकाओं के नाम ई-मेल द्वारा प्राप्त किए जाएं। परिणामस्वरूप सभी कार्यालयों से हमें सकारात्मक सहयोग मिला और 41 कार्यालयों द्वारा उनकी हिंदी पत्रिकाओं के नाम हिंदी कक्ष को प्राप्त हुए। जिन कार्यालयों के पत्रिकाओं के नाम की पुनरावृत्ति है वे अपनी सुविधानुसार अपेक्षित परिवर्तन कर सकते हैं। पत्रिकाओं के नाम की सूची निम्नलिखित है : -

क्र.सं.	पत्रिका	कार्यालय	राज्य
1	संधान	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.- II), लखनऊ	उत्तर प्रदेश
2	श्रेय	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.-I), ग्वालियर	मध्य प्रदेश
3	लेखापरीक्षा अर्चना	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.-I), जयपुर	राजस्थान
4	कावेरी	कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.), बेंगलुरु	कर्नाटक
5	सुगंधा	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.), चंडीगढ़	पंजाब
6	हिमप्रभा	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.), शिमला	हिमांचल प्रदेश
7	वीरांगना	कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक) II, ग्वालियर	मध्य प्रदेश
8	सुमन	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.-I), चेन्नई	तमिलनाडु
9	नवकिरण	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक), चंडीगढ़	हरियाणा
10	नर्मदा	कार्यालय महालेखाकार (ले.प.-II), भोपाल	मध्य प्रदेश
11	अमृत	कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक), चेन्नई	तमिलनाडु
12	हिमशिखर	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.), गंगटोक	सिक्किम
13	गिरनार	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक), राजकोट	गुजरात
14	मरुलेखा वातायन	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक), जयपुर	राजस्थान
15	अंकुर	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक), चंडीगढ़	पंजाब और केंद्र शासित चंडीगढ़
16	प्रयास	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.), देहरादून	उत्तराखंड
17	पूर्वाशा	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.), (शिलांग)	मेघालय

18	रश्मि	कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, नागपुर	महाराष्ट्र
19	हिमज्योति (वार्षिक पत्रिका)	कार्यालय महालेखाकार (ले. व ह.), देहरादून	उत्तराखंड
20	नवीन पूर्वाचल संदेश	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक), शिलांग	मेघालय
21	लेखापरीक्षा प्रकाश	भारत के नियंत्रक एवं महालेखपरीक्षक का कार्यालय, नई दिल्ली (मुख्यालय)	दिल्ली
22	चेतना	प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.), पटना	बिहार
23	कलिका	संयुक्त रूप से तेलंगाना एवं आंध्र प्रदेश (ले. व ह., ले.प., केंद्रीय), हैदराबाद	आंध्र प्रदेश व तेलंगाना
24	लोहित	प्रधान महालेखाकार (ले.प.), गुवाहाटी	असम
25	सुरभि	कार्यालय महालेखाकार ,(ले.प.-I), भुवनेश्वर	ओडिशा
26	लेखा संगम	कार्यालय महालेखाकार (ले. व ह.- II), इलाहाबाद	उत्तर प्रदेश
27	वंदे मातरम्	प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.), कोलकाता	पश्चिम बंगाल
28	संकलन (छमाही बुलेटिन)	कार्यालय महालेखाकार (ले. व ह.), देहरादून	उत्तराखंड
29	मितान	कार्यालय महालेखाकार (ले.प. एवं ले. व ह.), रायपुर	छत्तीसगढ़
30	हिम प्रभा	कार्यालय महालेखाकार (ले.व ह.), शिमला	हिमाचल प्रदेश
31	सूर्यसुता	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.), नई दिल्ली	दिल्ली
32	उदिशा	राष्ट्रीय लेखापरीक्षा तथा लेखा अकादमी, शिमला	हिमाचल प्रदेश
33	आभा	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), चंडीगढ़	हरियाणा
34	प्रहरी	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), पटना	बिहार
35	उद्याचल	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), राँची	झारखंड
36	सुगंधा	कार्यालय प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नई,	तमिलनाडु
37	मरुधरा	कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), जयपुर	राजस्थान
38	भावना	कार्यालय महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केंद्रीय), चेन्नई, शाखा-कोच्चि	तमिलनाडु
39	अभिलाषा	महानिदेशक, लेखापरीक्षा, रक्षा सेवा, दिल्ली	दिल्ली
40	संगाई	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.), इम्फाल	मणिपुर
41	अभिव्यक्ति	कार्यालय महानिदेशक (ले.प.), बिलासपुर	छत्तीसगढ़

त्रिपुरा एवं गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर



श्री बिभास रंजन मंडल, प्रधान महालेखाकार

“बहुत से लोग मुझसे पूछते हैं, ‘तुम यूरोप की यात्रा करने क्यों जा रहे हो?’ मैं समझ नहीं पाता कि इस प्रश्न का क्या उत्तर दूं। यदि कहूं कि भ्रमण करना ही यात्रा का उद्देश्य होता है तो प्रश्नकर्ता सोचेंगे मैंने उनकी बातों का गंभीर उत्तर नहीं दिया फलाफल का विचार करके नफे-नुकसान का हिसाब जब तक ना दिया जाए तब तक मनुष्य का मन संतुष्ट नहीं होता। बिना किसी जरूरत के आदमी अचानक घूमने क्यों निकले? यह प्रश्न हमारे ही देश में पूछा जा सकता है। हम यह बात बिल्कुल ही भूल गए हैं कि घूमने की इच्छा मनुष्य के लिए स्वभावसिद्ध है। घर ने हमें इतने बंधनों से बांध रखा है, देहरी के बाहर पांव रखते ही हमारे यहां इतनी छींके सुनाई पड़ती हैं, इतने आंसू बहाए जाते हैं कि बाहर कि दुनिया हमारे लिए अत्यंत पराई हो उठी है; घर के साथ उसका संबंध पूर्णतया विच्छिन्न हो गया है। थोड़े समय के लिए भी यदि हमें बाहर जाना होता है तो बहुत बड़ी आत्मीय मंडली के प्रति हम जिम्मेदारियां अनुभव करते हैं। हमारे पंख इस तरह बंध गए हैं कि हमें इस बात पर विश्वास ही नहीं होता कि उड़ना अपने आपमें आनंदप्रद हो सकता है।”

- गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के निबंध “यात्रा से पहले” का उद्धरण

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई सन् 1861 को कोलकाता में हुआ था। रवीन्द्रनाथ टैगोर एक कवि, संगीतकार, उपन्यासकार, नाटककार, चित्रकार और दार्शनिक थे। वे एशिया के प्रथम व्यक्ति थे जिन्हें साहित्य में “गीतांजलि” के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। नोबेल पुरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ टैगोर का त्रिपुरा रियासत के शासकों के साथ घनिष्ठ संबंध त्रिपुरा राज्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय जोड़ता है। यह निश्चित रूप से राजा रत्न माणिक्य (1464-68) के दिनों से त्रिपुरा के माणिक्य वंश के शासकों द्वारा बांग्ला भाषा और संस्कृति को दिए गए सम्मान का एक स्वाभाविक परिणाम था। त्रिपुरा के शासक राजा कृष्ण किशोर माणिक्य (1830-1849) रवीन्द्रनाथ जी के दादा राजकुमार द्वारकानाथ टैगोर के संपर्क में थे। 6 मई, 1886 को राजा बीर चंद्र माणिक्य (1862-1896) को लिखे अपने पहले पत्र में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने त्रिपुरा के इतिहास संबंधी

तथ्यों को ढूँढते हुए इस पारिवारिक संबंध का उल्लेख किया था, बाद में उन्होंने इस संबंध पर आधारित प्रसिद्ध उपन्यास 'राजर्षि' और नाटक 'विसर्जन' और 'मुकुट' की रचना की।

जब वर्ष 1881 में अपनी रानी भानुमती देवी की असामयिक मृत्यु के बाद राजा बीर चंद्र माणिक्य सदमे की स्थिति में थे, तब उन्होंने युवा रवींद्रनाथ टैगोर की प्रसिद्ध प्रेम-कविता 'भग्न हृदय' का अध्ययन किया और उनके भव्य गीत में अपनी पीड़ा की प्रतिध्वनि को पाया। रवीन्द्रनाथ टैगोर की लेखनी से प्रभावित होकर राजा ने अपने राजनीतिक सचिव राधा रमन घोष को कवि को बधाई देने के लिए कलकत्ता के पास 1882 में जोरासांको भेजा। उसके बाद राजा के निमंत्रण पर, टैगोर पहली बार 1899 में त्रिपुरा आए। राजा और युवा कवि के बीच संबंध काफी घनिष्ठ थे और जब भी राजा कोलकाता जाते थे, तो वह कवि से मिलते थे। उन्होंने रवींद्रनाथ जी के लेखन-कार्यों को मुद्रित और प्रकाशित करने के लिए एक संपूर्ण प्रेस को खरीदने और स्थापित करने की पेशकश की।

राजा बीर चंद्र माणिक्य के पुत्र और उत्तराधिकारी राजा राधाकिशोर माणिक्य (1897-1909) के भी टैगोर के साथ घनिष्ठ संबंध थे और उनके ही शासनकाल के दौरान कवि सर्वप्रथम वर्ष 1900 में त्रिपुरा आए। इसी तरह, राजा बीरेंद्र किशोर माणिक्य ने भी रवींद्रनाथ जी के साथ घनिष्ठ और सम्मानजनक संबंध बनाए रखा। गुरुदेव के नोबेल पुरस्कार जीतने के बाद राजा बीरेंद्र किशोर ने इस अवसर का जश्न मनाने के लिए एक समारोह का आयोजन किया और कवि ने वर्ष 1919 में पुनः त्रिपुरा का दौरा किया। कवि वर्ष 1926 में सातवीं और आखिरी बार अगरतला आए जब उनकी मुलाकात राजा बीर बिक्रम किशोर माणिक्य (1923-1947) से हुई।

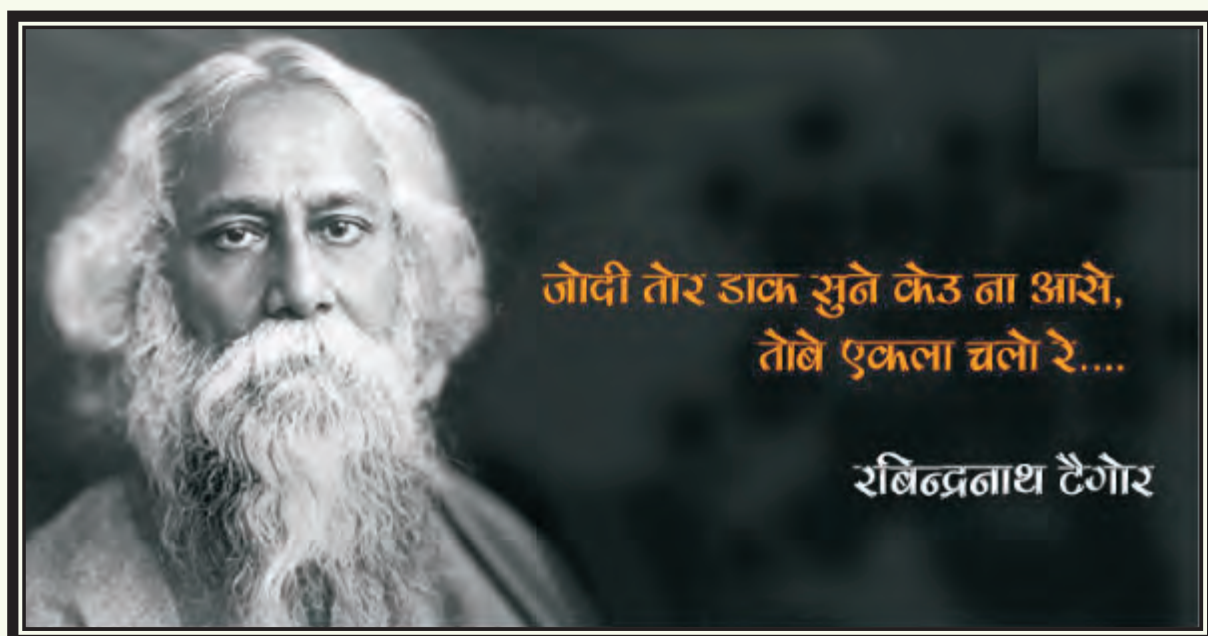
राजा बीर बिक्रम किशोर माणिक्य कवि के एक समर्पित प्रशंसक थे और उन्होंने कवि के अस्सीवें जन्मदिन को मनाने के लिए मई 1941 में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया। जब कुछ महीनों के भीतर कवि की मृत्यु हो गई, तो राजा बीर बिक्रम किशोर माणिक्य के कहने पर त्रिपुरा में एक दिन का आधिकारिक शोक मनाया गया। कवि ने त्रिपुरा की अपनी यात्रा के दौरान कम से कम पांच प्रसिद्ध और नरमदिल गीत लिखे थे। बीर चंद्र से बीर बिक्रम किशोर माणिक्य तक माणिक्य वंश के सभी राजाओं ने रवींद्रनाथ टैगोर और उनके पश्चिम बंगाल के बोलपुर में सपनों की परियोजना 'विश्वभारती', को उदार स्वरूप वित्तीय सहायता प्रदान की थी। इस सहायता ने जल्द ही वार्षिक अनुदान का रूप ले लिया और राज्य के अंतिम राजा बीर बिक्रम किशोर माणिक्य (1923-1947) के अंतिम दिनों तक यह अनुदान त्रिपुरा रियासत के वार्षिक बजट का हिस्सा बन गया। प्रसिद्ध कलाकार धीरेंद्र कृष्ण देबबर्मन और मणिपुरी नृत्य विशेषज्ञ बुद्धिमंत सिंह को 'विश्व भारती' में प्रतिनियुक्त किया गया था और यह त्रिपुरा का योगदान था जिसने 'विश्व भारती' प्राधिकरण को अपने सांस्कृतिक पाठ्यक्रम में मणिपुरी नृत्य को पेश करने में सक्षम बनाया।

टैगोर द्वारा 28 जून, 1927 को टेलीग्राम भेजा गया था जिसमें लिखा था,

"महामहिम, महाराजा त्रिपुरा, अगरतला, मैं धीरेन के खर्च के बारे में आपसे मदद मांग रहा हूँ, जिसे मेरे साथ जावा जाने के लिए लगभग तीन हजार रुपये की आवश्यकता है, जिससे उन्हें अपने कलात्मक करियर के लिए अनूठा अवसर मिलेगा - रवीन्द्रनाथ टैगोर।"

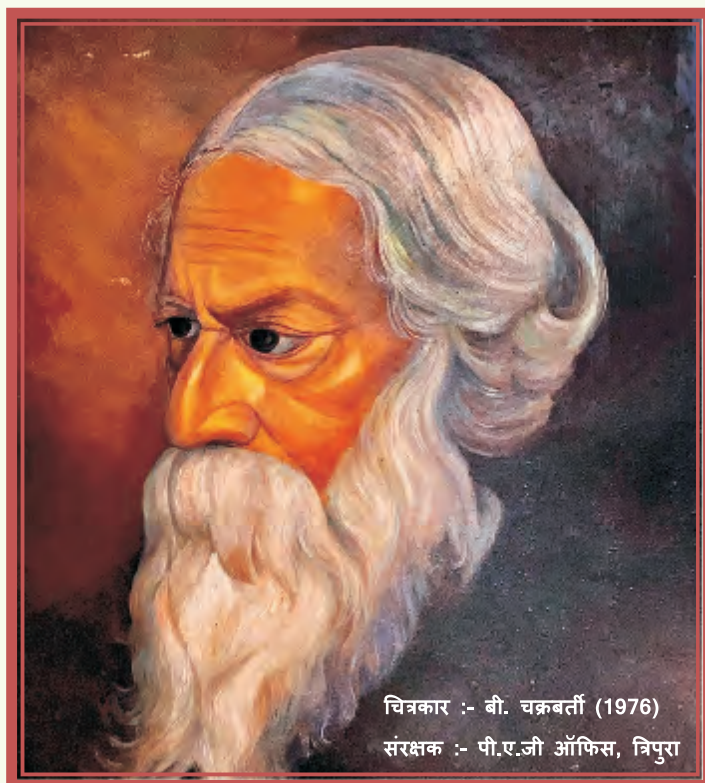
धीरेंद्र कृष्ण देबबर्मन, जो त्रिपुरा के राजा के करीबी रिश्तेदार थे, बाद में एक प्रसिद्ध चित्रकार, मूर्तिकार और कला भवन, विश्व-भारती के प्रिंसिपल बने। टेलीग्राम पर 5 जुलाई, 1927 को राजा बीर बिक्रम के हस्ताक्षर और भुगतान के लिए राजा का एक आदेश है।

टैगोर के देहान्त के एक महीने पहले ही राजा बीर बिक्रम किशोर माणिक्य ने अन्य शाही लोगों के साथ, 'विश्व भारती' का दौरा किया और गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर को 'भारत भास्कर' की उपाधि से सम्मानित किया। कवि की 150वीं जयंती के शुभ अवसर पर त्रिपुरा के लोगों को राज्य पर कवि की अमर पंक्तियों की याद दिलाई जाती है: "जब त्रिपुरा के जंगलों ने दक्षिण हवा के अपने करियर के माध्यम से अपने पुष्प भोज के लिए निमंत्रण भेजा है, तो मैं आया हूँ एक दोस्त के रूप में"।



150वीं जयंती समारोह में, भूतपूर्व मुख्यमंत्री माणिक सरकार ने 9 मई को टैगोर के नाम पर एक सम्मेलन परिसर की नींव रखी। माणिक सरकार ने कहा था कि रवींद्र कन्वेंशन कॉम्प्लेक्स 22 करोड़ रुपये की लागत से बनाई जाएगी और इसे पूरा होने में 20 महीने लगेंगे। इसके अलावा, सूचना और सांस्कृतिक मामलों के मंत्री अनिल सरकार ने कहा कि त्रिपुरा सरकार ने कवि के नाम पर गांवों, इलाकों और सड़कों का नाम रखने का फैसला किया है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर और त्रिपुरा के लोगों के बीच प्यार और स्नेह का अनोखा बंधन कभी खत्म नहीं होता है। यहां रहने वाले आदिवासी और गैर-आदिवासी दोनों के लिए रवीन्द्रनाथ आज भी एक प्रेरणा हैं।



हम ये प्रार्थना ना करें कि
हमारे ऊपर खतरे न आयें,
बल्कि ये करें कि
हम उनका सामना करने में निडर रहे।

उच्चतम शिक्षा वो है
जो हमें सिर्फ जानकारी ही नहीं देती,
बल्कि हमारे जीवन को
समस्त अस्तित्व के साथ सद्भाव में लाती है।

फूल चुन कर एकत्र करने के लिए मत ठहरो,
आगे बढ़े चलो, तुम्हारे पथ में फूल निरंतर खिलते रहेंगे।

मन जहां डर से परे है

मन जहां डर से परे है और सिर जहां ऊंचा है;
ज्ञान जहां मुक्त है; और जहां दुनिया को
संकीर्ण घरेलू दीवारों से
छोटे छोटे टुकड़ों में बांटा नहीं गया है;
जहां शब्द सच की गहराइयों से निकलते हैं;
जहां थकी हुई प्रयासरत बांहें
त्रुटि हीनता की तलाश में हैं;
जहां कारण की स्पष्ट धारा है,
जो सुनसान रेतीले मृत आदत के
वीराने में अपना रास्ता खो नहीं चुकी है;
जहां मन हमेशा व्यापक होते विचार और सक्रियता में
तुम्हारे जरिए आगे चलता है
और आजादी के स्वर्ग में पहुंच जाता है;
ओ पिता ! मेरे देश को जागृत बनाओ !!

नैबेद्य (जुलाई, 1901)

गीतांजलि (1913)

चल तू अकेला

यदि तेरा डाक सुन कोई ना आए, तो तू चल अकेला,
चल अकेला, चल अकेला, चल तू अकेला!
यदि तेरा डाक सुन कोई ना आए, तो चल तू अकेला,
जब सबके मुंह पे पाश..
ओरे ओरे ओ अभागी! सबके मुंह पे पाश,
हर कोई मुंह मोड़के बैठे, हर कोई डर जाय !
तब भी तू दिल खोलके, अरे ! जोश में आकर,
मनका गाना गूंज तू अकेला!
जब हर कोई वापस जाय..
ओरे ओरे ओ अभागी ! हर कोई बापस जाय..
कानन-कूचकी बेला पर सब कोने में छिप जाय...

स्वदेश - गीतवितान से,

स्थान: गिरिडीह (झारखण्ड), सितंबर, 1905

(महात्मा गाँधी और सभी जन इस संगीत को सुनकर बहुत प्रभावित हुए थे।)

नीरमहल एवं रुद्रसागर झील



सुश्री एच. एमंतोली शोहे, स.ले.प.अ.

नीरमहल त्रिपुरा राज्य के ट्विपरा सल्तनत के पुराने शाही-महलों में से एक है। यह सिपाहीजला जिले के अंतर्गत सोनमुरा उप-मंडल के मेलाघर ब्लॉक में स्थित है और त्रिपुरा की राजधानी 'अगरतला' शहर से 53 किलोमीटर दूर है। नीरमहल को ट्विजिलिकमा न्युंग भी कहा जाता है जिसका अर्थ है "वाटर पैलेस"। इस महल को ट्विजिलिकमा झील के बीच में बनाया गया है जिसे अब रुद्रसागर झील के नाम से जाना जाता है। कुछ स्रोतों का दावा है कि भारत में केवल दो ही जल-महल हैं एवं दूसरा जल-महल राजस्थान राज्य में स्थित है।

रुद्रसागर झील, जिसमें नीरमहल बनाया गया है, एक सुरम्य झील है जिसे भारत सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्रालय द्वारा संसाधनों के संरक्षण और उनके स्थायी उपयोग के लिए राष्ट्रीय महत्व की आर्द्रभूमि के रूप में मान्यता दी गई है। रुद्रसागर झील भी एक महत्वपूर्ण पक्षी क्षेत्र है और सर्दियों के मौसम में बड़ी संख्या में प्रवासी पक्षियों को अपनी ओर आकर्षित करता है।



नीरमहल का निर्माण माणिक्य वंश के 'महाराजा बीर बिक्रम किशोर माणिक्य बहादुर' द्वारा ग्रीष्मकालीन निवास के रूप में किया गया था। 'ट्विप्रा साम्राज्य' तत्कालीन माणिक्य

वंश का शासन क्षेत्र था जो बाद में 'त्रिपुरा' राज्य बना और वर्तमान में भारत देश का एक राज्य है। माणिक्य वंश को आज दुनिया का दूसरा सबसे लंबा राजवंश माना जाता है।

नीरमहल का निर्माण एक ब्रिटिश कंपनी मार्टिन एंड बर्न्स द्वारा किया गया था जिसे पूर्ण करने में नौ साल लगे (1930 से 1938)। महल की वास्तुकला शैली मुगल-शैली से प्रेरित है और हिंदू और मुस्लिम दोनों स्थापत्य शैलियों को आत्मसात करती है। नीरमहल दो भागों में विभाजित है। महल के पश्चिमी हिस्से को अंधेर महल के नाम से जाना जाता है और यह केवल शाही परिवार के लिए ही उपलब्ध था। पूर्वी भाग एक ओपन-एयर थिएटर है जहां महाराजाओं और उनके शाही परिवारों के आनंद के लिए नाटक, थिएटर, नृत्य और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते थे। महल में कुल 24 कमरे हैं। नीरमहल में दो आंतरिक सीढ़ियां हैं जो रुद्रसागर झील से जुड़ने वाली एक लैंडिंग तक जाती हैं। 'राजघाट' से हाथ से चलाने वाली नाव से महाराजा महल तक जाते थे। नीरमहल में सुंदर उद्यान, फ़व्वारे और आंगन भी हैं। यह शांतिपूर्ण वातावरण पसंद करने वाले लोगों के लिए एक आदर्श स्थान है।

हर साल अगस्त महीने में, त्रिपुरा सरकार "नीरमहल जल महोत्सव" नामक एक बड़े उत्सव का आयोजन करती है। इस महोत्सव को 3 दिनों तक मनाया जाता है और मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। इस महोत्सव में नौका-दौड़ प्रतियोगिता आकर्षण का एक मुख्य केंद्र है। पर्यटकों के लिए घूमने का सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च तक है। 'महाराजा बीर बिक्रम किशोर माणिक्य' हवाई अड्डा, नीरमहल से 57.6 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। नीरमहल से निकटतम रेलवे स्टेशन अगरतला रेलवे स्टेशन है जोकि यहां से 43.4 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। अगरतला बस स्टैंड से मेलाघर बाजार (48.4 किलोमीटर) तक बसें और छोटे वाहन उपलब्ध हैं। मेलाघर बाजार से पर्यटक ऑटो-रिक्शा इत्यादि लेकर नीरमहल के लिए प्रस्थान कर सकते हैं।

**यदि स्वदेशाभिमान सीखना है तो मछली से सीखें जो
स्वदेश (पानी) के लिए तड़प-तड़प कर जान दे देती है।**

सुभाषचंद्र बोस



त्रिपुरा : दुर्गा-पूजा महोत्सव



श्री मणिकांत रॉय, स.ले.प.अ

भारत के त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल, असम एवं उड़ीसा राज्यों में दुर्गा-पूजा एक महत्वपूर्ण उत्सव है, जिसे 'अकालबोधन' के नाम से जाना जाता है। भारत के अन्य हिस्सों में इसे नवरात्रि पर्व के नाम से भी मनाया जाता है। दुर्गापूजा महोत्सव को अगरतला में 'राजा राधा किशोर माणिक्य' ने दुर्गाबारी मंदिर में मनाने की शुरुआत की थी जो प्रथा अभी तक उसी रूप में चली आ रही है। वर्ष 2020 में कोरोना महामारी के कारण त्रिपुरा के दुर्गापूजा महोत्सव का एक अलग ही रूप देखने को मिला जिसको मैं अपनी रचनात्मकता और कल्पनाशीलता का रंग भरते हुए साहित्य की एक अलग ही विधा के रूप में प्रस्तुत करने जा रहा हूँ। इस लेख के द्वारा कई संवेदनशील मुद्दों के माध्यम से आप सबको संदेश देना मेरा प्रयत्न रहेगा और इससे यदि मैं आपके हृदय की अनुभूतियों को स्पर्श करने में कामयाब रहा तो स्वयं को सौभाग्यशाली समझूंगा।

(माँ दुर्गा, माँ लक्ष्मी एवं माँ सरस्वती, भगवान शंकर, श्री गणेश एवं श्री कार्तिकेय कैलाश में विराजमान हैं।)

भगवान शंकर : प्रिय ! क्या इस विषम परिस्थिति में आपका पृथ्वी-लोक जाना उचित होगा?

माँ दुर्गा : भगवन् ! मेरे भक्त मेरे आगमन की प्रतीक्षा लंबे समय से कर रहे हैं। मैं उन्हें दुःख दर्द में कैसे देख सकती हूँ?

भगवान शंकर (चिंतित होकर) : आपकी चिंता करना और आपके हित में सोचना मेरा कर्तव्य है। मुझे नहीं लगता है कि आपका इस वर्ष पृथ्वी-लोक में जाना उचित होगा।

माँ दुर्गा : क्षमा करे प्रभुवर ! मेरे भक्तों का मुझ पर अटूट विश्वास हैं। इस कोरोना महामारी में उनकी पीड़ा एवं दुखों का निवारण कर अपने आशीष से अनुगृहीत करना ही मेरा सर्वोपरि कर्तव्य है। इस कारणवश मैं पृथ्वी-लोक जाना चाहती हूँ।

(उसी क्षण कैलाश में नारद मुनि प्रकट होते हैं।)

नारद मुनि : (अपनी खरताल बजाते हुए) नारायण ! नारायण ! प्रणाम भगवन्, प्रणाम माते, पृथ्वीवासियों की ओर से विशेष संदेश लाया हूँ।

माँ दुर्गा : कहो, क्या संदेश है?

नारद मुनि : पृथ्वी-लोक में त्रिपुरावासी कई दिनों से बेसब्री से आपके दर्शन की अभिलाषा में हैं। महालया पितृ-पक्ष श्राद्ध के अंत का प्रतीक है और देवीपर्व की पावन शुरुआत का प्रतीक है। बंगालियों के लिए दुर्गा-पूजा की शुरुआत का समय है।

माँ दुर्गा : मुझे ज्ञात है ऋषिवर ! दुर्गापूजा उत्सव महालया के सात दिन बाद प्रारंभ हो जाता है, परन्तु इस वर्ष अधिकमास होने के कारण यह त्योहार महालया के 35 दिन बाद मनाया जाएगा।

(पौराणिक मान्यता के अनुसार, महालया के दिन ही माँ दुर्गा धरती पर आगमन करती हैं और आगामी 10 दिनों के लिए पृथ्वी-लोक पर ही वास करती हैं। किन्तु, वर्ष 2020 में अधिकमास के कारण ऐसा होना संभव नहीं हुआ।)

भगवान शंकर इस दुविधा की घड़ी में चिंतन करते हैं कि कोरोना महामारी तो सभी धर्मों के लोगों के लिए समान है। अतः वे निर्णय लेते हैं कि सभी प्रमुख धर्मों के भगवानों की बैठक आयोजित की जाए जिसमें यह विचार-विमर्श किया जाए कि पृथ्वीवासियों को कोरोनामुक्त कैसे किया जाए? बैठक में यह भी निर्णय लिया जाए कि इस विकट समय में माँ दुर्गा का पृथ्वी-लोक में जाना अनुकूल है या नहीं। फलस्वरूप वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक आयोजित की जाती है। मुस्लिम धर्म से अल्लाह, ईसाई धर्म से जीसस क्राइस्ट एवं अन्य धर्मों के प्रतिनिधि बैठक में उपस्थित होते हैं। सभी धर्मों के देवी-देवता निर्णय लेते हैं कि कोरोना वैक्सीन जल्द से जल्द लोगों को मिले और भक्तों का उद्धार हो। सभी आश्वस्त होकर कहते हैं माँ दुर्गा का पृथ्वी-लोक में जाना चिंताजनक नहीं है। अंततः भगवान शंकर माँ दुर्गा के पृथ्वी-लोक जाने को सहमत हो जाते हैं।

(माँ दुर्गा का अपनी पालकी में अपनी दोनों पुत्रियों देवी सरस्वती, देवी लक्ष्मी व दोनों पुत्रों संग पृथ्वी-लोक आगमन)

माँ दुर्गा धरती पर प्रकट होती हैं। लेकिन ये क्या? कोरोना महामारी के कारण पृथ्वी-लोक पर हुई दुर्दशा एवं लोगों के बीच मची हाहाकार और लोगों के भयभीत चेहरे देखकर माँ दुर्गा सिहर उठती हैं। माँ दुर्गा सपरिवार त्रिपुरा के मुख्य स्थानों पर स्थापित पंडाल दर्शन हेतु निकल पड़ती हैं। एक पंडाल में माँ देखती हैं कि उनकी प्रतिमा का स्वरूप श्वेत एवं काले रंग के संयोजन से बना है।

दृश्य 1 : (एक पंडाल के समीप दो मूर्तिकारों के बीच का वार्तालाप)

पहला मूर्तिकार : तुमने माँ दुर्गा की प्रतिमा को श्वेत एवं काले रंग से क्यों दर्शाया है?

दूसरा मूर्तिकार : क्योंकि इसके पीछे मानवीय संवेदनाओं का चित्रण है जो किसी विशेष रंग को लेकर नहीं होती।

पहला मूर्तिकार : वो कैसे?

दूसरा मूर्तिकार : तो सुनो! इसके द्वारा यह संदेश लोगों तक पहुँचाना है कि माँ दुर्गा का आशीर्वाद किसी एक विशेष वर्ग तक ही सीमित नहीं है, बल्कि पूरी मानव-जाति के लिए है। इस बात का व्यावहारिक रूप कोरोना महामारी में देखने को मिला जब समाज का हर वर्ग अमीर-गरीब, जाति-पाति, वर्ण, धर्म आदि विषमताओं को भुलाकर केवल मानव धर्म को निभा रहे थे।

(दो मूर्तिकारों के बीच का संवाद सुनकर माँ दुर्गा आनन्दित हो उठी कि वे कितने बुद्धिजीवी हैं और उनको आशीर्वाद देकर दूसरी दिशा में अंतर्ध्यान हो गयी।)

दृश्य 2 : अंतर्ध्यान होकर माँ दुर्गा हेरिटेज पार्क (त्रिपुरा के सुप्रसिद्ध दर्शनीय विरासत को संजोये हुए एक विशेष पार्क) पहुंचती है।

वहां विभिन्न छायादार एवं फलदार वृक्षों की मनमोहक वातावरण एवं सुन्दरता को देखकर माँ दुर्गा कुछ समय वहां व्यतीत करती है। पास में ही एक अखबार पड़ा हुआ था जिसमें कोरोना महामारी से समाज के विभिन्न वर्गों पर पड़ने वाले प्रभावों की खबरें देखकर माँ दुर्गा को अपने भक्तजनों की पीड़ा की अनुभूति होती है। अखबार में प्रवासी मजदूरों के पलायन करने, बेरोजगारी और अकेलेपन से तंग



आकर आत्महत्या करने वाली नकारात्मक खबरों के साथ-साथ समाज के सकारात्मक सोच को दर्शाने वाली खबरें जैसे पुलिस, डॉक्टर और नर्स का कोरोना वॉरियर्स के रूप में अपनी जान की परवाह किये बिना सेवा करना एवं भूखे लोगों के लिए खाने की व्यवस्था करना,

प्रवासी मजदूरों को उनके घर पहुँचाने में मदद करने की निःस्वार्थ सेवा- भाव आदि को देखकर माँ भाव-विभोर हो उठी।

माँ दुर्गा पंडाल-भ्रमण में कई भक्तों की यह याचना सुनती है कि माँ पूरी दुनिया को कोरोना महामारी से मुक्ति का आशीर्वाद प्रदान करे। माँ सपरिवार मानवीय रूप धारण कर डॉक्टरों की अनुसंधान टीम से मिलती है। माँ सरस्वती उन्हें ज्ञान प्राप्ति एवं माँ लक्ष्मी समृद्धि प्राप्ति का आशीर्वाद देती है। माँ दुर्गा उन्हें सम्मति देती हैं कि वे सर्वप्रथम श्री गणेश भगवान की पूजा करें ताकि कोरोना वैक्सीन को विकसित करने का कार्य शुभ एवं मंगलमय हो। अंततः माँ उनका मार्गदर्शन कर अपनी दोनों पुत्रियों, देवी सरस्वती, देवी लक्ष्मी व दोनों पुत्रों संग हाथी पर सवार होकर शिव-लोक गमन कर जाती हैं।



दृश्य 3 : कैलाश पर्वत

शंकर भगवान : देवी दुर्गे ! कैसा रहा आपका भू-लोक भ्रमण?

दुर्गा माँ : अति आनंदमय प्रभुवर ! मेरा हृदय तो अपने भक्तजनों की मनोकामना पूर्ण कर अति प्रफुल्लित हो उठा है।

शंकर भगवान : क्यों देवी, इस बार आपने अपने प्रिय भक्तों को क्या आशीर्वाद दिया है?

दुर्गा माँ : प्रभुवर ! इस बार मैं कोरोना महामारी से पीड़ित भक्तों को अच्छे स्वास्थ्य की शुभकामना के साथ-साथ चिकित्सकों, अनुसंधानकर्ताओं को कोरोना वैक्सीन विकसित करने का आशीर्वाद देकर आयी हूँ।

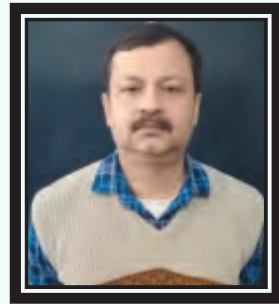
शंकर भगवान : चलो प्रिय। अब आप विश्राम करें।

(कथा इतिश्री)

अंत में मैं अपनी कल्पना के अथाह सागर की गहराईयों से बाहर निकलते हुए आशा करता हूँ कि जो अपेक्षाएं मैंने अपनी उपर्युक्त काल्पनिक प्रयास में चाही हैं, वे वास्तविक रूप में कार्यान्वित हों। अब मैं अपनी लेखनी को विराम देता हूँ और यह उम्मीद करता हूँ कि मेरा यह विनम्र प्रयास आपके मन-मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ने में कामयाब हो।



शक्तिपीठ - त्रिपुरा-सुंदरी मंदिर, माताबाड़ी



श्री समरजीत बनर्जी, स.ले.प.अ.

त्रिपुरा सुंदरी मंदिर देवी त्रिपुरा-सुंदरी का एक हिंदू मंदिर है, जिसे स्थानीय रूप से देवी त्रिपुरेश्वरी के रूप में जाना जाता है। प्राचीन शहर उदयपुर में स्थित यह मंदिर हिंदू भक्तों के लिए एक पवित्र और प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है जो अगरतला से लगभग 55 कि.मी. दूर स्थित है एवं सड़क तथा रेल के माध्यम से जुड़ा हुआ है। माताबारी के रूप में प्रसिद्ध यह मंदिर एक टीले के ऊपर स्थित है। किंवदंती के अनुसार यह तीर्थस्थल 51 शक्तिपीठों में से एक है। कहा जाता है कि सती के बाएं पैर की छोटी उंगली यहां गिरी थी। यहां शक्ति को त्रिपुरा सुंदरी के रूप में और भैरव त्रिपुरेश के रूप में पूजा जाता है। किंवदंती है कि 15वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में त्रिपुरा पर शासन करने वाले 'महाराजा धन्य माणिक्य' ने एक रात सपने में एक रहस्योद्घाटन किया था जिसमें देवी त्रिपुरा सुंदरी ने उन्हें उदयपुर शहर के पास पहाड़ी पर पूजा करने की आज्ञा दी थी जो उस समय की राजधानी थी। राजा को पता चला कि पहाड़ी पर एक मंदिर पहले से ही भगवान विष्णु को समर्पित था। वे दुविधा में थे और यह तय करने में असमर्थ थे कि कैसे विष्णु को समर्पित एक मंदिर और शक्ति की मूर्ति दोनों एक ही जगह हो सकती हैं। अगली रात, राजा ने फिर वही दिव्य दृष्टि देखी। राजा समझ गया कि विष्णु और शक्ति एक ही सर्वोच्च देवता (ब्रह्मा) के विभिन्न रूप थे। इस प्रकार, त्रिपुरा सुंदरी का मंदिर 1501 ई. के आस-पास अस्तित्व में आया। इस सदी की शुरुआत में इस मंदिर के लगभग 500 साल हो चुके हैं। इस किंवदंती को हिंदू धर्म के दो उप-समूहों : वैष्णव और शाक्त संप्रदायों के बीच एकजुटता के उदाहरण के रूप में जाना जाता है। सोराशी काली माता की प्रतिमा (तीसरा महाविद्या) लाल-काले पत्थर (कास्टिक पत्थर) से बनी है। श्री माता की एक प्रतिकृति भी मंदिर में है जिसे आमतौर पर छोटा-माँ (शाब्दिक रूप - छोटी माँ) कहा जाता है। लोक कथाओं के अनुसार छोटी मूर्ति को त्रिपुरा के राजा युद्ध के मैदान में और शिकार (मृगया) के दौरान ले जाते थे।



मंदिर के पूर्वी हिस्से में कल्याण सागर झील स्थित है। इसके विस्तार से मंदिर की सुंदरता में एक नया आयाम जुड़ जाता है, कल्याण सागर में कछुओं की बहुतायत है, उनमें से कुछ काफी बड़े हैं, जो अक्सर भोजन की तलाश में किनारे तक आ जाते हैं।

हर साल दिवाली के अवसर पर मंदिर के समीप प्रसिद्ध मेला लगता है जिसमें तीर्थयात्री आते रहते हैं। अन्य विशिष्ट मंदिरों की तरह मंदिर के रास्ते पर यहां चढ़ावा चढ़ाने के लिए प्रसाद, पेड़ा, फूल और टोकरियां आदि की बिक्री होती है। सुबह (4 बजे) से पहले मंदिर के ताले खोले जाते हैं और मंगल आरती की जाती है। इसके उपरांत पूजा के माध्यम से सूखी मिठाई (पेड़ा आदि) चढ़ाई जाती है। सुबह 8 बजे दैवीय माता को उनके स्नान के बाद नये कपड़े और विभिन्न आभूषण धारण कराये जाते हैं। ये कीमती आभूषण माताबारी मंदिर की तहसील की सुरक्षा में रहते हैं। सुबह 10:30 बजे से दोपहर 12 बजे तक दैनिक पूजा की जाती है और 12:30 बजे के बाद पशु-बलि के रूप में चढ़ावा पेश किया जाता है। अपराह्न 2 बजे से 2:30 बजे तक देवी मां के विश्राम का समय होता है। 2:30 बजे भोग बाहर निकाला जाता है और उस भोग को सभी श्रद्धालुओं में प्रसाद के रूप में बांट दिया जाता है। 3:30 बजे मंदिर का द्वार फिर से खोल दिया जाता है। लगभग शाम 7 बजे से संध्यारात्रि एक घंटे के लिए ड्रम और संगीत की ताल के साथ दिव्य मां की आराधना की जाती है।

स्वामी विवेकानंद

(वाक्-पटुता)

स्वामी विवेकानंद जी एक बार ट्रेन से यात्रा कर रहे थे और एक कलाई-घड़ी पहने हुए थे जिसने ट्रेन में मौजूद कुछ लड़कियों का ध्यान आकर्षित किया। वे उनके कपड़ों और उनकी वेश-भूषा का मजाक उड़ा रही थी। उन्होंने एक शरारत करने का विचार सूझा।

लड़कियों ने स्वामी जी को उनकी घड़ी उन्हें देने के लिए कहा, नहीं तो वे पुलिस से शिकायत करेंगी कि वह उन्हें परेशान कर रहे हैं। फिर स्वामी जी चुप रहे और बहरे नाटक किया; और उन लड़कियों को एक कागज के टुकड़े पर लिखने के लिए संकेत दिए, लड़कियों ने उसे कागज पर लिखकर उसे दे दिया।

कोई विचार उसने आगे क्या किया? फिर बोला; उसने पुलिस को फोन किया और कहा 'मुझे एक शिकायत करनी है।'



जम्पुई हिल्स और ऑरेंज फेस्टिवल



श्री अभिजीत पात्रा, व.ले.प.अ.

यात्रा करना हमेशा मुझे पसंद रहा है। इसीलिए अक्टूबर 2019 में जब मेरा परिवार त्रिपुरा आया तब हमने इस राज्य के कुछ पर्यटक स्थलों की यात्रा करने की योजना बनाई। जिन स्थलों की हमने यात्रा की उनमें से एक 'जम्पुई हिल्स' भी था और उस यात्रा की यादें हमेशा मेरे मन में एक प्यारी सुबह की तस्वीर के रूप में रहेंगी।

'जम्पुई हिल्स' त्रिपुरा राज्य के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित है। अगरतला से हिल्स की यात्रा सड़क-मार्ग से या फिर आंशिक रूप से रेल द्वारा और शेष यात्रा सड़क-मार्ग से की जा सकती है। हम अगरतला से सुबह की ट्रेन में सवार होकर कुमारघाट पहुंचे। हमने कुमारघाट से आगे की यात्रा के लिए पहले ही कार बुक कर रखी थी। जम्पुई हिल्स जाने से पहले हमने उनाकोटि की यात्रा करने की योजना बनाई थी। योजना के अनुसार हमने सुबह का समय उनाकोटि में बिताया दोपहर को लगभग एक बजे सड़क किनारे छोटे होटल में भोजन करने के बाद हम जम्पुई हिल्स के लिए रवाना हुए। कंचनपुर में एक स्टॉप के साथ हम सूर्यास्त से ठीक पहले वहां के पर्यटन विभाग के एडन गेस्टहाउस पहुंचे। कंचनपुर से ऊपर की यात्रा एक थका देने वाली लेकिन रोमांचकारी पहाड़ी यात्रा का अनुभव था। इस यात्रा के दौरान सड़क के किनारे हरी-भरी झाड़ियों और मनमोहक फूलों का दृश्य अति मनोरम था।



एडन गेस्ट हाउस एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित है जहां से गहरी घाटियों और पहाड़ी श्रृंखलाओं को देखा जा सकता है। गेस्ट हाउस में रात के समय परोसा गया भोजन काफी स्वादिष्ट था। हालांकि मैं जम्पुई हिल्स में था और मैं यहां कुछ खास अनुभव की उम्मीद में आया था लेकिन संध्या तक मेरा मन जम्पुई पहाड़ियों के दृश्य से भरा नहीं था, पहाड़ी ने अगली सुबह तक अपने सौंदर्य के खजाने को हमसे छिपाकर रखा। अगली सुबह मैं गेस्ट हाउस की छत पर खड़ा ऐसा महसूस कर रहा था कि जैसे मैं आकाश में था और घने बादल

हमारे नीचे बह रहे थे। यहां हर जगह की अपनी खूबसूरती है और उस दिन जम्पुई हिल्स हमें अपनी खूबसूरती दिखाने के लिए काफी उत्सुक और मेहरबान थी। जम्पुई हिल्स संतरे के लिए भी काफी प्रसिद्ध है। हर साल नवंबर-दिसंबर महीने में यहां ऑरेंज फेस्टिवल मनाया जाता है। इसमें जम्पुई हिल्स के संतरे जो अतीत में भारत के सबसे प्रसिद्ध संतरे के रूप में पहचाने जाते थे, उनके भी प्रदर्शन का हमने लुत्फ उठाया।



त्रिपुरा की नदियां



श्री जय शंकर परमार, स.ले.प.अ.

नदियों और मानव का सदैव से ही अटूट संबंध रहा है। विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में पल्लवित और पुष्पित होने वाली मानव संस्कृतियों का उद्गम स्थल नदी घाटी क्षेत्र ही रहा है चाहे वह भारत की सिंधु घाटी सभ्यता रही हो या मेसोपोटामिया की दजला-फरात नदी घाटी सभ्यता हो या फिर मिस्र की नील नदी की सभ्यता हो। मानव जाति के विकास का अंकुर नदियों की तलहटी से प्राप्त सहज-सुलभ जल से ही पल्लवित और पुष्पित होते हुए आज के आधुनिक विश्व के विशाल वट-वृक्ष के रूप में स्थापित है। आधुनिक काल में भी मानव सभ्यता के विकास के स्तम्भ के रूप में स्थापित आधुनिक शहर किसी न किसी नदी के तट पर ही अवस्थित हैं, चाहे वह टेम्स नदी के तट का लंदन हो या सीन नदी के तट पर अवस्थित पेरिस या यमुना नदी के किनारे अवस्थित दिल्ली हो। नदियां प्रकृति का अभिन्न अंग हैं। नदियों से ही पृथ्वी पर जीवन संभव है। नदियां अपने साथ वर्षा का जल एकत्र कर उसे भू-भाग में पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य करती हैं। नदियां देश के विकास में बहुत योगदान देती हैं चाहे वह आर्थिक विकास हो, सामाजिक विकास या फिर धार्मिक विकास ही क्यों ना हो।

हमारा राज्य त्रिपुरा भारत का एक छोटा सा राज्य है जो उत्तर-पूर्व में स्थित है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह राज्य भले ही काफी छोटा हो परंतु प्राकृतिक संसाधनों के क्षेत्र में यह काफी सम्पन्न है और प्रकृति ने इसे जिस प्रमुख संसाधन से नवाज़ा है वह यहां कि नदियां हैं। त्रिपुरा में कुल 11 नदियां बहती हैं, जिसमें मानू, गोमती, धलाई, खोआई, लोंगई, देव आदि

प्रमुख हैं। इनमें मानू नदी सबसे लंबी नदी है जिसकी लंबाई 167 कि.मी. है। यहां की नदियां मुख्यतः बरसाती और अस्थायी प्रकृति की हैं। सभी नदियों का उद्गम पहाड़ियों से होता है।

अधिकतर नदियां त्रिपुरा की सीमा में ही हैं जबकि फेनी और लोंगई दो भारतीय राज्यों त्रिपुरा और मिज़ोरम से बहते हुए बांग्लादेश चली जाती हैं। त्रिपुरा की सभी नदियों का बेसिन क्षेत्रफल 10,500 वर्ग कि.मी. है, जिसमें सर्वाधिक योगदान गोमती का 22.66 प्रतिशत, मानू व देव का 18.36 प्रतिशत और खोआई का 13.13 प्रतिशत है। त्रिपुरा की नदियां प्रत्येक वर्ष 793 मिलियन घन मीटर जल प्रवाहित करती हैं जिसमें से अधिकांशतः पड़ोसी राष्ट्र बांग्लादेश चला जाता है। इसमें मुख्य योगदान गोमती 249 मिलियन घन मीटर, मानू 170 मिलियन घन मीटर और खोआई 115 मिलियन घन मीटर होता है जो कुल प्रवाह का लगभग 67.5 प्रतिशत होता है। त्रिपुरा की नदियों का स्वास्थ्य भी देश की अन्य नदियों की तुलना में कुछ खास अच्छी स्थिति में नहीं है। देश की सर्वाधिक 36 प्रदूषित नदियों में से 4 नदियां त्रिपुरा की हैं। हावड़ा, मानू, गोमती और बूरिमा नदी सर्वाधिक प्रदूषित नदियां हैं और ये मरणासन्न हैं। त्रिपुरा के निवासियों में मुख्य रूप से यहां के मूल निवासी (अनुसूचित जनजाति) और बांग्लाभाषी बंगाली हैं। इन दोनों वर्गों के लोगों का मुख्य भोजन मछली है। जल प्रदूषण के कारण नदियों की जैव-विविधता काफी प्रभावित हो रही है जिस कारण इन नदियों से प्राप्त होने वाली मछलियों की कई प्रजातियां समाप्त हो चुकी हैं या लुप्तप्राय हैं। यह स्थिति काफी कष्टप्रद है। यहां की आबादी का एक बड़ा हिस्सा कृषि पर आधारित है और कृषि कार्यों के लिए इन नदियों का काफी महत्व है।

21वीं शताब्दी ऊर्जा की शताब्दी है। किसी भी राज्य या राष्ट्र की उन्नति का एक मानक उसकी ऊर्जा आवश्यकता, उसकी उपलब्धता तथा खपत है। 21वीं शताब्दी में ऊर्जा के गैर-परंपरागत स्रोतों का महत्व काफी बढ़ गया है क्योंकि यह आर्थिक दृष्टिकोण से सस्ता और प्रकृति के अनुकूल है। इस राज्य की नदियां पन-बिजली उत्पादन में भी अपना योगदान दे रही हैं। गोमती और खोआई दो बहुउद्देशीय नदी-घाटी परियोजनाओं के द्वारा जल-विद्युत का उत्पादन कर राज्य के विकास में अपना अमूल्य योगदान दे रही हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि त्रिपुरा की नदियां आम जन-मानस के जीवन को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूप से प्रभावित करती हैं।

जीवित भाषा बहती नदी है जिसकी धारा नित्य एक ही मार्ग से प्रवाहित नहीं होती।

- बाबूराव विष्णु



त्रिपुरा में सिपाहीजला व अन्य वन्यजीव अभ्यारण्य



श्री पार्थसारथी चक्रवर्ती, व. ले.प. अ.

त्रिपुरा में कुल चार संरक्षित वन्यजीव अभ्यारण्य हैं : 1) सिपाहीजला 2) तृष्णा 3) गुमती और 4) रोवा

सिपाहीजला अभ्यारण्य : त्रिपुरा की राजधानी अगरतला के सबसे नजदीक 'सिपाहीजला अभ्यारण्य' है जो राजधानी अगरतला से लगभग 25 कि.मी. (16 मील) दूर है और

सिपाहीजला जिले के बिशालगढ़ उप-मंडल में स्थित है। इसका क्षेत्रफल लगभग 18.53 वर्ग कि.मी. (7.15 वर्ग मील) है। यहां कई झीलें, प्राकृतिक वनस्पतियां और प्राणी उद्यानों के साथ-साथ एक विशाल वन क्षेत्र भी है। यह अपने क्लाउडेड तेंदुए और



छायांकन : श्री पार्थसारथी चक्रवर्ती

तमाशा बंदरों के लिए प्रसिद्ध है। इसे वर्ष 1987 में संरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया था। इस अभ्यारण्य में विभिन्न प्रकार के पक्षी, प्राइमेट और अन्य जानवर हैं। यह क्षेत्र पूरे साल हरा-भरा रहता है तथा गर्मी और मानसून को छोड़कर मौसम सामान्य रहता है। इन दो मौसमों के दौरान यह क्षेत्र बहुत अधिक आर्द्र हो जाता है। यह लगभग 150 प्रजातियों के पक्षियों और चश्माधारी बंदरों को आश्रय देता है। प्राइमेट सेक्शन में चार प्रजातियां शामिल हैं - रीसस मैकाक, पिग-टेल्ड मैकाक, कैण्ड लंगूर और स्पेक्टेकल लंगूर। इसे वन्यजीव अभ्यारण्य के रूप में और शैक्षणिक अनुसंधान केंद्र के रूप में विकसित किया गया है। अभ्यारण्य में पक्षियों की लगभग 150 प्रजातियां रहती हैं तथा अन्य प्रवासी पक्षी सर्दियों में आते रहते हैं। यहां कई झीलें हैं, जिनमें से अमृत सागर नामक झील में नौका विहार की सुविधा भी उपलब्ध है। यहां एक बड़े क्षेत्र में विस्तृत एक चिड़ियाघर है, जो अभ्यारण्य के द्वार से लगभग 4 कि.मी. दूर है। यह अभ्यारण्य शुक्रवार को छोड़कर अन्य दिनों में सुबह 8 बजे से शाम 4 बजे तक खुला रहता है। यहां चिड़ियाघर और बोटिंग झील के पास एक डाक बंगला है, जिसे 'अबसरिका' कहा

जाता है। यह पर्यटकों को घने जंगल के बीच में रात व्यतीत करने का रोमांचकारी अनुभव प्रदान करता है।

तृष्णा वन्यजीव अभ्यारण्य :- तृष्णा वन्यजीव अभ्यारण्य त्रिपुरा में स्थित एक वन्यजीव अभ्यारण्य है जिसका क्षेत्रफल लगभग 163.08 वर्ग कि.मी. (62.97 वर्ग मील) है। यह अभ्यारण्य दक्षिण त्रिपुरा जिले में स्थित है। यह जिला मुख्यालय बेलोनिया से 18 कि.मी. दूर है और राजमार्ग द्वारा अगरतला से जुड़ा है (अगरतला से दूरी 111 कि.मी. है)। यह दक्षिण में बेलोनिया व उत्तर में सोनमुरा को जोड़ता है। इस अभ्यारण्य में कई बारहमासी नदियाँ, जल निकाय और घास के मैदान हैं। इस अभ्यारण्य में कुंवारी जंगलों के पैच हैं जो दुर्लभ वनस्पतियों से समृद्ध हैं। भारतीय गौर (बाइसन) इस अभ्यारण्य के आकर्षण का केंद्र



छायांकन : श्री पार्थसारथी चक्रवर्ती

है। इसके अलावा यहां पक्षी, हिरण, होललॉक गिबन, गोल्डन लंगूर, कैण्ड लंगूर, तीतर और कई अन्य जानवर और सरीसृप हैं। यह वन्यजीव अभ्यारण्य सुबह 9:00 बजे से शाम 5.00 बजे तक (मंगलवार बंद) खुला रहता है। यहाँ का तितली पार्क बहुत से पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

गुमती वन्यजीव अभ्यारण्य :- यह त्रिपुरा राज्य के दक्षिण-पूर्व में स्थित दक्षिण त्रिपुरा जिले का एक अभ्यारण्य है। यह राज्य का सबसे बड़ा वन्यजीव अभ्यारण्य है। इसका क्षेत्रफल 389.54 वर्ग कि.मी. है। अभ्यारण्य से सटा एक विशाल जल भंडार / स्पार्कलिंग जल निकाय है जो लगभग 300 वर्ग कि.मी. को कवर करता है। यह झील एक लुभावना दृश्य प्रस्तुत करती है जो आसपास की प्राकृतिक सुंदरता में चार चाँद लगाती है। यह कई घरेलू प्रजाति के पक्षियों के साथ-साथ अन्य प्रवासी जलीय पक्षियों को भी आश्रय प्रदान करती है जो यूरोपीय सर्दियों के दौरान यहां शरण लेते हैं। यह अभ्यारण्य एक विशाल और विविध वनस्पतियों और जीवों का घर है। इसमें हाथी, बाइसन, सांभर, भोंकने वाले हिरण, जंगली बकरी या सरो के अलावा कई अन्य जानवर और सरीसृप हैं। यह अभ्यारण्य अगरतला से लगभग 100 कि.मी. दूर है। अभ्यारण्य जाने के लिए अम्बासा और गांधार के माध्यम से या अमरपुर - जतनबारी के माध्यम से जाया जा सकता है। यहां से निकटतम शहर जतनबारी है, जो त्रिपुरा के प्रमुख शहरों को सड़क मार्ग से जोड़ता है।

रोवा वन्यजीव अभ्यारण्य :- रोवा वन्यजीव अभ्यारण्य उत्तरी त्रिपुरा जिले के पानीसागर उप-मंडल में स्थित है। यह राज्य का सबसे छोटा वन्यजीव अभ्यारण्य है, जो लगभग 86 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में विस्तृत है। इस अभ्यारण्य में पक्षियों, प्राइमेट्स, सरीसृपों आदि की कई प्रजातियां पाई जाती हैं। यह राष्ट्रीय उद्यान वर्ष भर पर्यटकों के लिए खुला रहता है। यह अभ्यारण्य वनस्पतिविदों, पर्यावरणविदों और पारिस्थितिकीविदों के लिए किसी स्वर्ग से कम नहीं है। अभ्यारण्य की अद्भुत वनस्पतियों में औषधियां,



छायांकन : श्री पार्थसारथी चक्रवर्ती

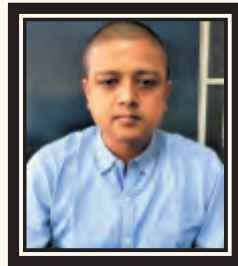
सुगंधित पौधे, फल, चारा, मसाले, बागवानी पौधे, सजावटी फूल और ऑर्किड की जड़ी-बूटियाँ हैं। ऐसे खूबसूरत और ताजगी भरे माहौल के बीच व्यतीत किया गया एक पल भी यादगार साबित होता है।

निष्कर्ष : इन सभी वन्यजीव अभ्यारण्यों के अलावा, त्रिपुरा में बहुत सारे जंगल हैं, जहां हाथी जैसे बड़े जानवरों के साथ-साथ दक्षिण भारत में पाये जाने वाले सबसे छोटे (8 सेमी) पक्षी 'फूलचुकी' को भी देखा जा सकता है। आप यहां कुछ ऐसे पक्षियों को भी देख सकते हैं, जो केवल भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में ही पाये जाते हैं। यद्यपि कुछ साल पहले तक जानवरों और पक्षियों की अंधाधुंध हत्या के कारण इस क्षेत्र से कई जानवर और पक्षी विलुप्त हो गए। लेकिन धीरे-धीरे लोग अब जागरूक हो रहे हैं। परिणामस्वरूप, त्रिपुरा में वन्यजीवों और पक्षियों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है।

हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य को सर्वांगसुंदर बनाना हमारा कर्तव्य है। – डॉ. राजेंद्र प्रसाद



त्रिपुरा राज्य : त्योहार व उत्सव



श्री गौतम सरकार, स.ले.प.अ.

त्रिपुरा राज्य अपनी विविधताओं में धनी है। भारत के उत्तर-पूर्व में स्थित यह राज्य पुराने और नये के बीच एक संतोषजनक समझौता है और पहाड़ियों व मैदानों की शैलियों का एक संलयन भी है। इसलिए त्रिपुरा राज्य में उत्सव अत्यंत उत्साह और पारंपरिकता के साथ मनाया जाता है। त्रिपुरा में मनाए जाने वाले त्योहार हमारे राष्ट्र की मजबूती और समग्र सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। चाहे वह आदिवासी त्योहार हो या कोई आम त्योहार हो, जिस उत्साह और जोश के साथ त्रिपुरा के त्योहारों को जनजातीय



कबीलों और गैर-आदिवासी समूहों के साथ मनाया जाता है वह अद्वितीय है। त्रिपुरा में हिंदू धर्म के लोग काफी संख्या में हैं, इसलिए यहां पर भी वही त्योहार

ज्यादा मनाये जाते हैं जो शेष भारत में मनाये जाते हैं। त्रिपुरा का मुख्य त्योहार दुर्गा-पूजा है जो दशहरा के समय मनाया जाता है। दुर्गा-पूजा में सभी समुदायों के लोग एक साथ मिलकर चार दिन खूब आनंद करते हैं। त्रिपुरा के क्षेत्रीय त्योहारों में 'खारची पूजा', 'केर पूजा', 'गरिया', 'अशोकाष्टमी' आदि महत्वपूर्ण आदिवासी उत्सव हैं। खारची पूजा त्रिपुरा के सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है। यह त्योहार मूल रूप से आदिवासी और गैर-आदिवासी समूहों द्वारा समान खुशी और उत्साह के साथ मनाया जाता है। 'ख्या' शब्द पृथ्वी का प्रतीक है, इसलिए खारची पूजा के त्योहार का अर्थ है 'पृथ्वी की पूजा'। पुराने अगरतला में 14 देवी मंदिर अपनी खारची पूजा के लिए आगंतुकों को आकर्षित करते हैं।

केर पूजा त्रिपुरा का एक और सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है। खारची पूजा के लगभग 15 दिन बाद केर पूजा की शुरुआत होती है। वास्तु देवता के संरक्षक देवता केर हैं। स्थानीय लोगों का यह विश्वास है कि पूर्व के शासक इस पूजा को आम जनता के कल्याण के लिए करते थे। बलिदान और प्रसाद इस लोकप्रिय त्योहार की विशेषताओं में से एक है।

गरिया पूजा, त्रिपुरा का एक प्रमुख त्योहार है। यह पर्व चैत्र माह के अंतिम दिन से लेकर वैशाख महीने के सातवें दिन तक मनाया जाता है। त्रिपुरी और रियांग जनजातियां इसे फसल के त्योहार के रूप में मनाती हैं।

अशोकाष्टमी त्रिपुरा के सबसे शुभ त्योहारों में से एक है। अशोकाष्टमी के दौरान कैलाशहर के उनाकोटि में विशेष आयोजन किया जाता है और स्थानीय लोगों द्वारा धार्मिक रीति-रिवाजों को पूरी परंपरा के साथ निभाया जाता है। अष्टमी कुंड में पवित्र डुबकी लेने के संस्कार को इस त्योहार की विशेषता के रूप में चिन्हित किया गया है।



इसके अलावा अन्य धर्म के त्योहारों को भी त्रिपुरा में धूम-धाम से मनाया जाता है। मुसलमान धर्म के त्योहार ईद, बौद्ध के बौद्ध जयंती, ईसाईयों के क्रिसमस डे, हिंदूओं के महाशिवरात्रि, दिवाली, होली आदि त्योहारों में सभी धर्म के लोग भाग लेते हैं। पूरे वर्ष भर त्योहारों व उत्सवों के कारण त्रिपुरा को त्योहारों व उत्सवों का राज्य कहा जाता है।

"राष्ट्रभाषा हिंदी का किसी क्षेत्रीय भाषा से कोई संघर्ष नहीं है।"

अनंत गोपाल शेवड़े

उनाकोटि : पत्थरों पर

उकेरी नक्काशी



श्री उत्तम धर, स.ले.प.अ.

त्रिपुरा आने के बाद मुझे मंदिरों के अलावा अगर कोई जगह सबसे ज्यादा अपनी ओर आकर्षित करती है तो वह है उनाकोटि की पहाड़ियां। वहां मैं दो बार जिलाधिकारी कार्यालय में लेखापरीक्षा कार्य हेतु भी गया हूं। फिर भी मेरा मन उन पहाड़ियों की ओर खिंचा चला जाता है। इन पहाड़ियों में सदियों से ऐसे रहस्य छिपे हुए हैं जिनका जवाब आज तक पुरातत्वविदों तक को नहीं मिल सका है। उनाकोटि एक छोटे से शहर कैलाशहर में स्थित है। उनाकोटि एक बंगाली शब्द है जिसका अर्थ होता है एक करोड़ से एक कम अर्थात् निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौ सौ निन्यानवे।

टेढ़ी-मेढ़ी खूबसूरत पगडंडियां, सुंदर और घने जंगल, घाटियों, नदियों और झरनों से भरी यह जगह वास्तव में निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौ सौ निन्यानवे देवताओं का घर



है। पहाड़ों पर दो तरह की मूर्तियां मिलती हैं एक जो उकेरी गई हैं और दूसरी जो पत्थरों से बनाई गई हैं। इस जगह की सबसे बड़ी

मूर्ति भगवान शिवजी की है जिसे पहाड़ पर ही उकेरा गया है। शिवजी की यह मूर्ति तीस फुट ऊंची खड़ी पहाड़ी को काटकर बनाई गई है, इसे “उनाकोटि स्वरकाल भैरव” भी कहा जाता है। इसके सिर को बीस फुट तक के लंबे बालों के रूप में उकेरा गया है। इसी मूर्ति के पास में शेर पर सवार देवी दुर्गा की छवि है वहीं दूसरी तरफ मगर पर सवार देवी गंगा, जमीन पर आधी उकेरी गई नंदी बैल की छवि, भगवान गणेश की तीन शानदार मूर्तियां हैं, साथ ही

तीन आंखों वाला एक शिल्प भी है जिसके बारे में माना जाता है कि वह भगवान सूर्य या विष्णु का है। वहीं पास में एक झरने से पानी गिरता है जिसे सीता कुंड के नाम से जाना जाता है। पहाड़ों पर यह वे प्रतिमाएं हैं जो हमें दिखाई दे रही हैं लेकिन माना जाता है कि यहां बहुत सी प्रतिमाएं हैं। इन प्रतिमाओं को देखने के बाद मन रोमांचित तो होता ही है साथ ही कई तरह के सवाल भी आ जाते हैं कि पूरी पहाड़ी पर फैली इन मूर्तियों के पीछे की कहानी क्या है? किसने इनको बनाया है? और इसका इतिहास किससे जुड़ा है? जो इस जगह को और रहस्यमयी बना देता है।

जैसे हर एक स्थल एक विशेष पौराणिक कहानी से जुड़ा होता है ठीक वैसे ही इस स्थल से कई प्रचलित कहानियां जुड़ी हुई हैं। एक कहानी के अनुसार इस जगह को एक कलाकार ने एक ही रात में बनाया था जिसका नाम कल्लू कुम्हार था। वह शिव भक्त था, उसने सालों तपस्या करके भोलेनाथ को प्रसन्न कर लिया और उनके साथ कैलाश जाने की इच्छा जताई, माता पार्वती से उसने भगवान शिवजी को मनाने को कहा। माता पार्वती के कहने पर भगवान शिवजी मान गए लेकिन उन्होंने एक शर्त रखी कि अगर वह एक रात में एक करोड़ मूर्तियां बना लेगा तो ही वह कैलाश जा सकेगा। कल्लू कुम्हार उसी समय मूर्तियां उकेरने में जुट गया मगर अगले दिन तक एक करोड़ में से एक मूर्ति कम बनी थी जिस वजह से वह कैलाश नहीं जा पाया।

लेकिन इसके अतिरिक्त एक और कहानी प्रचलित है। इस कहानी के अनुसार एक बार भगवान शिव एक करोड़ देवी-देवताओं के संग काशी अर्थात् आज के प्रचलित शिवनगरी वाराणसी को जा रहे थे इस दौरान रास्ते में रघुनंदन नामक पहाड़ से गुजरे। आज के समय में इसी पहाड़ को ही उनाकोटि कहा जाता है। यहां से गुजरते समय देवता थक गए थे तो भगवान शिवजी से उन्होंने विश्राम इच्छा जाहिर की। भगवान मान गए लेकिन साथ ही यह शर्त रखी कि सभी देवता सुबह जल्दी उठ जाएंगे लेकिन ऐसा नहीं हुआ। देवता थके हुए थे और गहरी निद्रा में सोते रह गए। ऐसे में शिवजी भगवान को क्रोध आ गया और उन्होंने सभी देवी-देवताओं को पत्थर में परिवर्तित कर दिया। ऐसे में यह कहा जाता है कि त्रिपुरा की उनाकोटि पहाड़ी असल में भगवान का दूसरा घर है। इस कारण यहां लोगों की अटूट श्रद्धा एवं आस्था है। प्रत्येक वर्ष यहां एक भव्य मेला भी लगता है।

ऐसे ही कई कहानियां इस जगह से जुड़ी हैं जो इसे और भी रोमांचकारी बनाती हैं।

काँच-सा था तो हमेशा तोड़ देते थे मुझे, अब तोड़ के दिखाओ कि अब पत्थर-सा हूँ मैं।



त्रिपुरा के चाय बागान



श्री नृपेन्द्र चन्द्र बिश्वास, व.ले.प.अ

दुनिया भर में चाय की यात्रा अपने वैज्ञानिक नाम, कैमेलिया साइनेंसिस में परिलक्षित होती है, 'कैमेलिया' शब्द इंगित करता है कि चाय एक लकड़ी का पौधा है, जो करीबी रूप से सजावटी झाड़ियों से संबंधित है और अपने सुगंधित फूलों के कारण असंख्य बगीचों में प्रवेश करता है। 'साइनेंसिस' शब्द दर्शाता है कि यह चीनी मूल का है। दिलचस्प बात यह है कि भारत में चाय की खपत का इतिहास कम से कम 12 शताब्दी का है। वर्तमान अरुणाचल प्रदेश (एन.इ.एफ.ए.) के सिंगो और खामती जनजातियों के लोग सदियों से चाय का सेवन करते रहे हैं। एक डच यात्री द्वारा यह 'जन ह्यूयेन वान लिंसचोटेन' के नाम से दर्ज किया गया है। 1823 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के मेजर जनरल रॉबर्ट ब्रूस ने आदिवासी प्रमुख बिशागम के साथ बातचीत की और वैज्ञानिक रूप से चाय की पत्तियों का परीक्षण किया। 1830 में चार्ल्स अलेक्जेंडर ब्रूस, दिवंगत रॉबर्ट ब्रूस के भाई ने जनजाति प्रमुख से चाय के नमूने लेकर कोलकाता के बॉटनिकल गार्डन में एकत्र किए। इसकी पहचान कोलकाता के बॉटनिकल गार्डन में 'चा' की एक अलग किस्म के रूप में की गई थी। यह चीनी किस्म नहीं थी। इसे कैमेलिया साइनेंसिस असामिका के रूप में नामित किया गया था। वर्ष 1838 में, सिंगोफो प्रमुखों द्वारा इस संसाधित चाय के 12 बक्से लंदन को निर्यात किए गए थे। 1837 में, ब्रिटिश बागवानों ने ऊपरी असम के चाबुआ में अपना पहला चाय बागान स्थापित किया। 1840 में, असम चाय कंपनी ने पहली बार चाय का निर्माण शुरू किया। बाकी इतिहास है।

त्रिपुरा में चाय उद्योग का इतिहास असम से बिल्कुल अलग है। त्रिपुरा प्राकृतिक संसाधनों का एक समृद्ध भंडार रहा है क्योंकि इसकी कटिबंधों और बंगाल की खाड़ी से निकटता के कारण इस स्थान पर उच्च मात्रा में वर्षा होती है। मध्यकाल में त्रिपुरा रियासत की सीमा को पश्चिम में ब्रिटिश भारत के सिलहट, ममसिंह और ढाका जिलों और दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिमी भाग में नोआखली और चटगांव जिलों तक विस्तारित किया गया था। लेकिन समय के साथ राज्य का भौगोलिक क्षेत्रफल कम होने लगा। लगातार मुगल आक्रमणों ने इसके संसाधनों का दोहन कर लिया था। धीरे-धीरे त्रिपुरा के राजाओं के पास केवल चकला-रोशनाबाद परगना ही बचा था। घटते क्षेत्रफल के कारण राजस्व का नुकसान चिंता का विषय

बन गया था और कोई अन्य विकल्प नहीं मिलने से त्रिपुरा के राजाओं ने बंगाल के आसपास के किसानों को त्रिपुरा में आने और बसने के लिए प्रोत्साहित करना शुरू कर दिया। अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए निपटान अधिकार प्रदान किए जा रहे थे। मैदानी त्रिपुरा यानी चकला-रोशनाबाद परगना में, राजा के पास जमींदारी थी और वह अंग्रेजों को कर दे रहे थे। पहाड़ी त्रिपुरा (टिप्पर) से होने वाली राजस्व आय नगण्य थी और इसीलिए संसाधनों की खराब प्राप्ति के कारण राज्य को संचालित करना मुश्किल हो गया।

नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर महाराजा के पारिवारिक मित्र थे और यह उनकी सलाह के अनुसार था कि राजस्व संसाधनों में सुधार के लिए महाराजा बीरेंद्र किशोर ने वाणिज्यिक रूप से चाय रोपण का निर्णय लिया। महाराजा ने बंगाल से ऊर्जावान और युवा



उद्यमियों को राज्य में चाय बागान स्थापित करने में रुचि दिखाई। उन्होंने 1916 में भारतीय बागान मालिकों को त्रिपुरा में चाय बागान खोलने की अनुमति दी। आश्चर्य की बात यह है कि महाराजा ने कभी भी ब्रिटिश बागवानों को राज्य में पांव रखने की अनुमति नहीं दी। और यह इस समय था कि गांधीजी का असहयोग आंदोलन जोर पकड़ रहा था और ब्रिटिश नौकरियों और उनके माल को बाहर निकालने के लिए हर जगह उत्साह था। यह इस समय था कि ब्रिटिश बंगाल के कुछ युवाओं ने त्रिपुरा महाराजा के निमंत्रण का जवाब दिया और "द हाउस ऑफ लेबरर्स लिमिटेड" की स्थापना की। कोमिला में और स्वतंत्र व्यवसाय शुरू किया। वर्तमान बांग्लादेश का कोमिला तब त्रिपुरा राज्य के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण व्यापार केंद्र था। त्रिपुरा ने चाय बागान के निपटान के लिए कुछ नियम बनाए थे। नियमों में से एक था, दरबार की विशेष अनुमति प्राप्त करने के बाद ही चाय बागान स्थापित करना, उद्यमी चाय बागान की स्थापना कर सकता था, लेकिन शाही अदालत की पूर्व अनुमति प्राप्त किए बिना

उसे स्थायी निपटान करने की अनुमति नहीं थी। चाय संपत्ति मालिकों को चाय की संपत्ति के भीतर किरायेदार रखने की अनुमति नहीं थी। "त्रिपुरा में चाय बागान के लिए नियम" का विशिष्ट प्रावधान यह था कि "राज्य में चाय बागान को रॉयल कोर्ट की पूर्व अनुमति के बिना निषिद्ध कर दिया गया है।

महाराजा द्वारा की गई पेशकश को सीखने के बाद, कई लोग त्रिपुरा में चाय बागानों की स्थापना के लिए आगे आए। महाराजा बीरेंद्र किशोर ने भूमि को पट्टे पर देने के लिए नियम और शर्तें जारी कीं। महाराजा के तत्कालीन प्रमुख दीवान कुमार दासगुप्ता ने 'बॉडोबस्त' की घोषणा की। तीन साल का किराया फ्री पीरियड था। शुरुआत में 33 लोगों ने चाय की जमीन के लिए आवेदन किया था। इनमें 23 आवेदनों को मंजूरी दी गई। अनुमोदित आवेदकों में 15 व्यक्ति सदर अनुमंडल में चाय बागान स्थापित करना चाहते थे, 7 कैलाशहर उपखंड में और 1 धर्मनगर उपखंड में। एक व्यक्ति का आवेदन रद्द कर दिया गया था। इसलिए, 22 टी एस्टेट्स प्रथम वर्ष यानी 1916 में त्रिपुरा के परिदृश्य में दिखाई दिए। चाय एस्टेट्स को आवंटित कुल भूमि लगभग 3,737 डून (24,800 एकड़) थी। त्रिपुरा में स्थापित पहला चाय बागान कैलाशहर में हीराचरा चाय बागान था। कोमिला के युवा समूह ने फातिखेड़ा और कलकलिया टी एस्टेट्स की स्थापना की। लेकिन चाय बागान नवजात अवस्था से ही वित्तीय संकट का सामना कर रहे थे और इसलिए भूमि राजस्व के भुगतान की छूट के लिए शाही अदालत से संपर्क किया। यह रिकॉर्ड में है कि महाराजा ने लंबित राजस्व के भुगतान के लिए एक वर्ष का समय दिया। रॉयल कोर्ट की अधिसूचना (14 वीं असंधार की अधिसूचना संख्या 1756, 1333 TE [जून 1923] में चाय बागानों के नाम दिखाए गए थे, जिन्हें राजस्व के भुगतान के लिए समय बढ़ाने की अनुमति दी गई थी। चाय के बागान थे: (1) मंटू टी कंपनी (2) कृष्णापुर टी कंपनी (3) मेखलीपारा टी कंपनी (4) सत्संगम-रानीबाड़ी टी गार्डन (5) गोलकपुर टी कंपनी और (6) जगन्नाथपुर टी कंपनी।

चाय बागान के मजदूर:

चाय बागान की प्रारंभिक अवधि के दौरान, बागानों को चाय के बागान में वन और वनस्पति की सफाई, निराई, गुड़ाई, छंटाई आदि जैसे कार्यों को करने के लिए तीव्र श्रम की कमी का सामना करना पड़ा। स्थानीय लोग चाय बागानों में काम करने के लिए अनिच्छुक थे और इस काम के लिए कब और कैसे त्रिपुरा आए मजदूरों का पता नहीं चला। हालांकि, यह काफी हद तक माना जाता है कि असम के चाय बागान मजदूरों के वर्ष 1921-22 के असहयोग आंदोलन का त्रिपुरा के चाय उद्योग पर असर पड़ा था। असम के 'चरगोला' पलायन को एक कारण के रूप में उद्धृत किया गया है। बारक घाटी में चाय बागानों के मजदूर, मालिकों द्वारा उनसे लगातार अमानवीय व्यवहार किए जाने के कारण, विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए थे और चाय

बागानों में हिंसा भड़क गई थी। 8000 से अधिक कार्यकर्ता चाय बागानों को छोड़कर असम के करीमगंज के पास चारगोला नामक स्थान पर इकट्ठे हुए थे। कछार जिले को छोड़ने के लिए ट्रेनों में जाने के लिए सैकड़ों मजदूर पैदल ही निकटतम रेलवे स्टेशन तक गए। बीमारियों और भुखमरी के कारण कई मजदूरों की रास्ते में ही मौत हो गई। ब्रिटिश भारतीय अधिकारियों ने उनके मार्च को जबरन रोक दिया। ब्रिटिश पुलिस ने उन असहाय और उत्तेजित मजदूरों पर गोलियां चलाईं, एक समय में यह विवाद उग्र हो गया। हालांकि



दुर्गाबाड़ी चाय बागान

मरने वालों की सही संख्या का पता नहीं चल सका है, लेकिन अनुमान लगाया गया कि लगभग हजार मजदूरों ने अपनी जान गंवाई। हर जगह आक्रोश और विरोध था। बराक घाटी में स्थित बंगाल रेलवे और इनलैंड स्टीमर नेविगेशन के श्रमिकों ने मजदूरों के साथ एकजुटता और क्रूरता के खिलाफ हड़ताल का आयोजन किया। इस घटना को सीखने पर त्रिपुरा के उदार महाराजा ने उन असहाय मजदूरों को त्रिपुरा लाने की पहल की। यह समझा जाता है कि महाराजा के प्रशासन के एक मंत्री ने ब्रिटिश भारत के राजनीतिक एजेंट को पत्र लिखा था जिसमें त्रिपुरा में उठाए गए सुरक्षा उपायों के अनुसार त्रिपुरा की मिट्टी को लाया गया था। महाराजा ने उन्हें स्वतंत्रता दी और मजदूरों को अपने स्वयं के निर्णय लेने के लिए या तो अपने मूल राज्यों में वापस जाने या त्रिपुरा में बसने और स्वतंत्र रूप से काम करने की अनुमति दी। उनमें से कई मजदूरों ने जवाब दिया और त्रिपुरा के चाय बागानों में काम करने वाले दल में शामिल हो गए और समय के दौरान हुई श्रम की कमी का मुद्दा एक बार और सभी के लिए सुलझा लिया गया। प्रशासन ने ब्रिटिश भारत के पोलिटिकल एजेंट को पत्र लिखा जिसमें त्रिपुरा में सुरक्षा उपायों के बारे में बताया गया और उसके अनुसार मजदूरों को बचाया गया, उन्हें त्रिपुरा की धरती पर लाया गया। महाराजा ने उन्हें स्वतंत्रता दी और मजदूरों को अपने स्वयं के निर्णय लेने के लिए या तो अपने मूल राज्यों में वापस जाने या त्रिपुरा में बसने और स्वतंत्र रूप से काम करने की अनुमति दी। उनमें से कई मजदूरों ने जवाब दिया और त्रिपुरा के चाय बागानों में काम करने वाले दल में शामिल हो गए और समय के दौरान

हुई श्रम की कमी का मुद्दा एक बार और सभी के लिए सुलझा लिया गया। प्रशासन ने ब्रिटिश भारत के पोलिटिकल एजेंट को पत्र लिखा जिसमें त्रिपुरा में सुरक्षा उपायों के बारे में बताया गया और उसके अनुसार मजदूरों को बचाया गया, उन्हें त्रिपुरा की धरती पर लाया गया।

वर्तमान परिदृश्य:

वर्तमान में, त्रिपुरा में लगभग 50 से अधिक चाय बागान हैं, लगभग 2500 छोटे चाय उत्पादकों और 21 प्रसंस्करण कारखानों में उत्पादन होता है, जो लगभग 6 मिलियन किलोग्राम प्रति वर्ष उत्पादन के साथ काम करता है। 20 हजार से अधिक लोगों का जीवनकाल इसके रखरखाव, उत्पादन और बिक्री पर सीधे निर्भर है। लेकिन उनकी जीवनशैली और गुणवत्ता में सुधार नहीं हुआ है और वे अभी भी समाज के हाशिए के हिस्से के रूप में रहते हैं। हालांकि सरकार के प्रयास से, इस क्षेत्र में जीवन के एक नए पट्टे का उल्लंघन हुआ है और धीरे-धीरे लेकिन लगातार इसका उत्पादन भी अब लगभग 9 मिलियन किलोग्राम तक बढ़ रहा है। इस प्रकार त्रिपुरा चाय बागानों के स्वामित्व की 3 श्रेणियां हैं। (ए) त्रिपुरा चाय विकास निगम लिमिटेड (बी) निजी स्वामित्व वाले चाय बागानों (सी) सहकारी क्षेत्र में चाय उद्योग। चाय बागानों की मौजूदगी के बावजूद भी यह रिकॉर्ड पर है। त्रिपुरा में एक सदी से अधिक समय तक चाय का उत्पादन इसकी पारिस्थितिकी तंत्र के लिए सर्वव्यापी नहीं हुआ है, हालांकि एक राष्ट्र के रूप में हम एक पेय के रूप में चाय के लिए अपने प्यार के लिए जाने जाते हैं। राज्य में उत्पादित चाय अब निर्यात भी की जाती है। वर्ष 2013 में त्रिपुरा चाय के रुढ़िवादी किस्म को गोलकपुर टी एस्टेट से ईरान निर्यात किया गया था। अन्य चाय सम्पदा जैसे मनु घाटी टी एस्टेट ने ब्रिटेन, अफगानिस्तान और पाकिस्तान को 'ज्वेल टिप' चाय का निर्यात किया। लधुआ टी एस्टेट ने इटली और जर्मनी को चाय का निर्यात किया। यह आश्चर्य है कि त्रिपुरा भारत के चाय के नक्शे में एक जगह बना रहा है।

**चलो इस बेफिक्र दुनिया को खुल कर जी लेते हैं,
सब काम छोड़ो पहले चाय पी लेते हैं ।**



त्रिपुरा की वनस्पतियां



श्री रूपक भट्टाचार्य, स.ले.प.अ.

अधिकांश भारतीय उपमहाद्वीप की तरह त्रिपुरा, इंडोमालयन क्षेत्र के भीतर स्थित है। बायोग्राफिक वर्गीकरण के अनुसार यह राज्य भारत के उत्तर-पूर्व जैव-भौगोलिक क्षेत्र में आता है। वर्ष 2011 में राज्य का 57.73 प्रतिशत हिस्सा वन आच्छादित था। त्रिपुरा में तीन अलग-अलग प्रकार के पारिस्थितिक तंत्र पाए जाते हैं: पहाड़, जंगल और मीठे पानी का स्रोत। पहाड़ी ढलानों पर सदाबहार वन और रेतीली नदी के तट पर डिप्टेरोकार्पस, आर्टोकार्पस, अमोरा, इलाओकार्पस, सिज़ेगियम और यूजेरिया जैसी प्रजातियों की बहुतायत है। दो प्रकार के नम पर्णपाती वन में बहुसंख्यक वनस्पतियाँ शामिल हैं: नम पर्णपाती मिश्रित वन और साल (श्योरा रोबस्टा) -प्रभारी वन। पर्णपाती और सदाबहार वनस्पतियों के साथ बाँस और बेंत के जंगलों का पाया जाना त्रिपुरा की वनस्पतियों की खासियत है। यहां, खासकर मैदानी इलाकों में घास के मैदान और दलदल भी मौजूद हैं। त्रिपुरा के दलदलों में अल्बिज़िया, बैरिंगटनिया, लेगरोस्ट्रोइमिया और मकारंगा जैसे शाकाहारी पेड़, झाड़ियाँ और वृक्ष पनपते हैं। झाड़ियों और घासों में शुमानियानथस डाइकोटोमा, फ्रागमाइट्स और सैकरम (गन्ना) शामिल हैं।

1989-90 में एक सर्वेक्षण के अनुसार, त्रिपुरा लगभग 90 प्रकार के स्तनपायी प्रजातियों की मेजबानी करता है, जिनमें हाथी (एलिफस मैक्सिमस), भालू (मेलुरस यूर्सिनस), बेलुरोंग (आर्कटिसिस बिंटुरोंग), जंगली कुत्ते आदि शामिल हैं। इसके अतिरिक्त अल्पाइनस, साही, भौंकने वाले मृग, सांबर, जंगली सूअर, तेंदुआ, क्लाउडेड लेपर्ड, छोटी बिल्लियां और प्राइमेट्स की भी कई प्रजातियां हैं। भारत के 15 मुक्त प्राइमेट्स में से सात त्रिपुरा में पाए जाते हैं। यह किसी भी राज्य में पाई जाने वाली सबसे अधिक प्रजातियाँ हैं। राज्य में पक्षियों की लगभग 300 प्रजातियाँ हैं।

राज्य के वन्यजीव अभ्यारण्य 'सिपाहीजला', 'गोमती', 'रोवा' और 'तृष्णा' वन्यजीव अभ्यारण्य हैं। राज्य के राष्ट्रीय उद्यान क्लाउड लेपर्ड नेशनल पार्क और राजबाड़ी नेशनल पार्क हैं। ये संरक्षित क्षेत्र कुल 566.93 वर्ग कि.मी. को कवर करते हैं। सर्दियों में, हजारों प्रवासी पक्षी गोमती नदी और रुद्रसागर झील में आते हैं।

त्रिपुरा में सिपाहीजला वन्यजीव अभ्यारण्य में 'मोनोकोटाइलडॉन' और 'डाइकोटाइलडोनस' पौधों की 456 पौधे प्रजातियां हैं। साल, चामल, गरजन और कनक के पेड़ मुख्य रूप से मौजूद हैं। माध्यमिक प्रजातियाँ पिचला, कुर्चा, आवला, बहेड़ा, हरगजा, अमलाकी, बाँसोस और घास से मिलकर बनती हैं।

त्रिपुरा का पर्वतीय क्षेत्र अधिक वर्षा का क्षेत्र है जहाँ चौड़े पत्ते की वनस्पतियाँ - ओक, चेस्टनट, एल्डर, पाइन (केतकी) आदि पाए जाते हैं। जबकि कृषि में यह क्षेत्र चाय, कहवा आदि के लिए उपयुक्त माना जाता है।



त्रिपुरा की झीलें (डंबूर लेक)



श्री संतोष कुमार, स.ले.प.अ

दो वर्ष पूर्व मैं ऑडिट के लिए काइबुक फ़ॉरेस्ट सब डिविजन गया था। शुक्रवार का दिन था, जतनबाड़ी के फ़ॉरेस्ट अतिथिगृह में शाम की चाय की चुस्की लेते हुए अपने टीम के सदस्यों के साथ हंसी-मजाक चल रहा था, साथ ही अगले दिन अगरतला लौटने की खुशी भी थी। हम सभी अपने-अपने सामान पैक कर लिये थे। तभी रसोईया ने कहा “सर आप लोग डंबूर झील देख के घर जाइये, बहुत ही सुन्दर है जोकि यहाँ से मात्र 14 कि.मी. दूर है।” मेरे अलावा टीम के बाकी सदस्य पहले वहां जा चुके थे फिर भी सभी ने एक स्वर में जाने का निर्णय लिया। अगले ही पल मैं गूगल और यूट्यूब पर डंबूर के बारे में देखने लगा जो कुछ इस तरह है:

डंबूर एक साफ पानी की आकर्षक झील है जो राज्य की राजधानी अगरतला से 115 कि.मी. दूर अमरपुर सब डिवीज़न में स्थित है। यह राइमा और साइमा नदी का संगम है जो लगभग 41 वर्ग कि.मी. में फैला हुआ है। इसके अन्दर 48 छोटे-छोटे द्वीप हैं। यह आकार में डमरु के जैसा है। लोगों की मान्यता है कि भगवान शिव के डमरु के जैसा आकार होने के कारण इसका नाम डंबूर पड़ा।

गूगल और यूट्यूब पर झील के मनोहर और विहंगम दृश्य देखने के बाद ये परिचय मुझे बहुत ही साधारण लगा। अगले दिन सुबह आठ बजे निकलने का समय निर्धारित

हुआ। हम सभी रात 10 बजे तक सो गये। सुबह ठीक आठ बजे हम डंबूर के लिए प्रस्थान किये। जतनबाड़ी और डंबूर के बीच त्रिथमुख में गोमती हाइड्रो इलेक्ट्रिक पावर प्रोजेक्ट है। यह गोमती नदी का उद्गम स्थल है, जहाँ मकर संक्रांति में एक भव्य मेला लगता है। इस मेले का एक आध्यात्मिक महत्व भी है। यही वजह है कि जनवरी के महीने में पर्यटकों के लिए डंबूर सबसे बड़ा आकर्षण का केंद्र होता है।

मंदिर घाट (डंबूर का प्रवेशद्वार) पहुंचकर हमने एक मोटरबोट किया और निकल पड़े डंबूर झील की सैर पर। यदि आप रिजर्व करते हैं तो मोटरबोट का किराया ₹ 2,000/- है। हम लोगो डंबूर में लगभग तीन घंटे का समय बिताया। तो चलिए मैं अपना अनुभव साझा करता हूँ और डंबूर की संभावनाओं के बारे में उल्लेख करता हूँ।

पर्यटन:- यह क्षेत्र देश की आर्थिक समृद्धि और रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह देश का वृहद सेवा उद्योग है। देश का तीसरा सबसे छोटा राज्य होने के नाते और अद्भुत विरासत समेटे हुए त्रिपुरा एक सुंदर पर्यटन स्थल है। पर्यटन के दृष्टिकोण से



डंबूर में अपार संभावनायें हैं। इस झील के छोटे-छोटे द्वीपों से गुजरते हुए एक पल के लिये मुझे लगा कहीं मैं विदेश तो नहीं आ गया? क्या यह झील सच में भारत में है? यकीन मानिये आप भी आश्चर्य करेंगे इसके सुन्दर, हरियाली और मनोहर दृश्य देखकर। शीतकाल में हजारों प्रवासी जंगली पक्षी इस झील की ओर आकर्षित होते हैं। जब तक ये पक्षी झील में रहते हैं तब तक पक्षी प्रेमी पर्यटकों में खुशी की लहर होती है। इसके 48 द्वीपों में से एक द्वीप को पर्यटन के उद्देश्य से त्रिपुरा टूरिज्म डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड के द्वारा विकसित किया गया है जिसका नाम नार्कल कुंज है। यहाँ पर्यटकों के ठहरने और पिकनिक

मनाने की सुविधा है। हाल ही में डंबूर में नौकाविहार भी शुरू हो गया है। इससे पर्यटकों की संख्या में अवश्य ही वृद्धि होगी।

मछली पालन :- मछली त्रिपुरा राज्य की 95% आबादी के भोजन का अहम हिस्सा है।

राज्य में 3,44,417 हेक्टेयर

मछली पालन के लिए उपयुक्त

जलस्रोत (कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का केवल 3.28%) है।

इनमें से केवल 23% खुले

आसमान वाले जलस्रोत हैं। डंबूर

का विशाल क्षेत्र इस व्यवसाय के

लिए एक मील का पत्थर साबित

हो सकता है। यहाँ की मछलियाँ

स्वाद और बड़े आकार के लिए

जानी जाती हैं। त्रिपुरा की



फिशरीज डिपार्टमेंट डंबूर के असीम संसाधन के उपयोग के लिए वर्षों से प्रयासरत है। इस

झील पर आश्रित सहकारी समिति और स्वयं सहायता समूह से जुड़े मछुआरों को भारत और

त्रिपुरा सरकार की विभिन्न योजनाओं से समय-समय पर लाभान्वित किया जाता है। वर्ष

2014-15 से राज्य की फिशरीज डिपार्टमेंट ने जलाशय बनाकर केज कल्चर से मछली का

उत्पादन और पालन-पोषण किया जा रहा है। हालांकि इसमें अभी तक आपेक्षित सफलता नहीं

मिली है। प्रत्येक वर्ष 25 जून से लेकर 25 सितम्बर तक संयोजन समय होने के कारण डंबूर

में मछली पकड़ने पर रोक लगा दी जाती है। इस दौरान प्रत्येक मछुआरे को ₹ 3,000/-

सेविंग सह रिलीफ फण्ड के तौर पर दिया जाता है।

बत्तख पालन :- त्रिपुरा के वातावरण के अनुकूल बत्तख की दो प्रजातियों की उत्तरजीविता

दर अच्छी होती है। एक खाकी केम्प्वेल और दूसरा वाइट पेकिन। खाकी केम्प्वेल अंडे के लिए

और वाइट पेकिन मांस के लिए उपयुक्त होती है। वर्ष 2018 में रुद्रसागर के किनारे बसे गांवों

के एक हजार महिला गृहणियों को आय बढ़ाने के उद्देश्य से प्रत्येक को बत्तख के पचास

बच्चे फिशरीज विभाग की तरफ से दिए गये। अगर इसी तर्ज पर डंबूर के किनारे बसे गांवों

के नागरिकों को बत्तख पालन के लिए प्रोत्साहित किया जाए तो स्वरोजगार की ओर एक

अच्छा कदम साबित हो सकता है। वाइट पेकिन देखने में सुन्दर होती है जो पर्यटकों को

अपनी ओर आकर्षित करती है। इसके अलावा बत्तख के मल मछलियों के लिए बड़े पोषक

होते हैं।

डंबूर पहुंचने के साधन:- डंबूर अगरतला से 115 कि.मी., उदयपुर से 63 कि.मी., अमरपुर से 34 कि.मी. और जतनबाड़ी से 14 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। अगरतला के नागरजला बस स्टैंड से जतनबाड़ी के लिए (वाया-उदयपुर, अमरपुर) बस सेवा है। जतनबाड़ी से जीप और ऑटो आसानी से मिल जाता है। आप चाहे तो नागरजला बस स्टैंड से चार पहिया गाड़ी रिजर्व कर सकते हैं। रात्रि विश्राम के लिए पर्यटक साइमा टूरिस्ट लॉज, गंडाचेरा और सागरिका पर्यटन निवास, अमरपुर में ऑनलाइन बुकिंग कर सकते हैं।

निर्णायक टिप्पणी:- किसी भी देश या राज्य के लिए सबसे बड़ी चुनौती रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना होती है। डंबूर झील प्रकृति का एक अद्भुत संसाधन है। इस संसाधन का उपयोग करके राज्य में बड़े पैमाने पर रोजगार सृजित किया जा सकता है जिससे त्रिपुरा की आर्थिक समृद्धि बढ़ेगी।



उज्जयंता पैलेस 'राज्य संग्रहालय'



श्री पंकज कुमार, आं.प्र.प्र.

किसी भी देश के ऐतिहासिक स्थल उस देश के अतीत की सभ्यता एवं संस्कृति का स्पष्ट प्रतिबिम्ब होते हैं। भारतीय सभ्यता और संस्कृति विश्व की कुछ प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है। प्राचीनता के साथ इसका वैभवशाली इतिहास जुड़ा हुआ है। इस वैभवशाली इतिहास में घटित अनेक घटनाओं का वर्णन यहां के ऐतिहासिक स्थल आज भी करते हैं। भारत में अनेक ऐसे ऐतिहासिक स्थल हैं जो देश की अतुलनीय वास्तुकला का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इन्हीं स्थलों में से एक है, अगरतला में बना उज्जयंता पैलेस, जिसकी सुंदरता मुझे बारंबार अपनी ओर आकर्षित करती है।

‘उज्जयंता पैलेस’ जिसे कोकबोरोक भाषा में ‘न्युंगमा’ कहते हैं, पूर्वोत्तर भारत के त्रिपुरा राज्य की राजधानी अगरतला में स्थित है। मूल रूप से यह महल त्रिपुरा के माणिक्य राजवंश का निवास स्थान हुआ करता था। जिसका निर्माण तत्कालीन माणिक्य वंश के राजा ‘महाराज राधा किशोर माणिक्य’ द्वारा वर्ष 1899 से 1901 के मध्य करवाया गया था। इसके

प्रमुख वास्तुकार सर एलेक्जेंडर मार्टिन थे। वर्ष 1972-73 में भारत सरकार ने यह महल शाही राजपरिवार से 25 लाख रुपये की राशि अदा करके खरीद लिया और तब से लेकर जुलाई, 2011 तक इसे त्रिपुरा के विधान भवन के रूप में इस्तेमाल किया गया। वर्तमान समय में यह त्रिपुरा राज्य संग्रहालय के रूप में पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र बन गया है। त्रिपुरा राज्य संग्रहालय का उद्घाटन देश के तत्कालीन उपराष्ट्रपति 'श्री हामिद अंसारी' द्वारा 25 सितम्बर 2013 को किया गया था।



उज्जयंता पैलेस की मुख्य इमारत लगभग एक वर्ग कि.मी. के क्षेत्रफल में फैली हुई है, जिसमें सार्वजनिक कक्ष, सिंघासन कक्ष, दरबार कक्ष, पुस्तकालय और रिसेप्शन कक्ष सम्मिलित हैं। महल के मुख्य द्वार से प्रवेश करते ही महाराजा राधा किशोर माणिक्य की विशाल प्रतिमा का निर्माण किया गया है। मुख्य इमारत और मैदान को मिलाकर यह महल लगभग 3.2 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र को अधिग्रहित करता है। उज्जयंता पैलेस दो मंजिला विशाल इमारत है, जिसके ऊपर तीन विशाल गुंबद हैं, सबसे बड़े गुंबद की ऊंचाई 86 फीट है। वास्तुकला के दृष्टिकोण से उज्जयंता पैलेस मुगल, रोमन व ब्रिटिश शैलियों का अद्भुत मिश्रण है। महल के दोनों किनारों पर बने कृत्रिम जलाशय इसकी शोभा में चार चाँद लगाते हैं। त्रिपुरा राज्य संग्रहालय त्रिपुरा के साथ-साथ सम्पूर्ण उत्तर-पूर्व भारत की संस्कृति, परंपरा, सामाजिक परिवेश एवं प्रमुख हस्तशिल्प आदि की सुंदर कलाकृतियों को संग्रहित किए हुए है।

मूलतः उज्जयंता पैलेस अगरतला से लगभग 10 कि.मी. की दूरी पर स्थित था जिसका निर्माण माणिक्य वंश के राजा “महाराज ईशान चन्द्र माणिक्य” ने वर्ष 1849-62 के दौरान करवाया था। किंतु 12 जून 1897 को असम में आए तीव्र भूकम्प का प्रकोप यहां भी देखने

को मिला और प्राचीन उज्जयंता पैलेस तहस-नहस हो गया था। पुनः अगरतला शहर के मुख्य भाग में नवीन उज्जयंता पैलेस का निर्माण करवाया गया जोकि वर्तमान समय में भूकम्प रोधी प्रणाली से लैस है। इस नवनिर्मित महल का नाम उज्जयंता पैलेस देश के महान कवि एवं नोबेल पुरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ टैगोर के द्वारा दिया गया था। उज्जयंता पैलेस को पूर्वोत्तर भारत का सबसे बड़ा संग्रहालय होने का दर्जा भी प्राप्त है जिसने सम्पूर्ण पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति और सभ्यता को अपने हृदय में संजोये रखा है।



त्रिपुरा- भौगोलिक दृष्टिकोण एवं जलवायु



श्री नमित कुमार, आशुलिपिक

परिचय- त्रिपुरा पूर्वोत्तर में स्थित एक भारतीय राज्य है, जिसकी सीमाएं मिज़ोरम, असम तथा बांग्लादेश से लगी हुई हैं। उत्तर, दक्षिण तथा पश्चिम में यह बांग्लादेश से घिरा हुआ है तथा इसके कुल सीमा क्षेत्र का 84 फीसदी यानी 856 किलोमीटर क्षेत्र अंतर्राष्ट्रीय सीमा के रूप में है। असम के साथ इसकी सीमा की लंबाई 53 किलोमीटर है तथा मिज़ोरम के साथ यह 109 किलोमीटर लंबी है। यह राज्य राष्ट्रीय राजमार्ग-44 के माध्यम से पूरे देश से जुड़ा हुआ है। यह राजमार्ग असम के करीमगंज जिले की पहाड़ियों के बीच में से होता हुआ मेघालय, असम, उत्तर बंगाल से होते हुए कोलकाता तक जाता है।

भौगोलिक विशेषताएं- क्षेत्रवार देखने पर त्रिपुरा देश का तीसरा सबसे छोटा राज्य है साथ ही जनसंख्या के आधार पर यह पूर्वोत्तर का दूसरा बड़ा राज्य है। प्रदेश की कुल कृषक आबादी का करीब 90 प्रतिशत हिस्सा छोटे और सीमांत किसान हैं। प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्र के केवल 27 प्रतिशत भाग पर ही खेती होती है। सांस्कृतिक रूप से संपन्न त्रिपुरा की जनसंख्या लगभग 36 लाख है। अनुमानतः यहां की आबादी का एक-तिहाई हिस्सा जनजातियों का है। राज्य की संस्कृति के अनुसार यहां 19 उप-जनजातियां हैं।

इस राज्य की भौगोलिक संरचना तथा जनसंख्या वितरण हमेशा ही विवादों का विषय रहा है। पिछली सदी खासतौर पर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही जनजातियों तथा गैर

जनजातियों के बीच स्थानांतरण को लेकर लंबा विवाद चल रहा है। जनजातियों का मानना है कि स्थानांतरण की वजह से उनकी संख्या घटी है। सन् 1901 में त्रिपुरा की जनसंख्या 1.73 लाख थी, जिनमें से 52.89 प्रतिशत जनजातीय लोग थे। 1941 में इनकी संख्या बढ़कर 5.13 लाख हो गई जो कुल जनसंख्या का 50.09 प्रतिशत थी। लेकिन सन् 1981 में जनजातियों की संख्या में भारी गिरावट देखी गई तथा इनकी संख्या कुल जनसंख्या की 28.44 प्रतिशत ही रह गई, जबकि तब तक जनसंख्या बढ़कर 20 लाख से अधिक हो गई थी। आश्चर्यजनक रूप से कुल जनसंख्या में से जनजातियों की आबादी घटती जा रही थी तथा यह आधे से भी कम हो गए थे। एक सदी में ही इनकी संख्या कुल जनसंख्या की चौथाई रह गई थी। भौगोलिक बदलाव तथा आर्थिक परिदृश्य में आ रहे बदलावों की वजह से यहां के निवासियों पर मिजो तथा कुकिस बोलने का दबाव बढ़ रहा था। एक रिपोर्ट के मुताबिक 97.4 प्रतिशत जनजातियां ग्रामीण थीं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था तथा मानव विकास के लिए इनका विकास अत्यंत आवश्यक था।

जलवायु- त्रिपुरा की जलवायु कम गर्म तथा आर्द्र होती है। त्रिपुरा राज्य की जलवायु आदर्श बारिश के लिए अनुकूल है। जून से सितंबर तक रहने वाले मानसून के मौसम में 2,500 मिमी से अधिक वर्षा होती है। निचले इलाकों में ग्रीष्म ऋतु में अधिकतम औसत तापमान 35° से. होता है।



विकास की ओर बढ़ता 'त्रिपुरा'



श्री प्रिंस चौधरी, एमटीएस

भारत में समस्त राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों की अपनी अलग-अलग पहचान एवं संस्कृति है। भारत में कुछ राज्य बहुत ही बड़े हैं जैसे की राजस्थान और कुछ राज्य बहुत ही छोटे हैं जो कि मानचित्र पर बड़ी मुश्किल से मिल पाते हैं, जैसे गोवा। कुछ ऐसे ही छोटे राज्यों में "त्रिपुरा" का नाम भी आता है। त्रिपुरा राज्य की खास बात यह है कि भारतीय मानचित्र पर इसे ढूंढने से काफी तकलीफ होती है, परंतु आज मैं आपको इस छोटे लेकिन महत्वपूर्ण राज्य की आजीविका, अर्थव्यवस्था की जानकारी दूंगा। इस लेख के अंत तक आपको पता चलेगा कि आज त्रिपुरा विकास की ओर बड़ी तीव्रता से आगे बढ़ रहा है।

त्रिपुरा भारत के पूर्वोत्तर भाग में स्थित है। त्रिपुरा उत्तर, पश्चिम व दक्षिण में बांग्लादेश, पूर्व में मिजोरम और पूर्वोत्तर में असम राज्य से घिरा हुआ है। त्रिपुरा का क्षेत्रफल सिर्फ 10486 वर्ग कि.मी. है और यह गोवा तथा सिक्किम के बाद भारत का तीसरा सबसे छोटा राज्य है। त्रिपुरा की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि आधारित है। त्रिपुरा के सकल राज्य घरेलू उत्पाद से लगभग 30% की हिस्सेदारी के साथ कृषि सबसे प्रमुख योगदानकर्ता बना हुआ है। वर्ष 2011 की जनगणना के मुताबिक कामकाजी आबादी का 52% हिस्सा खेती-बाड़ी के काम से जुड़ा हुआ है। 28% हिस्सा किसान और शेष 24% खेतिहर मजदूर के रूप में कृषि कार्य में लगे हैं। प्रदेश की कुल कृषक आबादी का करीब 90% हिस्सा छोटे और सीमांत किसान हैं। प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्र के केवल 27% भाग पर ही खेती होती है। त्रिपुरा की मुख्य फसल चावल है तथा नकदी फसलों में जूट, कपास, चाय, गन्ना आदि शामिल हैं।



विकास की ओर त्रिपुरा के बढ़ते कदम :- भारत के पूर्वोत्तर राज्यों, विशेष रूप से त्रिपुरा में रबर की खेती उन गरीब आदिवासियों के जीवन को बेहतर बना रही है जो 'झूम' या 'स्लैश' एवं 'बर्न' कृषि का कार्य करते थे तथा इस कृषि से क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में नाटकीय परिवर्तन आया है।

त्रिपुरा केरल के बाद दूसरा सबसे बड़ा रबर की खेती करने वाला राज्य बन गया है, जहां प्राकृतिक रबर की खेती की जाती है। देश के लचीले पॉलीमर उद्योग को बढ़ावा देने एवं राज्य में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने के लिए केरल के इरापुरम के रबर पार्क के बाद, भारत का दूसरा औद्योगिक रबर पार्क 23 करोड़ रुपये की लागत से पश्चिम त्रिपुरा के बोदंगनगर में स्थापित किया गया है। अगले कुछ वर्षों में इस पार्क में रबर आधारित उद्योग की लगभग 20 परियोजनाएं स्थापित की जाएंगी।

- **प्राकृतिक गैस का भंडार :-** अभी हाल ही में केंद्रीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान ने सिपाहीजला जिले में ओ.एन.जी.सी. के सोनामुरा गैस संग्रह स्टेशन और पश्चिम त्रिपुरा जिले में प्राकृतिक गैस की पाईप से आपूर्ति के कनेक्शन का शुभारंभ किया है। श्री धर्मेन्द्र प्रधान ने रिमोट के माध्यम से यहां कई परियोजनाओं का उद्घाटन करते हुए कहा, 'त्रिपुरा प्रतिदिन 49.60 लाख मानक घन मीटर गैस का उत्पादन करता है जो

देश में सर्वाधिक है तथा त्रिपुरा प्राकृतिक गैस उत्पादन करने के मामले में देश में शीर्ष स्थान पर पहुंच गया है।'

इसके साथ ही उन्होंने गोमती जिले के उदयपुर में पहले सी.एन.जी. स्टेशन और आनंदनगर में महिलाओं के लिए राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थान की आधारशिला रखी। सोनामुरा गैस संग्रह स्टेशन को 215 करोड़ रुपये की लागत से तैयार किया गया है। यह त्रिपुरा तथा पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों के लिए बिजली उत्पादन करने वाले नीपको मोनारचक बिजली संयंत्र को अतिरिक्त गैस की आपूर्ति करेगा। पहले सीएनजी स्टेशन की शुरुआत से दक्षिण त्रिपुरा, गोमती, सिपाहीजला और पश्चिम त्रिपुरा जिलों में हरित गलियारा तैयार होगा। गेल का खिलपारा मंदर स्टेशन गोमती जिले में शहरी गैस वितरण नेटवर्क के केंद्र का काम करेगा और इस क्षेत्र में गैस आधारित अर्थव्यवस्था के विकास में मदद करेगा और इससे क्षेत्र में रोजगार के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष अवसर भी सृजित होंगे।

- **विशेष आर्थिक जोन (SEZ) :-** वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय ने त्रिपुरा में अबतक का पहला विशेष आर्थिक जोन बनाए जाने की अधिसूचना जारी की है। यह अधिसूचना 16 दिसंबर 2019 को जारी की गई। प्रस्तावित विशेष आर्थिक जोन त्रिपुरा की राजधानी अगरतला से 130 कि.मी. दूर दक्षिण त्रिपुरा के सबरूम जिले के पश्चिम जलेपा में बनाया जा रहा है। यह विशेष रूप से कृषि उत्पादों से जुड़े प्रसंस्करण उद्योग के लिए होगा। त्रिपुरा औद्योगिक विकास निगम के द्वारा विकसित इस एस.ई.जेड. परियोजना पर 1550 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत आएगी। इसमें विशेष कौशल आधारित करीब 12 हजार नौकरियों के अवसर पैदा होंगे। इस विशेष आर्थिक क्षेत्र में रबर, कपड़ा, वस्त्र उद्योग, बांस तथा कृषि उत्पादों से जुड़ी प्रसंस्करण इकाईयां लगाई जाएंगी। चिटगांव बंदरगाह के करीब होने तथा दक्षिण त्रिपुरा में फेनी नदी के ऊपर निर्माणाधीन पुल की वजह से सबरूम में बन रहे एस.ई.जेड. में निजी निवेश के अवसर बनेंगे। एस.ई.जेड. बनने के बाद पहले पाँच वर्षों तक यहां लगाई जाने वाली इकाईयों को आयकर अधिनियम की धारा- 10 (ए) के तहत निर्यात आय पर 100 प्रतिशत की छूट दी जाएगी। इसके अलावा अगले पाँच वर्षों के लिए छूट की यह सीमा 50 प्रतिशत होगी।

अतः हम कह सकते हैं कि देश के मुख्य भाग से दूर तथा विषम भौगोलिक परिस्थितियां होने के बावजूद भी त्रिपुरा आज विकास की ओर तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है और आने वाले कुछ वर्षों में यह भारतीय अर्थव्यवस्था में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।



चतुर्दश देवताबाड़ी एवं कस्बा काली मंदिर



श्री कुमार मृणाल, व.ले.प

कासबेश्वरी काली माता या कमला सागर काली मंदिर अगरतला से 31 कि.मी. दूर अगरबाला नामक एक छोटे से गांव में स्थित है। यद्यपि इस मंदिर का निर्माण कार्य महाराजा कालियान माणिक्य ने शुरू किया था, परंतु 15वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में महाराजा धन्य माणिक्य द्वारा एक पहाड़ी की चोटी पर इस मंदिर का निर्माण कार्य पूर्ण हुआ। यह मंदिर भारत-बांग्लादेश की सीमा के पास स्थित है। कमला सागर काली मंदिर के भीतर स्थापित मूर्ति जिसे कासबेश्वरी काली कहा जाता है, वास्तव में दसभुजा वाली देवी दुर्गा या महिषासुरमर्दिनी की मूर्ति है और मूर्ति के चरणों में एक शिवलिंग है। बलुआ पत्थर से बनी यह मूर्ति हालांकि मां दुर्गा की है लेकिन इसे मां काली के रूप में पूजा जाता है। महाराजा धन्य माणिक्य ने मंदिर के सामने एक बड़े जलनिकाय को खुदवाया और अपनी पत्नी कमला देवी के नाम पर इसका नाम कमला सागर रखा। वर्तमान में इंडो-बांग्ला बॉर्डर यहां स्थापित है जिसके लिए यह आगंतुकों का एक विशेष आकर्षण केंद्र भी है। इस शक्ति चमक का नाम और प्रसिद्धि दूर-दूर से आए धार्मिक पर्यटकों को आकर्षित करती है। हर साल अप्रैल के महीने में मंदिर के पास एक बड़ा मेला लगता है और हजारों की संख्या में भक्त मंदिर में पूजा अर्चना के लिए उमड़ते हैं।

चतुर्दश मंदिर :- त्रिपुरा का चतुर्दश मंदिर या 14 देवताओं का मंदिर अगरतला के पुराने हिस्से के पास स्थित है। यह मंदिर चतुर्दश देवता को समर्पित है, जिसका अर्थ होता है '14



छायांकन: श्री कुमार मृणाल

देवता'। इस मंदिर का निर्माण राजा कृष्ण माणिक्य देवबर्मा ने किया था। चतुर्दश मंदिर में पूजे जाने वाले 14 देवताओं को कोकबोरोक भाषा में बुरसा, लमपरा, बीकत्रा, अखाड़ा, थुमनाईरोक, संग्रोमा, बोनिरोक, ट्विमा, सोंग्राम, म्वाटिकोटर, मेलुमा, नोकसुमवताई, स्वल्कमवताई और खुलुमा कहा जाता है। यह 14 देवता हिंदू देवी-देवताओं के स्थानीय रूप हैं जो क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु, शिव, दुर्गा, लक्ष्मी, कार्तिकेय, सरस्वती, गणेश, समुद्र, पृथ्वी, अग्नी, गंगा, हिमाद्रि और कामदेव हैं। इस मंदिर की मूर्तियां मूलरूप से आदिवासी थीं लेकिन बाद में उन्हें हिंदू रीति-रिवाजों में शामिल कर लिया गया। मूर्तियों की विशिष्ट विशेषताएं जो उन्हें अन्य मंदिरों से अलग करती हैं, उनका रूप है जो आदिवासी प्रभाव को दर्शाता है। देवताओं की पूजा केवल सिर के रूप में की जाती है अर्थात् किसी भी मूर्ति के हाथ-पैर नहीं होते हैं। मूर्तियों का निर्माण कंधे से ऊपर की ओर शुरू होता है जो मुकुट तक उनके सिर के शीर्ष पर बैठते हैं। यह सभी मूर्तियां मिश्र धातु की बनी हैं सिर्फ एक मूर्ति, जो चांदी की बनी है, भगवान शिव की है।

पौराणिक कथा के अनुसार और चतुर्दश मंदिर के इतिहास के बारे में यह वर्णित है कि राजा त्रिपुर को भगवान शिव ने उनके अधर्मी कृत्यों और आचरण के कारण मार दिया था। त्रिपुर की

विधवा, हरबती नदी में स्नान करने गई थी, जब उसने 14 देवताओं को एक जंगली भैंस का पीछा करते हुए देखा और एक कपास



के पेड़ पर शरण ली। हरबती ने देवताओं को जंगली भैंस को मारने और खुद को बचाने में मदद की। सभी चौदह देवी-देवता हरबती से इतने प्रसन्न थे कि वे उदयपुर में शाही महल में रहने के लिए आए और वहां उनकी पूजा की गई। तब से खाची उत्सव में एक जंगली भैंसे की बलि एक परंपरा के रूप में सामने आई है। त्रिपुरा के राजा ने केवल इन चौदह देवताओं की पूजा शुरू की थी। केवल इन चौदह देवी-देवताओं की पूजा करने का रिवाज लंबे समय से प्रचलित है, और इस क्षेत्र के लोग केवल इन्हीं चौदह देवी-देवताओं की पूजा करते हैं और किसी अन्य देवी-देवता की नहीं। इसी कारण से इस मंदिर के आस-पास अन्य कोई मंदिर नहीं है।

पिलक, मोइनमोती एवं बक्सनगर : हिंदू एवं बौद्ध स्थल



सुश्री सोमवती, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

त्रिपुरा भारत की सबसे प्राचीन रियासतों में से एक है। यह बांग्लादेश से घिरे असम के पास सात बहन राज्यों (सेवन सिस्टर) के समूह से संबंधित एक छोटा राज्य है। त्रिपुरा को दुनिया के लोग नहीं जानते हैं; यहां तक कि कई भारतीयों को राज्य के बारे में बहुत कम जानकारी है। एक बार जब मैंने किसी को बताया कि मेरा तबादला त्रिपुरा हुआ है तो उनका हैरानी एवं विस्मय से भरा उत्तर था कि 'ये कौन सा देश है'? त्रिपुरा समुद्र तल से 50 से 3,080 फुट से अधिक ऊंचाई वाले एक सुंदर पहाड़ी जगह है, हालांकि राज्य की प्रमुख आबादी मैदानों में रहती है। त्रिपुरा पहले एक रियासत था और बाद में स्वतंत्र भारत का एक केंद्र शासित प्रदेश था। 21 जनवरी, 1972 में त्रिपुरा को एक पूर्ण राज्य का दर्जा मिला था। पिलक दक्षिण त्रिपुरा जिले में



स्थित एक पुरातात्विक स्थल है। बौद्ध और हिंदू संप्रदायों से संबंधित कई चित्र और संरचनाएं वर्ष 1927 से यहां खोजी गई हैं। यहां पाए जाने वाले पुरावशेष 8 से 12 वीं शताब्दी के हैं। पिलक साइट की सैंडस्टोन मूर्तियां, जो 9 वीं से 13 वीं शताब्दी के हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म की एक विषम संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती हैं, त्रिपुरा सरकार के संग्रहालय में प्रदर्शित हैं।

ऐतिहासिक बंगाल में पुरातात्विक स्थल समतान साम्राज्य का एक हिस्सा हुआ करता था। यह पुरातात्विक स्थलों की एक श्रृंखला का हिस्सा है जिसमें बांग्लादेश में मैनमाटी और सोमपुरा महाविहार शामिल हैं। हिंदू और बौद्ध मूर्तियां, स्थल पर पाए जाने वाले टेराकोटा

पट्टिकाएं और मुहरों की सबसे पुरानी तिथियां 8 वीं और 9 वीं शताब्दी के बीच की हैं। इस स्थल पर जिन कलाकृतियों का पता चला है वे बंगाल के पाल और गुप्तकालीन मूर्तिकला और स्थापत्य की विशेषताएं हैं अराकान, म्यांमार की शैली (जिसे पहले बर्मा के नाम से जाना जाता था) और स्वदेशी विशेषताएं भी ध्यान देने योग्य है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एसआई) ने 1960 के दशक की शुरुआत में उस स्थान पर खुदाई की थी जब ईंटों से बने स्तूप पाए गए थे। एसआई द्वारा हालिया जांच जोलीबरी और अन्य टीलों पर की गई थी जहां बुद्ध की मूर्तियाँ और महायान बौद्ध धर्म की मूर्तियाँ पता नहीं थीं। एसआई ने 1999 के बाद से साइट को संभाल लिया है और इसके रखरखाव के लिए जिम्मेदार है। तिब्बत, दक्षिण पूर्व एशिया और जापान के बौद्ध पर्यटक अक्सर यहां आते हैं। महायान बौद्ध धर्म के दलाई लामा ने 2007 में (थेरवाद, हीनयान संप्रदाय) के स्थल का दौरा किया।



पिलक पुरातात्विक स्थल, हिंदू और बौद्ध धर्म दोनों का शांतिपूर्ण रूप से सह-अस्तित्व का प्रतिनिधित्व करता है। हिंदू धर्म की कलाकृतियां हिंदू देवताओं शिव, महिषासुर मर्दिनी, सूर्या और वैष्णवी की मूर्तियों और पट्टिकाओं के रूप में हैं। बड़ी संख्या में पुरावशेष हीनयान, महायान, वज्रयान बौद्ध धर्म से संबंधित हैं। यह स्थल बड़ी संख्या में टेराकोटा पट्टिकाओं और मूर्तियों से घिरा हुआ है।

अवलोकितेश्वर और नरसिम्हा की बहुत बड़ी पत्थर की मूर्तियों का स्थल पर पता लगाया गया है। बौद्ध पुरावशेष पिलक में पाए गए



उत्कीर्ण टेराकोटा सील बहुत छोटे आकार के बौद्ध स्तूपों को दर्शाते हैं। त्रिपुरा में, यह मुहर है जिसकी पूजा की जाती है न कि स्तूप की। एक शंकु के आकार की पत्थर की पट्टियाँ हैं जिसमें 8 वीं शताब्दी में एक ईमानदार मुद्रा में बुद्ध की छवि है। छवि के एक हिस्से में केवल दाहिने हाथ को देखा जाता है जबकि बायाँ हाथ एक बनियान की सीमा को पकड़े हुए है। एक उशनिशा (एक त्रि-आयामी अंडाकार रूप) सिर के शीर्ष को सुशोभित करता है जिसमें "घने-घुंघराले बाल" शैली होती है, और स्लैब के बाएं हिस्से पर एक बहुत छोटा स्तूप भी उकेरा जाता है। साइट पर मिली दो भुजाओं वाली अवलोकितेश्वर की एक मूर्ति अब त्रिपुरा सरकार संग्रहालय में प्रदर्शित की गई है। यहाँ पर मिली 8 वीं -9 वीं शताब्दी की एक मूर्ति 'देवी मरीचि' की है, जो महायान और वज्रयान बौद्धों द्वारा पूजित है। हालाँकि, यह अब हिन्दु मंदिर वासुदेव-बडी में एक प्रतिष्ठित मूर्ति है। एक खड़ी मुद्रा में मूर्ति को "प्रतियालिडा" कहा जाता है और एक साधारण प्लिंथ पर रखा जाता है, और इसे अच्छी तरह से संरक्षित किया जाता है। मूर्ति पर उकेरी गई विशेषताओं में तीन चेहरे और छह भुजाएँ हैं; तीन दाहिने हाथ "सारा, वज्र, और परशु" का चित्रण करते हैं और तीनों बाएं हाथ में "धानु, पर्ण-पिच्छिचि और तर्जनी मुद्रा" के अनुष्ठान प्रतीकों के चित्रण हैं। 8 वीं - 9 वीं शताब्दी के बीच की स्थल से मिली एक बलुआ पत्थर की मूर्ति चुंडा की है जो अब मुहारीपुर के एक मंदिर में "राजा राजेश्वरी" के रूप में प्रतिष्ठित है। छवि को एक "वाजपैरनकसना" नामक मुद्रा में 18 भुजाओं के साथ उकेरा गया है जिसे पद्मपीठ (कमल के आसन) पर स्थापित किया हुआ है। वज्रात्सव और घनतापनी का धर्मचक्र प्रतीक इसे दो नियमित हाथों को सजाता है। इस स्लैब के शीर्ष भाग पर बनी मूर्तियों में पाँच ध्यानी बुद्ध भी शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक के सिर के चारों ओर प्रकाश का वलय है। सुंदरी टिल्ला से प्राप्त एक नई खोज एक स्तूप है जो 11वीं शताब्दी की बंगाल के पाल शासकों स्थापत्य कला के समान है।

हिंदू धर्म की पुरातन सामग्री

पिलक में पाई गई पकी हुई मिट्टी में बनी हिंदू धर्म से संबंधित टेराकोटा की छवि 'त्रिमूर्ति' की है। सागरडेबा टीले से मिली दूसरी छवि 'सूर्य देव' की है, जो सात घोड़ों द्वारा संचालित एक रथ पर सवार है, 7 वीं -9 वीं शताब्दी के बीच की है, जिसे मुरीपुर में राजेश्वरी आश्रम में एक मंदिर में सजाया गया है।

मोइनमोती और बक्सनगर

त्रिपुरा राज्य में बौद्ध धर्म का प्राचीन काल से ही व्यापक प्रभाव रहा है। मोइनमोती (बंगाली: ময়নামতি) जो कभी बंगाल के प्राचीन त्रिपुरा का हिस्सा था, वर्तमान में बांग्लादेश के कोमिला जिले में स्थित है। यहां 50 से अधिक प्राचीन बौद्ध विहार हैं। ये बौद्ध विहार

8वीं और 12वीं सदी के हैं। यह कई लोकप्रिय बौद्ध भिक्षुओं का घर था। मोइनमोती, कोमिला शहर से लगभग 8 मील की दूरी पर स्थित है और राष्ट्रीय राजमार्ग 1 के माध्यम से ढाका शहर से 114 किलोमीटर दूर है। साथ ही इसके बगल में एक बौद्ध मंदिर भी है।

मोइनमोती में बौद्ध स्थलों का केंद्र बिंदु शालबन विहार है। शालबन विहार में 115 सेल हैं जो प्रत्येक भिक्षु के लिए एक अलग अध्ययन और प्रार्थना स्थल था। बौद्ध भिक्षु विभिन्न क्षेत्रों से यहां पढ़ने और सीखने के लिए आते थे। इतिहास के करीब आने के लिए यह वास्तव में एक शानदार जगह है। शालबन विहार के अलावा यहाँ एक अन्य बौद्ध स्थल कुटीला मुरा है। यह कोमिला छावनी के अंदर शालबन विहार से लगभग 5 कि.मी. उत्तर में एक चपटी पहाड़ी पर स्थित एक सुरम्य बौद्ध प्रतिष्ठान है। यहां बौद्ध "ट्रिनिटी" या तीन रत्नों, यानी बुद्ध, धर्म और संघ का प्रतिनिधित्व करने वाले तीन स्तूप हैं। यहां अन्य बौद्ध स्थल में चारपात्र मुरा है जो कुटीला मुरा स्तूपों से लगभग 2.5 किमी उत्तर-पश्चिम में स्थित एक छोटा छोटा आयताकार मंदिर है।

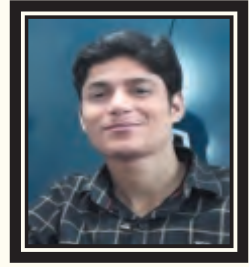
शावियन विहार के बगल में स्थित मोइनमोती साइट संग्रहालय में इन स्थलों पर मिली कलाकृतियों अच्छा संग्रह है। संग्रहालय में तांबे की प्लेटों, सोने और चांदी के सिक्कों और 86 कांस्य वस्तुओं का एक समृद्ध और विविध संग्रह है। 150 से अधिक कांस्य प्रतिमाएं ज्यादातर मठवासी सेल, कांस्य स्तूपों, पत्थर की मूर्तियों और सैकड़ों टेराकोटा पट्टिकाओं से बरामद की गई हैं।

त्रिपुरा के बक्सनगर का 8वीं शताब्दी का बौद्ध स्तूप 1949 तक 500 से अधिक वर्षों तक हिंदू राजाओं द्वारा शासित तत्कालीन रियासत टिप्परा पर बौद्ध धर्म के मजबूत प्रभाव के साक्ष्य के रूप में खड़ा है। बक्सनगर में विशाल बौद्ध स्तूप, चैत्यगृह, एक मठ और अन्य संबंधित जली हुई ईंट संरचनाओं की खोज ने प्राचीन त्रिपुरा की कला, वास्तुकला और धार्मिक पहलुओं पर रोशनी डाला है जो पहले अज्ञात था।

अब किसी को भी नज़र आती नहीं कोई दरार,
घर की हर दीवार पर चिपके हैं इतने इश्तहार।
‘दुष्यंत कुमार’



दीपा कर्माकर : ओलंपिक तक की उड़ान



श्री ऋषभ राज, एमटीएस

जिम्नास्टिक्स शब्द सुनते ही एक तरफ तो इस नाम से एक 'खेल' होने का प्रमाण मिलता है जिसमें कलात्मकता की आवश्यकता होती है तो दूसरी ओर भारत में जन्मे एक ऐसे खिलाड़ी की, जिसने इस खेल के माध्यम से भारत देश को विश्व-स्तर पर पहचान दिलाने में एक अमिट भूमिका निभाई है। बात पहले कर लेते हैं जिम्नास्ट की, इसे कसरती खेल कहें या व्यायाम विद्या, इस खेल में संतुलन, शक्ति, लचीलापन और नियंत्रण आदि की आवश्यकता होती है। जिम्नास्टिक्स सभी खेलों के लिए आधार खेल है। इस खेल में पुरुष एवं महिलाएं दोनों भाग लेते हैं। इस खेल को सर्वप्रथम एथेंस में 1896 के ओलंपिक खेल में शामिल किया गया और तब से अब तक यह खेल ओलंपिक का हिस्सा रहा है। परंतु उस समय सिर्फ पुरुषों को ही इस खेल में शामिल किया जाता था। लेकिन एम्स्टर्डम 1928 के खेलों में महिलाओं की स्पर्धाओं को सर्वप्रथम शामिल किया गया। पुरुष जिम्नास्ट 6 पदक के लिए स्पर्धा करते हैं: फ्लोर, पोमेल हॉर्स, रिंग्स, वॉल्ट, पैगल लाबार्स और क्षैतिज बार। जबकि महिला खिलाड़ी चार पदक कार्यक्रम में हिस्सा लेती हैं: वॉल्ट, बीम, अनइवेन बार एवं फ्लोर। पुरुष और महिलाएं व्यक्तिगत के साथ-साथ टीम इवेंट में भी प्रतिस्पर्धा करते हैं।

अब बात करते हैं गोल्डन गर्ल ऑफ त्रिपुरा : दीपा कर्माकर की, जिसने इस खेल को भारत में प्रचलित किया और साथ ही साथ देश को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने में कामयाबी पाई। इस नाम को अब किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है। दीपा कर्माकर का जन्म 9 अगस्त 1993 को भारत देश के उत्तर-पूर्वी राज्यों में से एक त्रिपुरा राज्य की राजधानी अगरतला में हुआ। दीपा कर्माकर का जन्म एक छोटे व गरीब परिवार में हुआ था। उनके परिवार में माता-पिता एवं एक बड़ी बहन है। दीपा के पिता का नाम दुलाल कर्माकर और माता का नाम गौरी कर्माकर है। उनकी बड़ी बहन का नाम पूजा साहा है। दीपा ने स्कूली शिक्षा अगरतला के ही अभयनगर नजरूल स्मृति समिति विद्यालय से प्राप्त की। दीपा के पिता दुलाल कर्माकर भी राष्ट्रीय वेटलिफ्टिंग (भारोत्तोलन) चैंपियन रहे हैं। अगर बात दीपा के जिम्नास्टिक में रुचि की है तो इसमें उनके माता-पिता का हाथ है, जो चाहते थे कि दीपा जिम्नास्टिक में करियर बनाएं और इसका एक कारण यह भी था कि दीपा के बचपन के दिनों में उनके पिता स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (SAI) में वेटलिफ्टिंग प्रशिक्षक थे और दीपा अपने पिता के साथ स्कूटर पर बैठकर रोज जिम जाया करती थी। अपने माता-

पिता की इच्छा का सम्मान करने के लिए ही दीपा ने छह वर्ष की उम्र में ही जिम्नास्टिक प्रशिक्षण शुरू कर दिया था। शुरुआती दिनों में दीपा की कोच सोमा नंदी थी और वह प्रशिक्षण के दौरान वर्ष 2002 में उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय खेलों में बैलेंसिंग बीम इवेंट में शामिल हुईं और 9 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने स्वर्ण पदक हासिल किया। इसके बाद उन्होंने जिम्नास्टिक को गंभीरता से लेते हुए अपना संपूर्ण ध्यान इसी पर केंद्रित किया। किंतु दीपा की राहें आसान नहीं थीं। उन्हें उस समय कठिन दौर से गुजरना पड़ा जब उन्हें पता चला कि उनका पैर चपटा (फ्लैट फुट) था यानी कि उनके पैर के तलवे में कुदरती गोलाई नहीं थी। किसी भी



जिम्नास्ट के लिए फ्लैट फुट अच्छा नहीं माना जाता है, लेकिन दीपा ने ठान लिया था कि उन्हें जिम्नास्टिक्स में ही करियर बनाना है। फ्लैट फुट की समस्या को दूर करने के लिए उनको कोच सोमा नंदी ने अपने पति विश्वेश्वर नंदी से मिलवाया जो खुद भी एक कोच हैं। तब से लेकर अभी

तक दीपा विश्वेश्वर नंदी से ही कोचिंग ले रही है। विश्वेश्वर नंदी से मिलकर दीपा ने अपने पैर को कर्व देने के लिए कड़ी मेहनत की और आखिरकार जब यह समस्या दूर हुई तो दीपा ने अपने प्रदर्शन में निखार लाने के लिए और भी कड़ी मेहनत की।

भारत में जिम्नास्टिक्स कुछ खास लोकप्रिय खेल नहीं है। इसलिए उन्हें प्रशिक्षण के लिए अच्छे उपकरण उपलब्ध नहीं हो पाते थे। गुरु विश्वेश्वर नंदी ने दीपा के लिए स्कूटर के पार्ट्स से स्प्रिंगबोर्ड तैयार किए, कारों की पुरानी सीट से गद्दे तैयार किए गए। दीपा सुबह 9 बजे से 12 बजे तक और शाम को 5 बजे से 8:30 बजे तक प्रशिक्षण करती थी जो आज भी निरंतर जारी है। परिणामस्वरूप वर्ष 2007 में दीपा ने जलपाईगुड़ी में जूनियर नेशनल्स में जीत हासिल की, जिससे उनका मनोबल बढ़ा। वर्ष 2010 में जब दिल्ली राष्ट्रमंडल खेल में आशीष कुमार ने जिम्नास्टिक में पदक प्राप्त किया जो राष्ट्रमंडल खेलों में भारत में जिम्नास्टिक का पहला पदक था, तो दीपा को इससे बहुत प्रेरणा मिली। दीपा ने संकल्प लिया कि चार वर्ष बाद ग्लास्गो राष्ट्रमंडल खेलों में वह भी पदक जीतेंगी। दीपा अपने संकल्प पर खरी उतरीं और 2014 ग्लास्गो राष्ट्रमंडल खेल में स्वर्ण पदक जीतकर पूरे विश्व में देश का परचम लहराया। दीपा प्रोडुनोवा वॉल्ट में सफल होने वाली 5 महिला जिम्नास्ट में से एक हैं। प्रोडुनोवा वॉल्ट महिला जिम्नास्टिक्स में सबसे मुश्किल वॉल्ट माना जाता है।

वर्ष 2014 में ही हिरोशिमा में आयोजित एशियन जिम्नास्टिक्स चैंपियनशिप में दीपा ने कांस्य पदक जीता और वर्ष 2015 की विश्व कलात्मक जिम्नास्टिक्स चैंपियनशिप में 5वां स्थान हासिल किया। ऐसा करने वाली दीपा पहली भारतीय महिला जिम्नास्ट है। अपने दृढ़ संकल्पों की बदौलत अप्रैल 2016 में दीपा कर्माकर ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने वाली पहली भारतीय महिला जिम्नास्ट बनी। इसके साथ ही वे 1964 के टोक्यो ओलंपिक खेलों के बाद ओलंपिक में पहुंचने वाली पहली भारतीय जिम्नास्ट भी बनीं। 2016 रियो ओलंपिक में 15.066 अंक प्राप्त करते हुए वॉल्ट स्पर्धा में चौथे स्थान पर रहीं। रियो ओलंपिक के बाद 2017 में एशियन कलात्मक जिम्नास्टिक्स चैंपियनशिप की तैयारी के दौरान दीपा के घुटने में चोट आ गई इसके बाद उन्हें सर्जरी करवानी पड़ी। दीपा की वापसी में उम्मीद से ज्यादा समय लगने के कारण वह गोल्डकोस्ट राष्ट्रमंडल खेलों में भाग नहीं ले सकीं। रियो के दो वर्ष बाद दीपा ने तुर्की के मर्सिन में एफ.आई.जी. कलात्मक जिम्नास्टिक्स विश्व चैलेंज कप की वॉल्ट प्रतिस्पर्धा में 14.150 के स्कोर के साथ स्वर्ण पदक जीतकर धमाकेदार वापसी की। दीपा ने चोट से उभरने के बाद नवंबर 2018 में जर्मनी के कोटबस में आयोजित कलात्मक जिम्नास्टिक्स के विश्वकप में अपनी वॉल्ट स्पर्धा में कांस्य पदक हासिल किया। भारत को वर्ष 2020 के टोक्यो ओलंपिक जो जुलाई 2021 में आयोजित होना है, दीपा से बहुत उम्मीदे हैं। एक छोटे से राज्य त्रिपुरा से दीपा कर्माकर का ओलंपिक तक का सफर बेहद सराहनीय है। आगे देश के सभी नागरिकों को ओलंपिक 2021 का इंतजार रहेगा कि दीपा कर्माकर देश को स्वर्ण पदक दिलाएं।

पुरस्कार श्रेणी:- वर्ष 2015 में अर्जुन अवार्ड, रियो ओलंपिक में राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार और उनकी समग्र उपलब्धियों के लिए पद्मश्री पुरस्कार।

प्रशंसक क्षण:- इसी वर्ष 2020 दुर्गा-पूजा के अवसर पर जब सप्तमी के दिन मैं अपने कार्यालय के सहकर्मी मित्रों के साथ पंडालों के दर्शन कर रहा था तो दीपा कर्माकर का आवास (अगरतला) देखा जो बेहद खूबसूरती से सजाया हुआ था। हम लोगों ने यह सोचकर कि शायद वह भी उपस्थित हों अंदर गए और सौभाग्यवश वह वहां थीं और बेहद शालीनता के साथ उन्होंने हमसे बात की और सेल्फी भी ली। उस दिन हम लोग मां दुर्गा के दर्शन के साथ-साथ उनसे मिलकर भी बेहद खुश होकर घर आए।



नोबेल विजेता : रवीन्द्रनाथ टैगोर का योगदान

(विशेषतः विज्ञान के क्षेत्र में)



श्री बिल्टू साहा, स.ले.प.अ.

“मैं एक वैज्ञानिक नहीं हूँ, परंतु बाल्य अवस्था से ही विज्ञान रस में आनंद प्राप्त करने की मेरी असीम इच्छा रही है।” - रवीन्द्रनाथ टैगोर (1861-1941)

रवीन्द्रनाथ टैगोर भारत के एक महान कवि होने के साथ-साथ आधुनिक भारत के निर्माता भी थे। 19वीं सदी में बंगाल के नवजागरण ने पूरे देश में पश्चिमी विज्ञान चेतना का संचार किया था। इस समयकाल में राजा राममोहन रॉय, अक्षय कुमार दत्ता, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जैसे समाजविदों ने अपने-अपने तरीकों से समाज में विज्ञान एवं आधुनिक विचारधाराओं का विस्तारीकरण किया था। रवीन्द्रनाथ जी ने भी अपने वैज्ञानिक दृष्टिकोण से एक आधुनिक एवं अंधविश्वास मुक्त समाज की स्थापना करने में असाधारण भूमिका निभाई थी।

टैगोर के साहित्य में काव्यिक, दार्शनिक एवं वैज्ञानिक चिंतन का एक अनोखा मिलाप देखा जा सकता है। खगोलशास्त्र, भौतिक विज्ञान एवं जीव विज्ञान के प्रति उनकी विशेष रुचि थी। उनके समकालीन वैज्ञानिक जैसे आचार्य जगदीश चन्द्र बोस, आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र रॉय, डॉ. सी. वी. रमन, मेघनाथ साहा, डॉ. सत्येंद्रनाथ बोस, मो. कुरदोत-ए-खुदा, पी. सी. महालनोबिस आदि के साथ उनके नजदीकी संबंध थे। इनके अलावा विख्यात यूरोपियन वैज्ञानिक बटरान्ड रसल, जर्मन भौतिक वैज्ञानिकों जैसे- ऑर्नल्ड जोहानस, डब्ल्यू. के. हेसनबर्ग एवं अल्बर्ट आइंस्टीन, रसियन वैज्ञानिक इल्या प्रिगोगिन के साथ भी उनकी व्यक्तिगत तौर पर वैज्ञानिक विषयों में चर्चाएं होती रहती थीं। टैगोर के दार्शनिक विचार से डब्ल्यू. के. हेसनबर्ग बहुत प्रभावित थे। आइंस्टीन प्यार से टैगोर को “रब्बी” (अर्थात शिक्षक) बुलाते थे। टैगोर और आइंस्टीन की दूसरी मुलाकात (आइंस्टीन के निजी आवास पोर्ट्सडैम, बर्लिन में, 1930 ई.) को लेकर विख्यात पत्रकार दिमित्री मरीनोफ ने ‘न्यूयॉर्क टाइम्स’ पत्रिका में यह लिखा था कि “उन्हें साथ देखना काफी रोचक था। टैगोर कवि होने के साथ चिंतक थे और आइंस्टीन चिंतक होने के साथ कवि भी थे। प्रेक्षक के लिए, उन्हें साथ देखना दो ग्रहों को साथ बातें करते देखने जैसा था।”

गुरुदेव की वैज्ञानिक विचारधाराओं का प्रतिबिम्ब उनकी कई रचनाओं में उभरकर सामने आता है। विज्ञान चिंतन के ऊपर उनकी सर्वप्रथम रचना थी “ग्रहोगन जीबेर अबासभूमि” (ग्रह जीवित प्राणियों का घर है।) जो उनके परिवार की “तत्त्वबोधिनी पत्रिका” में 1874 ई. को प्रकाशित हुई। बाद में गुरुदेव ने पांच पत्रिकाओं का सम्पादन किया, जिनके नाम हैं- साधना, भारती, बंगदर्शन, भंडार एवं तत्त्वबोधिनी। इन पत्रिकाओं में वैज्ञानिक विषयों पर निरंतर चर्चाएं होती रहती थीं। गुरुदेव ने 1901 ई. में आचार्य जगदीश चन्द्र बोस के वैज्ञानिक अनुसंधान पर बंगदर्शन पत्रिका में “आचार्य जगदीशेर जयबारता” शीर्षक लेख लिखा। गुरुदेव के प्रसिद्ध उपन्यास “शेषेर कबिता” के एक संलाप में आइंस्टीन की “थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी” के सिद्धांतों को बहुत सहजता से प्रस्तुत किया गया है, जो इस प्रकार है- “समय सभी के लिए असमान है। परंपरागत घड़ी अंतरिक्ष के सापेक्ष एक समय देती है परंतु ब्रह्मांड को नियंत्रित करने वाली व्यक्तिगत घड़ी अलग समय देती है। यही आइंस्टीन के विचार हैं।”

गुरुदेव ने अपनी रचना “पंचडायरी” (1895) में उल्लेख किया है कि “यदि किसी वस्तु की गति का स्रोत ऊर्जा है तो वह वस्तु तब तक गतिमान रहेगी जबतक संपूर्ण ऊर्जा का क्षय नहीं होगा। संपूर्ण ऊर्जा का क्षय होने पर वह वस्तु स्थिर हो जाएगी।” यह धारणा थर्मोडायनमिक्स की यथार्थता को व्यक्त करती है। गुरुदेव चार्ल्स रॉबर्ट डार्विन के “थ्योरी ऑफ इवोल्यूशन” से भी बहुत प्रभावित हुए थे। टैगोर कॉपरनिकस के “हेलोसेंट्रिक यूनीवर्स” मतवाद के पूर्ण समर्थक थे।

प्रसिद्ध विज्ञानी डॉ. सत्येन्द्र नाथ बोस के वैज्ञानिक कार्यक्रम से प्रेरित होकर टैगोर ने 1937 में प्राथमिक विज्ञान के विचारधाराओं पर आधारित “विश्व परिचय” शीर्षक पुस्तक की रचना की। यह पूर्ण रूप से विज्ञान विषयक पुस्तक है जो कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने डॉ. सत्येन्द्र नाथ बोस को समर्पित किया था। इस पुस्तक के 5 अध्याय में कवि ने परमाणुलोक, नक्षत्रलोक, सूर्यलोक, ग्रहलोक एवं भू-लोक पर बुनियादी तथ्यों का सरलतम विवरण दिया है। अंत में इस पुस्तक के निष्कर्ष अध्याय में गुरुदेव ने कहा है, “कोषाणु के दो प्रधान क्रिया होते हैं, पहला बाहर से रसद लेकर जीना और बढ़ना और दूसरा अपने अनुरूप जीवन का उत्पादन करके वंश विस्तार करना।” टैगोर देश के वैज्ञानिक गवेषनाओं के एक सक्रिय संरक्षक थे। विज्ञानी आचार्य जगदीश चन्द्र बोस टैगोर से काफी प्रभावित थे। गुरुदेव भी आचार्य को समान आदर देते थे। कवि ने आचार्य को 1917 ई. में “बोस इंस्टीट्यूट” के निर्माण में आर्थिक सहायता की थी। उस समय का “बोस इंस्टीट्यूट” आज “बासु विज्ञान मंदिर” के नाम से विख्यात है जो वैज्ञानिक गवेषनाओं की केंद्रभूमि है। इसके अलावा टैगोर ने त्रिपुरा के राजा की आर्थिक मदद से आचार्य को विदेश में अपने गवेषनाओं को जारी रखने में सहयोग किया था। टैगोर से प्रेरित होकर डॉ. प्रशांत चन्द्र महालनोबिस ने 1931 ई. में

राशि विज्ञान के ऊपर अनुसंधान के लिए “इंडियन स्टैटिस्टिकल इंस्टीट्यूट” की स्थापना की थी।

टैगोर द्वारा निर्मित शान्ति निकेतन (निर्माणकाल- 1901, भूतपूर्व नाम- ब्रह्मचर्य विद्यालय) में सर्वप्रथम व्यवहारिक विज्ञान को प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल किया था। कवि ने अपने सुपुत्र श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर को कृषि विज्ञान में शिक्षा ग्रहण करने के लिए “इलिनोयस यूनीवर्सिटी” (अमेरिका) भेजा था। बाद में रवीन्द्रनाथ ने उनके शान्ति निकेतन विद्यालय में शिक्षक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। कवि ने बहुत सारे वैज्ञानिक शब्दों का अंग्रेजी से बांग्ला में अनुवाद किया था। टैगोर का मानना था कि विज्ञान को सामाजिक सेवाओं में नियोजित किया जाए इसलिए 1922 ई. में रवीन्द्रनाथ द्वारा श्री निकेतन में “एंटी-मैलेरियल सोसाइटी” की स्थापना की गई जहां देश के प्रख्यात व्यक्तियों के साथ-साथ विदेश से भी बहुत प्रतिनिधियों ने भी अपना योगदान दिया था। प्राणी समाज और वनस्पति के अन्तर्संबंधों का आदर करते हुए रवीन्द्रनाथ जी ने शान्ति निकेतन में “तपोवन” की परिकल्पना की थी ताकि विद्यार्थीगण प्रकृति में बसे विज्ञान (नेचर साइंस) से परिचित हो सकें। उनकी प्रबल इच्छा से ग्रामीण क्षेत्रों में आधुनिक कृषि क्रिया का प्रसार हुआ था।

यह सुनने में अद्भुत लगता है कि रवीन्द्रनाथ टैगोर, जिन्हें कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं थी, फिर भी विज्ञान में उनकी जानकारी और रुचि दोनों ही असमान्य थीं। विश्व भर में उनके समकालीन तमाम वैज्ञानिक उनकी वैज्ञानिक भावनाओं के प्रशंसक थे। सूत्रों के अनुसार, “दि टैगोर सेंटर फॉर नेचुरल साइंस एंड फिलोसॉफी” ने टैगोर के लिखित “विश्व परिचय” पुस्तक का भाषान्तरण करने का उत्तरदायित्व ग्रहण किया है। विश्व को उनके विज्ञान चेतना से परिचित करवाने का यह असाधारण प्रयास है। सच में ही एक बार आचार्य जगदीश चन्द्र बोस ने एक पत्र में रवीन्द्रनाथ टैगोर को लिखा था - “अगर आप कवि न होते तो एक महान वैज्ञानिक होते।”

प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती।

‘सुभाषचन्द्र बोस’



त्रिपुरा में रबर प्लांटेशन



श्री अमर आनंद मिंज, क. हिंदी अनुवादक

त्रिपुरा, भारत का दूसरा सबसे बड़ा प्राकृतिक रबर (वैज्ञानिक नाम- हिबिया ब्रासीलिनसिस) उत्पादक राज्य है। चूंकि राज्य में अधिकांश प्राकृतिक रबर का वृक्षारोपण वर्षा पर निर्भर है इसलिए यह कहा जा सकता है कि मानसून में उतार-चढ़ाव से रबर प्लांटेशन के विकास के लिए गंभीर खतरा है। जलवायु में इस तरह के बदलाव व उतार-चढ़ाव का प्रभाव सतह और भूजल स्तर, वायु की गुणवत्ता, तापमान, वर्षा आदि पर होता है।

त्रिपुरा की कृषि अर्थव्यवस्था 1990 के दशक के बाद से चावल आधारित फसल उत्पादन से प्राकृतिक रबर आधारित वाणिज्यिक फसल अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर हो चुकी है। त्रिपुरा वन विकास और वृक्षारोपण निगम लिमिटेड (टीएफडीपीसीएल) ने त्रिपुरा राज्य में विस्थापित आदिवासी कृषकों के स्थायी पुनर्वास के लिए 7087 हेक्टेयर क्षेत्रफल पर वाणिज्यिक रबर बागानों की खेती को अपनाया। निगम प्रत्येक परिवार को लेटेक्स (क्षीर) निष्कर्षण के लिए रबर के बागानों की एक हेक्टेयर क्षेत्र प्रदान करके रबर की खेती के माध्यम से विस्थापित आदिवासी कृषकों की समस्याओं के निपटान के लिए सफल मॉडल



विकसित करने में अग्रणी रहा। टीएफडीपीसीएल ने विभिन्न योजनाओं एवं परियोजनाओं के तहत 1133 से अधिक अनुसूचित जनजाति के परिवारों और 70 अनुसूचित जाति के परिवारों के पुनर्वास हेतु कदम उठाया और लगभग 3585 लोगों को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार दिया।

रबर प्लांटेशन से पर्यावरण अछूता नहीं है। रबर के वृक्ष से लेटेक्स (क्षीर) की प्राप्ति होती है। लेटेक्स संग्रहण और प्रसंस्करण की प्रक्रिया में उत्पन्न अपशिष्ट जल और अपशिष्ट पदार्थों की बड़ी मात्रा ज्यादातर प्रसंस्करण केंद्र से वातावरण में सीधे प्रवाहित कर दी जाती है। प्रसंस्करण से निकलने वाले अपशिष्ट जल का कार्बनिक घटक

सूक्ष्म जीव द्वारा विघटित हो जाता है जो सतह की मिट्टी की उर्वरता को कम कर देती है।

अपशिष्ट जल (जिसमें अमोनिया, सल्फेट और अन्य एसिड शामिल हैं) के अलावा प्राकृतिक रबर प्रसंस्करण उद्योग भी प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट लिपिड, कैरोटिनाइट और लवण की थोड़ी मात्रा के साथ अनकोलेटेड लेटेक्स और सीरम उत्पन्न करता है। प्राकृतिक रबर के प्रसंस्करण में चिमनीघर से उत्सर्जित ग्रीन हाउस गैसों जैसे- CO₂, CH₄ आदि पर्यावरण प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग को बढ़ा सकते हैं जो गंभीर चिंता का विषय है। वर्तमान में त्रिपुरा राज्य में अपशिष्ट जल और अपशिष्ट पदार्थों के निपटान की कोई ठोस योजना नहीं है। राज्य में कुछ संगठित उद्योगों को छोड़कर अन्य इसे सीधे वातावरण में निर्वहन कर रहे हैं।

एक अध्ययन से पता चला है कि रबर के वृक्ष भूजल स्रोतों की सतह को कम कर रहे हैं। इसके अलावा ये भूजल के त्वरित अवशोषण के लिए भी जिम्मेदार हैं और वर्षा-वन वनस्पतियों की तुलना में इसके पौधों के बीच अधिक दूरी के कारण पृथ्वी की सतह से अधिक मात्रा में पानी का अवशोषण करते हैं। परिणामस्वरूप भूजल स्तर में कमी देखी जा रही है। रबर वृक्षारोपण से भले ही भूजल स्तर में कमी नगण्य हो सकती है परंतु मिट्टी में पोषक तत्वों की कमी अत्यंत चिंता का विषय है।

आमतौर पर पहले के जंगलों को साफ करके रबर प्लांटेशन विकसित किया जाता है। चूंकि लेटेक्स संग्रहण नियमित रूप से किया जाता है इस कारणवश अन्य पौधों की विविधता में गिरावट आ रही है। रबर प्लांटेशन पक्षियों और अन्य वन्यजीवों के लिए किसी भी प्रकार के भोजन का स्रोत उपलब्ध नहीं कराता है। अतः उन्हें मजबूरन कृषि भूमि या बागानों में भोजन हेतु विचरण करना पड़ता है जिससे मानव और वन्यजीवों में टकराव की आशंका बढ़ जाती है।

रबर के वृक्ष की जड़ें जमीन में ज्यादा अंदर तक नहीं जाती हैं। बरसात के मौसम में तेज हवा आसानी से वृक्ष को मोड़ सकती है और ऊपर की मिट्टी सहित इसे उखाड़ सकती है जिससे मिट्टी के कटाव में तेजी आ सकती है। प्राकृतिक रबर जो एक पर्णपाती वृक्ष है उसके पत्ते आमतौर पर दिसंबर से फरवरी माह के दौरान गिर जाते हैं। ये धीमी गति से नष्ट होने वाली मोटी पत्तियां जमीन पर पर्याप्त नमी नहीं बनाए रख सकती हैं और बारिश के मौसम में मिट्टी के छिद्रों को बंद कर अवरोध उत्पन्न करती हैं जिससे मिट्टी में मौजूद सूक्ष्मजीवों की जीवन-दर कम होने लगती है।

त्रिपुरा की अर्थव्यवस्था में रबर प्लांटेशन की अहम भूमिका रही है। प्राकृतिक रबर के सापेक्ष लाभप्रदता ने अपनी ओर भूमि, श्रम और पूंजी को आकर्षित किया है। केंद्र और राज्य सरकार त्रिपुरा में इसे बढ़ावा दे रही है जिसमें भेदभाव पूर्ण भूमि उपयोग नीति, प्राकृतिक रबर के लिए फसल सब्सिडी प्रणाली और इसे छोड़कर अन्य फसलों के साथ सौतेला व्यवहार या सिर्फ आंशिक रूप से वित्तीय सहायता और चावल एवं अन्य पारंपरिक फसलों के साथ पक्षपात होता प्रतीत हो रहा है। त्रिपुरा में अगली सबसे अच्छी वैकल्पिक फसलों की तुलना

में प्राकृतिक रबर की आपूर्ती कीमत सब्सिडी के साथ कम रखी गई है। राज्य सरकार के साथ रबरबोर्ड ने 1990 के दशक की शुरुआत से प्राकृतिक रबर के लिए विस्तार योजनाएं बनानी शुरू कर दी थी। घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में मोटरवाहन के टायर के लिए इसकी शुरुआत हुई। प्राकृतिक रबर की कीमत अंतर्राष्ट्रीय बाजार में नियमित रूप से बढ़ती-घटती रहती है। अतः इस पर पूरी तरह निर्भर रहना जोखिम भरा है। एक जोखिम यह भी है कि चावल उत्पादन योग्य भूमि को प्राकृतिक रबर के बागानों में परिवर्तित



किया जा सकता है परंतु प्राकृतिक रबर के बागानों में पुनः चावल की खेती नहीं की जा सकती। राज्य में रोजगार आजीविका और खाद्य सुरक्षा के नाम पर बड़े औद्योगिक घरानों के लिए एक विशेष वाणिज्यिक फसल के पक्ष में प्रायोजित रबर वृक्षारोपण से कहीं न कहीं सामाजिक और आर्थिक रूप से कमजोर समूहों जो चावल की खेती पर निर्भर हैं उनसे पक्षपात किया जा रहा है। सरल शब्दों में कहे तो त्रिपुरा राज्य नव-उदारवादी आर्थिक शासन के तहत लोगों को खाद्य सुरक्षा और आय सुनिश्चित करने के महत्व को दर्शा रहा है।

एक ओर रबर वृक्षारोपण गरीबी एवं बेरोजगारी उन्मूलन में अहम भूमिका निभा रहा है वहीं दूसरी ओर प्रकृति को नजरअंदाज किया जा रहा है। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या यह गरीबी और बेरोजगारी का स्थायी हल है? इस पर हमें विचार करने की आवश्यकता है। अतः विकास और प्रकृति में सामंजस्य स्थापित होना अति आवश्यक है। जब भी विकास के बढ़ते कदम ने प्रकृति के साथ खिलवाड़ किया है तब प्रकृति का रौद्र रूप देखने को मिला है, चाहे वह अगस्त 2018 में केरल में आई बाढ़ हो या 2013 में उत्तराखंड त्रासदी।

“प्रकृति में गहराई से देखना शुरू करो, तुम्हें समझ आएगा कि सबकुछ कितना अच्छा है।” - आईन्सटीन



लोकनृत्य एवं पारंपरिक परिधान त्रिपुरा विशेष



श्री प्रधान चौधरी, एमटीएस

भारत एशिया महाद्वीप में बसा एक देश है। यहां कि संस्कृति, परिधान व लोक कलाएं अपने आप में अद्भुत व अद्वितीय हैं। भारत में विभिन्न प्रकार की जनजातियां अपनी विविध वेश-भूषा व नाना प्रकार की भाषाओं के लिए जानी जाती हैं जो विश्व में भारत को एक विशिष्ट पहचान दिलाती है।

भारत के पूर्वोत्तर में बसे एक प्रकृति संपन्न राज्य त्रिपुरा का इतिहास जितना पुराना है उतनी ही प्राचीन यहां की जनजातियां हैं। यहां की जनजातियों में प्रमुख रूप से भील, भूरिया, चायल, गारो, लुशाई, कूकी, मुंडा, रींग, संथाल और त्रिपुरी हैं। किसी भी राज्य को उसकी पहचान वहां की संस्कृति, लोकनृत्य व वेश-भूषा दिलाती है। ये लोकनृत्य विशेषकर त्योहारों, शादियों और विभिन्न धार्मिक अवसरों पर किए जाते हैं। आइए त्रिपुरा के कुछ लोकनृत्य को संक्षिप्त में जानते हैं।

झूम नृत्य त्रिपुरा का एक प्रमुख लोकनृत्य है जिसमें यहां की जीवनशैली, संस्कृति व परंपराओं का जीवन्त दृश्य देखने को मिलता है। यह नृत्य यहां के लोगों में एक नई उमंग भरकर उन्हें मेहनत करने के लिए प्रेरित करता है। गैलामुचामो नृत्य यहां के एक त्रिपुरी समुदाय द्वारा किया जाता है। इस नृत्य को फसलों की उपज के उपरांत नृत्य व गायन द्वारा देवताओं को अच्छी फसल हेतु धन्यवाद देने के लिए किया जाता है। यह नृत्य यहां की नर्तकियों द्वारा पारंपरिक परिधान में किया जाता है। गरिया लोकनृत्य गरिया पूजा के दौरान स्थानीय जनजातियों द्वारा किया जाता है। इस नृत्य के दौरान गाना गाकर लोक-देवताओं की पूजा की जाती है। संगराई नृत्य मुख्य रूप से यहां के मोगा समुदाय द्वारा किया जाता है। इसमें कुछ व्यक्ति अपने सर पर धार्मिक कल्पतरु (एक प्रकार का वृक्ष) लेकर घर-घर जाते हैं इसमें व्यक्तियों द्वारा गान गाकर नृत्य किया जाता है। होजागिरि नृत्य भी फसलों से जुड़ा है जो स्थानीय लोगों द्वारा अप्रैल माह में कृषि के लिए स्थान के चयन से पहले स्थानीय धन की देवी को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है। इस नृत्य में नर्तकी मिट्टी के बर्तन पर खड़ी रहती है और उसके सर पर एक बोतल रखी होती है जिसमें दीपक रोशन होता है। लेबांग बूमानी नृत्य भी अन्य लोकनृत्य की भांति फसल से सम्बंधित है। इस नृत्य में स्थानीय लोग बांस का इस्तेमाल रंगीन कीड़े-मकौड़े को पकड़ने के लिए करते हैं जिसे स्थानीय भाषा में लेबैंगस कहा जाता है। बिजू नृत्य मुख्य रूप से चकमा जनजाति

द्वारा प्रत्येक वर्ष चैत्र संक्रांति में किया जाता है अर्थात् यह नृत्य नौवर्ष के स्वागत व पुराने वर्ष को अलविदा कहने के उपलक्ष्य में किया जाता है।

यह त्रिपुरा के कुछ महत्वपूर्ण नृत्य हैं जो यहां कि संस्कृति और धार्मिक प्रवृत्ति को जीवन्त बनाए रखते हैं। इनके अलावा यहां डेलो नृत्य, वेलकम डांस, गजानन नृत्य इत्यादि का भी अपना विशिष्ट महत्व है।

जिस प्रकार त्रिपुरा का लोकनृत्य जो काफी मनोरंजक व मनोरम है उसी प्रकार यहां की स्थानीय वेश-भूषा भी मन को हर लेने वाली है। यहां की वेश-भूषा मुख्य रूप से सूती व रेशमी कपड़ों से बनी होती है। यहां सदर, खोवाई व बेलोनिया में कपड़ा उद्योग काफी प्रसिद्ध है। हाथों से बनने वाले परिधान में यहां रीहा, लुंगी, साड़ी व स्कॉर्फ प्रसिद्ध है। त्रिपुरा हैंडलूम की मुख्य विशेषता विभिन्न रंगों के साथ खड़ी व क्षैतिज धारियां हैं। यहां रंगीन कपड़ों को ज्यादा महत्व दिया जाता है। त्रिपुरी महिलाएं यहां तक की विभिन्न जन-जातियों की युवतियां भी रंगीन कपड़ों को बुनने में अग्रणी होती हैं। साधारण कपड़ों में नेपकिन, बेड कवर, जैकेट, साड़ी इत्यादि काफी लोकप्रिय है। यहां की वेश-भूषा पर विभिन्न प्रकार की डिजाइन बनी होती है जो एक कबीले या जनजाति विशेष की पहचान होती है। ज्यादातर आदिवासी अपने द्वारा बनाए कपड़े पहनना पसंद करते हैं। पुरुष पगड़ी व कपड़े का एक छोटा टुकड़ा निचले वस्त्र के रूप में पहनते हैं तथा महिलाएं निचले कपड़े के रूप में कपड़े का लंबा टुकड़ा पहनती हैं जिसे पचरा के नाम से जाना जाता है। परंतु आजकल युवक व युवतियां शर्ट व पैंट पहनना पसंद करते हैं तथा महिलाएं भी ब्लाउज पहनना पसंद करती हैं। खाकलू जनजाति के द्वारा भी अपने वस्त्र स्वयं तैयार किए जाते हैं।

बदलते स्वरूप में त्रिपुरा के लोगों का जनजीवन प्रभावित हुआ है। जहां पहले स्त्रियों के परिधान से उनकी जाति व समुदाय का पता लग जाता था लेकिन अब ऐसा नहीं रहा। अपितु वृद्ध पुरुष व महिलाएं आज भी पुराने व चित्रित परिधानों में देखे जाते हैं। यहां की महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले कपड़ों को रीसा कहा जाता है जो एक बड़े आकार का कपड़ा होता है। त्रिपुरी महिलाएं आमतौर पर चांदी की चैन, चूड़ी, पीतल के छल्ले व स्वदेशी आभूषणों को धारण करती हैं। इनकी वेश-भूषा पहाड़ी जलवायु के अनुकूल है।

संक्षेप में त्रिपुरा जितना संपन्न अपने प्राकृतिक संसाधनों में है उतना ही संपन्न यहां की लोकशैली, लोकनृत्य व वेश-भूषा है।

ब्रह्माण्ड की सारी शक्तियां पहले से हमारी हैं। वो हमी हैं जो अपनी आँखों पर हाँथ रख लेते हैं और फिर रोते हैं कि कितना अन्धकार है।

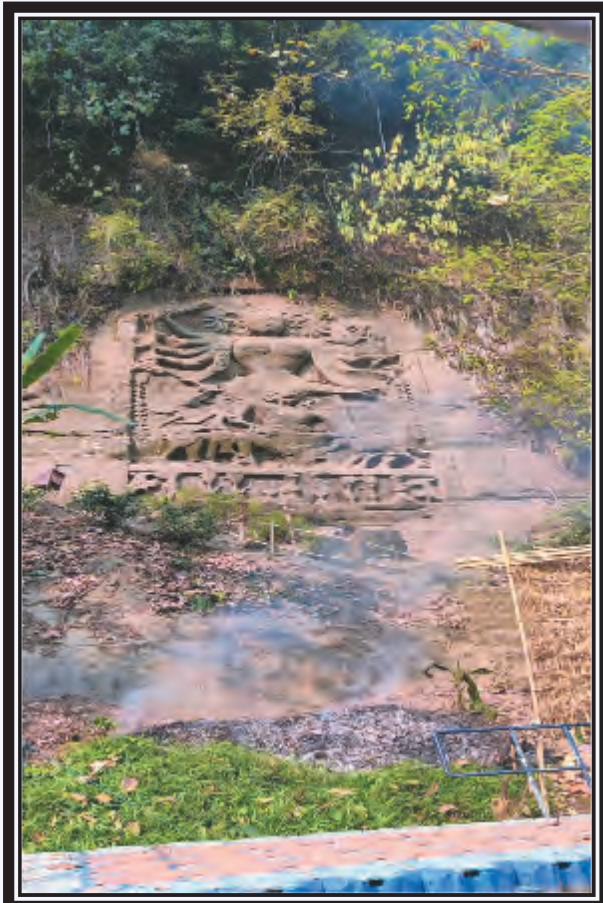


रोमांच व रहस्य से भरपूर : छबिमुरा



श्री अमित कुमार, आशुलिपिक

छबिमुरा भारत के त्रिपुरा राज्य के गोमती जिले में स्थित है जिसका शाब्दिक अर्थ 'चित्रों का पहाड़' है। यह हल्के पीले बलुआ पत्थर से बना हुआ है। छबिमुरा त्रिपुरा के अनेक रहस्यों में से एक है। यह अगरतला से 82 कि.मी. दूर अमरपुर नामक स्थान के पास स्थित है। यह गोमती नदी के किनारों पर स्थित 90° कोण पर खड़ी पहाड़ी दीवार के पैनलों में नक्काशी (उकेरी) की गई है। यहां देवी-देवताओं के अनेकों छोटे-छोटे चित्र हैं। देवी-देवताओं के चित्रों की नक्काशी के कारण इस पहाड़ी दीवार को देवतामुरा (देवताओं का पर्वत शिखर) भी कहा जाता है। कहा जाता है कि इस नक्काशी को राजा चिचिंगफा के कहने पर यहां की स्थानीय जनजातियों के द्वारा की गई थी। ये नक्काशियां 15वीं या 16वीं शताब्दी ईसा पूर्व की मानी जाती हैं। यह पहाड़ी दीवार 90° कोण पर खड़ी होने के कारण इसके सामने इंसानी कद बौना(छोटा) मालूम पड़ता है। घने जंगलों और पहाड़ी श्रृंखलाओं से घिरा होने के कारण छबिमुरा जाने का एक मात्र साधन गोमती नदी में नौका-विहार (नाव के द्वारा) का है। इसके अलावा यहां पर न तो कोई सड़क है और न ही कोई पगडंडी (पैदल का रास्ता)। गोमती नदी अड्डरामुरा पहाड़ी से होते हुए मैदानी इलाकों में प्रवेश करती है जिससे जल का प्रवाह कम हो जाता है। जल का प्रवाह कम होने के कारण नौकाओं का आवागमन सुगम हो जाता है। अंततः गोमती नदी आगे जाकर बांग्लादेश की प्रमुख नदी मेघना में विलीन हो जाती हैं।



छबिमुरा की दीवारों से मुख्यतः तीन पैनलों के विषय में जानकारी मिलती है। ऐसा कहा जाता है कि पहला पैनल अमरपुर से लगभग 3 से 4 किमी दूरी पर स्थित है। यह लगभग

10.3 मीटर ऊंचा है। इसमें पांच चित्र भगवान शिव, विष्णु, गणेश, कार्तिकेय और देवी पार्वती की नक्काशी की गई है। अतः इसे 'पंचशील' या 'पंचशक्ति' के नाम से जाना जाता है। इस पैनल को महाभारत काल से भी पुराना माना जाता है। इसके बाद थोड़ी दूर पर दूसरा पैनल स्थित है। यह लगभग 10 मीटर ऊंचाई और 28 मीटर की चौड़ाई तक फैला हुआ है। इसमें छोटे-बड़े लगभग 37 चित्रों की नक्काशी की गई है। इन चित्रों में भगवान शिव व देवी पार्वती के विवाह के दृश्य को दर्शाया गया है। ऐसा माना जाता है कि इस पैनल में कुछ छोटे-बड़े लोगों को आगे और बीच में और कुछ छोटे-बड़े लोगों को पीछे की ओर नक्काशी के माध्यम से चित्रित किया गया है। दूसरे पैनल से थोड़ी दूरी पर तीसरा पैनल स्थित है जो इन पैनलों में प्रमुख है। यह लगभग 10.7 मीटर ऊंचाई और 7.7 मीटर चौड़ाई तक फैला हुआ है। इसमें



केवल एक भयानक विशालकाय अवतार के चित्र की नक्काशी की गई है जिन्हें महिषासुर मर्दिनी या देवी दुर्गा कहते हैं। कहा जाता है कि इस भयानक अवतार में देवी दुर्गा के सिर पर सर्पों से लिपटे हुए छत्र मुकुट, दस सशास्त्र हाथ (5 बाएं और 5 दाएं ओर) और नीचे पैर से दबे हुए राक्षसों का राजा महिषासुर के वध के चित्र की नक्काशी की गई है। कुछ स्थानीय लोग इसे चक्रमा या चक्रक मां भी कहते हैं।

इन पैनलों के बाद कुछ गुफाएं हैं जो रहस्यों से भरपूर हैं। एक गुफा के बारे में कहा जाता है कि यहां के राजा चिचिंगफा ने इस गुफा में अकूत (अधिक मात्रा में) दौलत छुपाई थी जिसकी रक्षा आज भी चक्रक मां करती है जिस कारण यहां पर संध्या में आना मना है अन्यथा वह चक्रक मां के श्राप से प्रकोपित हो जाएगा।

एक दूसरे गुफा के बारे में बताया जाता है कि यह गुफा देवलोक का द्वार है क्योंकि देवता लोग स्वर्गलोक से पृथ्वीलोक इसी गुफा से आते-जाते थे। जिसका वर्णन पुराणों में भी मिलता है। इस गुफा के अंदर दोनों ओर खड़ी पहाड़ियों को स्पर्श करने से ऐसा मालूम पड़ता

है कि मानो देवताओं के चित्र की नक्काशी की गई थी। कहा जाता है कि कुछ लोगों ने इस गुफा के रहस्य को उजागर करने की कोशिश की थी लेकिन बीच में ही एक जलप्रपात मिल जाने के कारण वे असफल रहे।

छबिमुरा घने जंगलों और पहाड़ी श्रृंखलाओं से घिरा हुआ है। इस जंगल में सबसे अधिक बांस के पौधे हैं जो त्रिपुरा राज्य का मुख्य व्यवसाय हैं। यहां नदी के दोनों किनारों की हरी भरी वनस्पतियां इसे बेहद रोमांच व रहस्यमय बनाती हैं। पत्तों की सरसराहट और पक्षियों के चहचहाने की मधुर आवाज आपको पृथ्वी पर स्वर्ग की अनुभूति कराती हैं। छबिमुरा के जंगल अमेजन नदी के जंगलों की भांति प्रतीत होते हैं इसलिए इसे त्रिपुरा राज्य का अमेजन कहा जाता है।



त्रिपुरा की स्थानीय जनजातियां व उनकी प्रमुख भाषाएं



श्री रोहित कुमार, एमटीएस

त्रिपुरा उत्तर-पूर्वी सीमा पर स्थित भारत का एक राज्य है। यह भारत का तीसरा सबसे छोटा राज्य है, जिसका क्षेत्रफल 10,492 वर्ग कि.मी. है। इसके उत्तर, पश्चिम और दक्षिण में बांग्लादेश स्थित है, जबकि पूर्व में असम और मिजोरम स्थित हैं। "अगरतला" त्रिपुरा की राजधानी है। "बंगाली" और "त्रिपुरी भाषा" (कोकबोरोक) यहाँ की मुख्य भाषाएं हैं। त्रिपुरा की स्थापना 14वीं शताब्दी में माणिक्य नामक इंडो-मंगोलियन आदिवासी मुखिया ने की थी, जिसने हिंदू धर्म अपनाया था। सन् 1808 ई. में इसे ब्रिटिश साम्राज्य ने जीता एवं यह स्व-शासित शाही राज्य बना। 1956 में यह भारतीय गणराज्य में शामिल हुआ और 1972 में इसे राज्य का दर्जा मिला। त्रिपुरा का आधे से अधिक भाग जंगलों से घिरा है, जो प्रकृति-प्रेमी पर्यटकों को आकर्षित करता है। हैंडलूम बुनाई यहां का मुख्य उद्योग है।

त्रिपुरा की जनजातियाँ, जो त्रिपुरा के एक प्रमुख हिस्से में निवास करती हैं, बड़े पैमाने पर तिब्बतो-बर्मन मूल से मिलती-जुलती हैं। इस क्षेत्र में 19 जनजातियों का निवास है जिन्हें भारत के संविधान के तहत अनुसूचित जनजाति के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। इन जनजातियों में भील, भूटिया, चायल, चकमा, गारो, हलम, जमातिया, खासिया, कूकी, लेप्चा, लुशाई, मोग, मुंडा, नोआतिया, ओरंग, रींग, संथाल, त्रिपुरी और उचुई शामिल हैं। इनमें प्रमुख जनजातियाँ त्रिपुरी, रियांग, जमातिया, चकमा, हलाम, नोआतिया और मोग आदि हैं। बड़े

पैमाने पर त्रिपुरा में त्रिपुरी, रेनग, चकमा, मोग, हलाम और मुरासिन का निवास है। हर समुदाय का अपना नृत्य है, जैसे रियांग का होजागिरि, त्रिपुरी का गडिया, झूम, मालमिता, मसक सुमनी और लेबांग बूमनी, चकमा का बीजू, लुसाई का केर और वेल्कम, मलसुम का हाई-हाक, गारो का वंगाला, मोग का संगरैका चिमिथांग, पडिशा और अभंगमा, कटई और जमतिया का गडिया, बंगाली समुदाय का गंजन, धमैल, सरी और रबींद्र संगीत, मणिपुरी समुदाय का बसंत राश और पुंगचलाम। यहां के प्रमुख संगीत वाद्य खंब, बाँसुरी, लेबांग, सरिंदा, दोतारा और खेंगरोंग हैं। त्रिपुरा की जनजातियां काफी हद तक अपनी जीविका निर्वहन के लिए कृषि पर निर्भर हैं। "सचिन देव बर्मन" और "राहुल देव बर्मन" जैसे प्रसिद्ध संगीतकार इसी राज्य की देन हैं।

त्रिपुरा की चकमा जनजाति:- चकमा जनजाति त्रिपुरा की दक्षिणी-पूर्वी पहाड़ियों में चटगाँव पहाड़ी की सीमा में बसे हैं। परंपरागत रूप से वे अच्छे किसान हैं। पशुपालन, टोकरी, बागवानी, चारागाह, मछली पकड़ने और बुनाई इस जनजाति का सहायक व्यवसाय है। चकमा जनजाति द्वारा बोली जाने वाली भाषा बंगाली भाषा से बहुत संबंधित है। चकमा आदिवासी समूह आमतौर पर बौद्ध परंपरा में विश्वास रखता है जो त्रिपुरा के विभिन्न हिस्सों में बिखरे हुए हैं।

त्रिपुरा की रियांग जनजाति:- रियांग जनजाति मिज़ोरम, असम और चटगाँव पहाड़ी क्षेत्र में पाई जाती है। त्रिपुरा में, उनका मुख्य एकाग्रता क्षेत्र पूर्वी पहाड़ियों में है। वे एक गाँव में रहना पसंद करते हैं जो एक पहाड़ी के पठार पर स्थित है। इस जनजाति में खेती प्रमुख व्यवसाय है। यह समुदाय शिक्षा के लिए शायद ही कोई पहुंच रखता है जो इसे परंपराओं के प्रति सीमित रखता है। इस जनजाति के त्यौहार बड़े पैमाने पर विश्वास, भूमि के पुराने रीति-रिवाजों और परंपराओं से चिह्नित हैं।

त्रिपुरी की त्रिपुरी जनजाति:- ये समस्त त्रिपुरा में पाए जाते हैं हालांकि त्रिपुरा के पश्चिमी और उत्तरी हिस्सा इनका मुख्य केंद्रित क्षेत्र हैं। यह भूमि की सबसे पुरानी जनजातियों में से एक है जो त्रिपुरा की कुल आबादी का लगभग 50 प्रतिशत है। इस समुदाय की सामाजिक संरचना काफी सरल है जो काफी हद तक इसके निर्वाह के लिए कृषि पर निर्भर है।

त्रिपुरा की मोग जनजाति:- दावा किया जाता है कि मोग जनजाति अरकान, बर्मी और चीनी कबीले से उत्पन्न हुई है, जो सन् 957 ईस्वी के दौरान त्रिपुरा में चले गए हैं। यह कबीला काफी हद तक बौद्ध धर्म को मानता है, वे बहुत हद तक अपने निर्वाह के लिए कृषि पर निर्भर हैं।

त्रिपुरा की हलाम जनजाति:- हलाम जनजातियों को कुकी जनजातियों का वंशज माना जाता है, जो त्रिपुरा में बस गए और अपने राजा के शासन को स्वीकार कर लिया। मुख्य रूप से यह जनजाति वैष्णव विश्वास और शक पंथ का पालन करती है। मूल रूप से हलाम जनजातियों में 12 समूह पाए जाते हैं जो 16 उप वर्गों में विभाजित हैं।

त्रिपुरा के मुरासिन जनजाति:- इस क्षेत्र में निवास करने वाले मुरासिन जनजाति मृत जानवरों के सींगों को लटकाने की परंपरा से स्पष्ट रूप से चिह्नित हैं। यह वंश जो त्रिपुरा के क्षेत्रों में निवास करता है, एक समय में त्रिपुरा की शाही सेना का एक हिस्सा था।

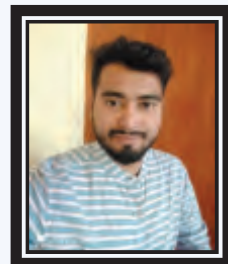
त्रिपुरा की भील जनजाति:- भीलों को भारत की सबसे पुरानी जनजाति में से एक माना जाता है। एक समय में वे राजस्थान, गुजरात, मालवा, मध्य प्रदेश और बिहार के कुछ हिस्सों में शासक थे। त्रिपुरा में उनकी प्रमुख सांद्रता मुख्य रूप से बेलोनिया के अकिनपुर, खोवाई सब-डिवीजन के बागान बाजार में हैं। वे चाय बागानों में काम करने वाले उत्तरी त्रिपुरा में भी पाए जाते हैं। भील धर्म से हिंदू हैं।

त्रिपुरा की भूटिया जनजाति:- त्रिपुरा में भूटिया और हिमालयी जनजाति लगभग नगण्य संख्या में हैं। त्रिपुरा में, भूटिया कभी अपने योद्धा चरित्र और शारीरिक शक्ति के लिए शाही सेना में शामिल होते थे। लेकिन समय के साथ वे त्रिपुरा छोड़कर अपने मूल देश चले गए।

भारत सरकार और राज्य की सरकारों ने त्रिपुरा की जनजातियों को सदा ही महत्वपूर्ण माना है और निरंतर ही उनके विकास के लिए सुविधाएं मुहैया कराई हैं, क्योंकि वो कहते हैं ना जब देश का हर नागरिक विकास करेगा, तभी एक देश विकास करता है।



त्रिपुरा के पारंपरिक एवम् जायकेदार व्यंजन



श्री आशीष गुप्ता, एमटीएस

त्रिपुरा राज्य सुंदर पर्यटक स्थलों की भूमि है। यहां कि संस्कृति और पारंपरिक एवं जायकेदार व्यंजन अपने आप में दूसरे राज्यों से अलग हैं। त्रिपुरा का खाना थोड़ा तीखा और मसालेदार होने के साथ ही चीन और बांग्लादेश के पकवानों का मिलता-जुलता मिश्रण है। यहां ज्यादातर आबादी मांस-मछली पर निर्भर रहती है। इन्हीं चीजों से बने व्यंजन उनका पसंदीदा व्यंजन भी है। बांगुई चावल और मछली, बांस की मारिया, स्थानीय जड़ी-बूटियां और मांस के रोस्ट्स राज्य के भीतर और बाहर बेहद लोकप्रिय हैं। यहां के कुछ व्यंजन त्रिपुरा की शान है जिसमें पारंपरिक व्यंजन मुई बोरोक भी है। इसे त्रिपुरा के लोग काफी पसंद करते हैं। यह एक ऐसा भोज्य पदार्थ है जिसे अधिकतर व्यंजनों में मिलाया जाता

है। इसे बेरमा कहा जाता है। बेरमा को सूखी मछली से बनाया जाता है और इसे बनाने में तेल का इस्तेमाल नहीं किया जाता है। इसका स्वाद नमकीन और चटपटा होता है। चूंकि त्रिपुरा राज्य बांग्लादेश की सीमा से तीनों ओर से घिरा हुआ है इसलिए बांग्लादेश और यहां के व्यंजनों में काफी समानताएं हैं। यहां काफी तादात में बंगाली समुदाय के लोग हैं जो चावल, मछली और सब्जियों पर आश्रित रहते हैं। मांस यहां के लोगों के मुख्य भोज्य पदार्थों में शामिल है। यहां के लोग मटन, पोर्क और चिकन खाना



ज्यादा पसंद करते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है कि त्रिपुरा में सिर्फ बांग्लादेश के व्यंजन लोकप्रिय हैं। यहां पर चाइनीज फूड भी काफी पसंद किया जाता है। इसके आलावा यदि आप मदिरापान का शौक रखते हैं तो आपको एक बार राइस बीयर का सेवन अवश्य करना चाहिए। यह त्रिपुरा का पारंपरिक पेय है। इसे चावल से तैयार किया जाता है। इसे चौक या चुवारक कहा जाता है। इसे बनाने के लिए चावल को कुछ दिन तक पानी में भिगोकर रखा जाता है फिर इसके बाद छानकर सर्व किया जाता है। इसे मागी राइस, अनानास और कटहल के मिश्रण से भी तैयार किया जाता है। जानकार इसे दुनिया की सबसे सुरक्षित मदिरा मानते हैं। यहां की चटनी में मॉसडेंग सेरमा लोकप्रिय है। जिस सेजवान सॉस को हम चांव से खाते हैं और सोचते हैं कि यह बाहर से आयातित फूड है किंतु वास्तविकता में यहां सदियों से यह मॉसडेंग सेरमा के रूप में प्रचलित है। इसे भी बेरमा, लाल मिर्च, टमाटर और लहसुन से तैयार किया जाता है।

इस तरह से यहां बांगुई भी खासा पसंद किया जाता है। यहां के स्थानीय लोग इसे सही तरीके से पारंपरिक विधि से तैयार करने में घंटों लगा देते हैं ताकि खाने में उचित खुशबू

और जायका आ सके। बंगाल की तरह त्रिपुरा में भी पंचफोरन मसाले का खूब इस्तेमाल होता



है। त्रिपुरा के लोग बैंगन, कद्दू और आलू की सब्जी में पंचफोरन मसाला डालकर पकाते हैं

जिसे तरकारी कहा जाता है। पंचफोरन तरकारी का मजा पराठा और पूड़ियों के साथ गजब का लगता है। उत्तर-पूर्वी राज्यों में मोमोज का बहुत क्रेज है लेकिन त्रिपुरा में व्हान मॉसडेंग चर्चित पकवनों में से एक है। इसे पोर्क, प्याज, धनिया पत्ती और हरी मिर्च का मसाला भरकर भाप से पकाया जाता है। यहां की सबसे लोकप्रिय मछली हिल्सा है जिसे सरसों के बीज और हरी मिर्च के साथ पकाया जाता है।

त्रिपुरा की सांस्कृतिक विविधता आदिवासी और गैर आदिवासी लोगों के भोजन की आदतों में परिलक्षित होती है। शहरी रेस्तरां में भव्य मसालेदार व्यंजन या दो या तीन किस्म के चीनी व्यंजनों को छोड़कर त्रिपुरा के बंगाली समुदाय के लोग चावल, मछली, चिकन, मटन और पोर्क खाते हैं। त्रिपुरा के अधिकतर पारंपरिक व्यंजन को बिना तेल के पकाया जाता है इसलिए इसे बेहद स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है। बेरमा का स्वाद नमकीन और मसालेदार होता है।

त्रिपुरा के लोगों के लिए गुड़ोक एक प्रसिद्ध फिश-डिश है जिसे असल में वंडल बंबू में पकाया जाता है। वंडल बंबू एक अलग प्रकार का बर्तन होता है वर्तमान समय में बंबू कम ही मिलते हैं इसलिए लोग गुड़ोक को पैन में पकाना पसंद करते हैं। इस डिश को उबली सब्जियों और मछलियों के साथ पकाया जाता है और बांस की खुशबू इसके स्वाद में चार चांद लगा देती है। इस व्यंजन में पोषक पदार्थ काफी होता है। त्रिपुरा की मिठाई भी काफी स्वादिष्ट होती है। यहां की मिठाईयों में मालपुआ, केसर चमचम, केसर बर्फी, चना टोस्ट, स्ट्रबेरी बर्फी के अलावा शुगर-फ्री मिठाईयां भी प्रसिद्ध हैं।

क्या हार में, क्या जीत में,
किंचित नहीं भयभीत में,
कर्तव्य पथ पर जो भी मिला,
यह भी सही, वो भी सही,
वरदान नहीं मांगूंगा,
हो कुछ पर हार नहीं मानूंगा।

— श्री अटल बिहारी वाजपेयी



त्रिपुरा की महिलाएं एवं सशक्तिकरण



श्री विशाल सिंह, एमटीएस

महिला सशक्तिकरण को बेहद आसान शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है कि इससे महिलाएं शक्तिशाली बनती हैं। जिससे वह अपने जीवन से जुड़े हर फैसले स्वयं ले सकती हैं। और परिवार और समाज में अच्छे से रह सकती हैं। समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना महिला सशक्तिकरण है। भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में से एक त्रिपुरा जहां महिला सशक्तिकरण के काफी सारे उदाहरण पूरे विश्व को दिया है। यहां से कई महिलाओं ने बालीवुड से लेकर खेल के क्षेत्र में भी त्रिपुरा का नाम रोशन किया है। यहां की महिलाओं ने भारत के किसी भी राज्य की महिलाओं से कम तरक्की नहीं की है, जबकि त्रिपुरा पूर्वोत्तर भारत का एक छोटा राज्य है जहां अभी भी हर प्रकार के संसाधनों का अभाव है फिर भी सीमित संसाधनों के रहते हुए भी यहां की महिलाओं ने हर क्षेत्र में तरक्की की है। कुछ एक खेल जगत और फिल्मी जगत के सितारों के बारे में जानते हैं जो त्रिपुरा से हैं :-

दीपा कर्माकर :- दीपा कर्माकर एक कलात्मक जिम्नास्ट है जिनका जन्म 9 अगस्त 1993 को त्रिपुरा राज्य के अगरतला में हुआ था। उन्होंने 6 वर्ष की उम्र से जिम्नास्टिक्स आरम्भ कर दिया था और उसी समय से अपनी कोच विश्वेश्वर नंदी के निर्देशन में अभ्यास कर रही हैं। 2007 से दीपा ने राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में कुल 77 पदक जीते हैं जिसमें से 67 स्वर्ण पदक हैं। दीपा ने 2016 ग्रीष्मकालीन ओलम्पिक में प्रतिभाग करने वाली वे पहली भारतीय महिला जिम्नास्ट हैं। इस ओलम्पिक में उन्होंने फाइनल में अपनी जगह बनाई और फाइनल में भी मामूली से अंतर से कांस्य पदक पाने से चूक गईं और चौथे स्थान पर रहीं, हालांकि वो कोई पदक नहीं जीत पाईं लेकिन वह करोड़ों भारतीयों का दिल जीत लिया। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री से लेकर खेल जगत के सारे लोगों ने इनकी खूब प्रशंसा की।

तनुश्री देबबर्मा :- तनुश्री देबबर्मा त्रिपुरा की प्रथम महिला आईएसएस अधिकारी बनीं। उन्होंने लोकसेवा आयोग की परीक्षा में अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में चौथा स्थान प्राप्त किया। उन्होंने स्नातक डिग्री आईआईटी दिल्ली से प्राप्त किया। इसके बाद उन्हें कई बड़ी कंपनियों में काम करने के प्रस्ताव मिले लेकिन तनुश्री ने लोकसेवा आयोग की परीक्षा की तैयारी शुरू

की। अंततः वर्ष 2006 की लोकसेवा आयोग परीक्षा में तनुश्री देबबर्मा ने सफलता प्राप्त कर इतिहास रच दिया।

रीपा दास:- रीपा दास जो मूलतः त्रिपुरा की निवासी है, उसे वर्ष 2015 में प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार से नवाजा गया। उन्होंने अपने 1 साल के छोटे भाई को भीषण आग की दुर्घटना से बचाया था। यह भीषण आग की घटना दक्षिण त्रिपुरा जिले के बेलोनिया में हुआ जहां 12 दुकानें और घर जल कर राख हो गए। आग इतनी भीषण थी कि रीपा के माता-पिता अपने बच्चों को छोड़कर ही घर से निकल गए लेकिन रीपा ने अपनी बहादुरी से अपनी और अपने छोटे भाई की जान बचाई।

सैरभी देबबर्मा:- सैरभी देबबर्मा एक ऐसे परिवार से आती है जिसके सदस्यों को संगीत में कोई रुचि नहीं है। इसके बावजूद वह पहली महिला इंडियन आयडल विजेता बनीं। सन् 2009 में इंडियन आयडल-4 की विजेता बनकर त्रिपुरा के साथ-साथ पूरे भारत की लड़कियों के लिए प्रेरणास्रोत बन गईं।

रीमा देबनाथ :- रीमा देबनाथ भारतीय सिनेमा की एक अभिनेत्री हैं जो मूलतः अगरतला से हैं। इन्होंने छोटे पर्दे से लेकर बड़े पर्दे पर काम किया है। अगरतला जैसे छोटे शहर से होने के बावजूद उन्होंने अपने हुनर के दम पर बड़े पर्दे पर आकर त्रिपुरा का नाम रोशन किया। इन्होंने 'बॉडीगार्ड', 'पीके' जैसी मशहूर फिल्मों में अपने अभिनय का लोहा मनवाया है। इन्होंने पूरी दुनिया को बता दिया कि अगर हुनर हो तो आपको आगे बढ़ने से दुनिया की कोई ताकत रोक नहीं सकती और छोटे शहरों की लड़कियां भी बड़ा सपना देख सकती हैं।

राईमा सेन और रिया सेन:- ये दोनों ही सगी बहनें हैं जो हिंदी, बांग्ला और तमिल फिल्मों में काम करती हैं। इनके पिता त्रिपुरा के शाही खानदान से थे जिनका नाम भारत देबबर्मा था। इनकी माता मुनमुन सेन तथा दादी सुचित्रा सेन भारतीय सिनेमा की जानी-मानी अभिनेत्री थीं। इन दोनों बहनों ने बॉलीवुड से लेकर छोटे पर्दे तक अपना लोहा मनवाया है। अपनी अभिनय से लाखों दिलों पर राज करने वाली ये बहनें छोटे शहरों की महिलाओं के लिए प्रेरणादायी हैं।

ऐसे और कई हस्तियां हैं जिन्होंने त्रिपुरा से जाकर पूरे भारत में अपना अमूल्य योगदान दिया है। हालांकि, अभी भी त्रिपुरा में संसाधनों की कमी है जिसमें सुधार की आवश्यकता है ताकि महिलाएं हर क्षेत्र में प्रगति कर सकें। त्रिपुरा में अभी भी ऐसे ग्रामीण क्षेत्र हैं जो संसाधनों के अभाव में पिछड़े हुए हैं। लेकिन सरकार लगातार कोशिश कर रही है कि त्रिपुरा में सबकी तरक्की एक समान हो चाहे वह पुरुष हो या स्त्री।



त्रिपुरा का हस्तशिल्प



श्री विनोद कुमार सोनी, आं.प्र.प्र.

भारत अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत तथा स्मारकों के लिए प्रसिद्ध है। यहां आपको संस्कृति के साथ-साथ शिल्प कला का अनूठा संगम देखने को मिलेगा और आज मैं आपको जिस राज्य के बारे बताने जा रहा हूँ वो है 'त्रिपुरा'।

त्रिपुरा का इतिहास बेहद दिलचस्प है जैसा की आप सब जानते हैं की त्रिपुरा की राजधानी अगरतला हाउरा नदी के तट पर बसी है। इसे 1760 में त्रिपुरा राजघराने की राजधानी बनाया गया था जब महाराजा कृष्णमाणिक्य सरल आवाजाही तथा खुले स्थान के लिए उदयपुर से अपनी राजधानी यहां ले आए थे। उदयपुर तब उत्तर-पूर्वी भारत का एक राज्य था। शहर में अधिकतर निर्माण जैसे महल, सड़कें तथा जल आपूर्ति के लिए तालाब आदि 1838 के आस-पास महाराजा कृष्णकिशोर माणिक्य ने करवाए थे। त्रिपुरा में मुख्यतः छोटे पैमाने पर निर्माण कार्य होता है जिसमें बुनाई, बढ़ईगीरी, टोकरी व मिट्टी के बर्तन बनाने जैसे कई कुटीर उद्योग शामिल हैं। छोटे पैमाने के उद्योगों के विकास को बढ़ाने में राज्य सरकार सक्रिय है। बाँस व बेंत हस्तशिल्प में कक्ष विभाजक फ़र्नीचर, भित्तिपट्टिका टेबल-मैट और फ़र्श पर बिछाने वाली चटाईयाँ शामिल हैं जिन्हें स्थानीय स्तर पर बनाया जाता है।

बेंत और बांस हस्तशिल्प :- बेंत और बांस की हस्तशिल्प कला का असम, त्रिपुरा और पश्चिम बंगाल की अर्थव्यवस्था में काफी बड़ा योगदान है। बेंत और बांस का उपयोग करके बनाई गई विभिन्न वस्तुओं जैसे कुर्सियाँ, टेबल-मैट, टोपी, बैग, हाथ के पंखे, कंटेनर आदि अत्यधिक टिकाऊ होते हैं और विभिन्न देशों में निर्यात किए जाते हैं जहां उनकी बहुत मांग है।

रीति-रिवाजों में बांस :- भारतीय संस्कृति में भी बांस का विशेष महत्व रहा है। पर्व-त्योहार, रीति-रिवाजों में बांस का इस्तेमाल किसी न किसी रूप में होता है। हिंदू रिवाज के अनुसार बांस के बर्तनों में चुलिया, टिपारे, ढौरिया, बिजना, सूपा, सिंदौरा आदि का विवाह में होना ज़रूरी होता है। इनके बिना रस्में पूरी नहीं होती।

बांस एवं पर्यावरण :- बांस पर्यावरण बचाने में मददगार है। बांस के पौधे मिट्टी की उपजाऊ ऊपरी परत का संरक्षण करते हैं। बांस की लगातार गिरती पत्तियाँ वन भूमि पर

चादर-सी फैली रहती है। इससे नमी का संरक्षण बना रहता है। साथ ही तेज बारिश के समय ये पत्तियां ढाल बनकर भूमि की उपजाऊ ऊपरी परत का संरक्षण करती है। बांस के पौधों में हवा में उपलब्ध कार्बन-डाइऑक्साइड को सोखने की अच्छी क्षमता है। बांस और बेंत इस राज्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण हस्तशिल्प है। यह हस्तशिल्प पूरे राज्य में फैला हुआ है जहां अगरतला शहर के अलावा कैलासहर, धर्मनगर, खोवाई, सदर, सुआमोरा और बेलोनिया के उपमंडलों में इसकी सघन उपस्थिति है। चटाईयां, झोले, मूरा, फल की टोकरियां और फूलदान बनाई जाने वाली वस्तुओं में शामिल हैं। राज्य सरकार द्वारा गठित हस्तशिल्प शिक्षक संस्थान (क्राफ्ट टीचर्स इंस्टीट्यूट) ने इस क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया है।

राज्य उद्योग विभाग अगरतला में एक डिजाइन एक्सरटेशन केंद्र संचालित करता है और अखिल भारतीय हस्तपशिल्पी बोर्ड ने एक बांस तथा बेंत विकास संस्थाए स्थापित किया था, जिसके द्वारा बांस के रासायनिक प्रशोधन में अनुसंधान का कार्य शुरू किया गया है। यह बांस कार्य अनुकूलन, संरक्षण तथा शिल्प व डिजाइन में एक उन्नत प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भी प्रदान करता है। अगरतला जेल में भी फर्नीचर के सामान को बनाया गया था। अगरतला में एक प्राइवेट रजिस्टर्ड सोसायटी तथा कई अन्य एककों ने बांस के स्क्रीन लैंप स्टैंड तथा टेबल-मैट में विशिष्टता प्राप्त करते हुए लोकप्रिय वस्तुओं का उत्पादन शुरू किया है।

बांस को प्राथमिक सामग्री के रूप में प्रयुक्त करते हुए त्रिपुरा के मैदानी भागों में अनेक ढांचे बनाए जाते हैं। ये ढांचे-घर अनाज के गोदाम, दुकान, कार्यस्थल या वृहत् माल-गोदाम भी हो सकते हैं। वे तीव्र भूकंपों को सहन करने के लिए हल्के निर्मित स्थल होते हैं साथ ही वे पवनरोधी भी होते हैं। त्रिपुरा राज्य चीरे हुए बांस से निर्मित बांस के स्क्रीनों के लिए विख्यात है। ये इतनी बारीकी से बुने होते हैं कि प्रायः हाथीदांत की तरह दिखते हैं और बांस की रंगीन पट्टियों से उत्कृष्ट रूप से अधिरोपित होते हैं।

त्रिपुरा में बांस की चटाई का फलता-फूलता उद्योग है। बांस की चटाई को मीटर के हिसाब से बेचा जा सकता है अथवा उत्पादकों में परिवर्तित किया जा सकता है। चटाई की प्रति मीटर कीमत बांस के चीरे की बारीकी चटाई की चौड़ाई तथा प्रति 25 मिमी प्रयुक्त ताना धागों की संख्या तथा रंग पर निर्भर करती है। बांस की चटाई को रूपांतरित करके अनेक उत्पाद जैसे कि पंखे, लैंपस्टैंड, हैंडबैग तथा अनेक सजावटी वस्तुएं बनाई जाती हैं। सबसे सरलतम सजावटी वस्तु 600 मिमी लंबी चटाई से बना वाल-हेंगिंग है जिस पर ऑयल रंगों से बना एक चित्र है। वाल-हेंगिंग के सिरे बांस की पट्टियों से मजबूत बनते हैं। चटाई के अपशिष्ट टुकड़ों से बना एक अन्य सजावटी उत्पाद फूलों की छड़ियां हैं। बांस से बनी मेज की चटाई सर्वाधिक लोकप्रिय उत्पादों में से एक है। वे अपेक्षित लंबाई तथा चौड़ाई में हथकरघे पर बुने हुए होते हैं। अधिक बारीक सजावट की श्रम लागत उच्च होती है। कुछ चटाई के सेटों पर स्थानीय कलाकारों द्वारा बनाए गए सजावटी तैलीय चित्र होते हैं।

चायदानी की टोप तथा ट्रे एक अन्य उत्पाद है। अर्ध-चक्रीय तथा चक्रीय पंखे बांस की चटाई से बनते हैं। लैम्प शेड भी बांस की ठाट से निर्मित होते हैं। यह खूबसूरत लगता है जब इसे प्रकाश के सामने देखा जाता है क्योंकि चटाई की बुनावट अधिक स्पष्ट दिखाई देती है। बांस की ठाट से तरह-तरह के आकार वाले हैंड बैग बनाए जाते हैं। सामान्य तौर पर सख्त संरचना के साथ इनके किनारे कड़े होते हैं। बुने हुए बांस के ठाटों से बने उत्पादों के अलावा अगरतला में कई अन्य उत्पाद भी तैयार किए जाते हैं। इनमें मुड़े हुए बांस के फूलदान तथा लैपस्टैंड, नक्काशीदार तथा संरचित पात्र जैसे कि मग तथा पेंसिल-होल्डर और बांस की संरचित पट्टियों से निर्मित कई अन्य नए सामान शामिल हैं।

टोकरियां :- त्रिपुरा के हस्तशिल्पकार विभिन्न प्रकार की टोकरियों के निर्माण में भी निपुण हैं। भिन्न-भिन्न जनजातीय समूहों द्वारा टोकरियों का निर्माण किया जाता है जिनमें से कुछ निम्नानुसार हैं :-

बांस तथा बेंत विपणन टोकरी, खुली बुनावट की सामान ढोने वाली टोकरियां, जमातिया ईंधन टोकरियां, बंद बुनावट की सामान ढोने वाली टोकरियां, रियांग की सामान ढोने वाली टोकरियां, लघु भंडारण टोकरियां, त्रिपुरा के मैदानों के बांस से बुने हुए नालमुखों का इस्तेमाल मवेशियों को चावल के खेतों में चरने से रोकने के लिए किया जाता है, त्रिपुरा की अनाज भंडारण टोकरियां।

देशी फर्नीचर :- त्रिपुरा का मुदाह बांस तथा बेंत के चीरे से बनी हुई कम ऊंचाई की मेज होती है। बांस का उपयोग ढांचे तथा किनारे की संरचना में किया जाता है जबकि बेंत के चीरे का उपयोग सभी सामानों को बांधने और सीट के बुनावट में किया जाता है। मुदाह के ढांचे की संरचना बहुत भारी सामान को सहारा देने के लिए अपेक्षाकृत पतले अंगों के प्रयोग के लिए किया जाता है।

मछली पकड़ने का जाल तथा मछली की टोकरी :- त्रिपुरा की जमातिया जनजाति द्वारा मछली पकड़ने वाले जाल एवं मछली की टोकरी बनाने में भी एक विशेष प्रकार के बांस का उपयोग किया जाता है। यह मुख्यतः आड़ी-तिरछी खपाची से लटकाया हुआ एक जाल होता है और इसे दोनों हाथों से पकड़ा जाता है ताकि जाल का अग्रभाग इसके ढांचे की ओर और जल के प्रवाह के विरुद्ध प्रवाहित हो। जाल में तैरकर आने वाली मछलियों को पानी से बाहर निकाल लिया जाता है और टोकरी में रख दिया जाता है।

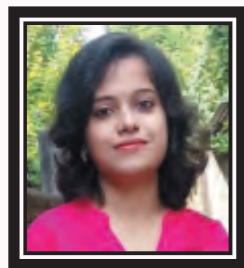
रेन-शील्ड और हेडगीयर :- पठला त्रिपुरा का पठला बारिश से बचाव की युक्ति है। इसके शीर्ष शंकु का आधार 230 मिमी है जिसकी ऊंचाई 110 मिमी है और वृत्ताकार शेड जो थोड़ा नीचे की ओर प्रवृत्त होता है, का व्यास 550 मिमी होता है। पांच तत्वों से निर्मित एक पंचभुज जिनमें से प्रत्येक में बांस की तीन-तीन पट्टियां होती हैं, शंकु के शीर्ष को घेरे रहता है। बांस की आपस में गूंथी हुई पांच चौड़ी पट्टियाँ शंकु के शीर्ष को सुदृढ़ करती हैं।

विविध उत्पाद :- कुछ शिल्पकार बांस की बारीक खपाचियों से जानवरों की बुनी हुई छोटी आकृतियां बनाते हैं। वे खिलौनों तथा सजावटी वस्तुओं दोनों के रूप में अभिप्रेत होते हैं। ये आकृतियां बारीक खपाचियों को समान रूप से बुनकर अथवा गूंथकर तैयार की जाती हैं।

धूम्रपान पाइप :- त्रिपुरा की रियांग जनजाति के लोग तंबाकू पीने के लिए एक बड़े हुक्के का प्रयोग करते हैं। यह तीन भागों से बना होता है। मिट्टी का कटोरा बांस की छोटी नली से बांस के जलपात्र से जुड़ा होता है। जलपात्र का भाग अत्याधिक व्यास का समग्र तना होता है और इसके लंबाई वाले भाग के दो आंतरिक गांठ होते हैं। हुक्का पीते समय रियांग जनजाति के लोग पात्र के खुले सिरे पर अपने हाथ रखते हैं और अपने हाथ तथा खुले छिद्र के सिरे के बीच एक खाली स्थान छोड़ते हैं।



त्रिपुरा राजवंश का इतिहास



सुश्री चंद्रिमा विश्वास, एमटीएस

यह कहना गलत नहीं होगा कि हमारा इतिहास आज उत्तर-पूर्वी भारत में हमारे बंगाली राजवंश को लगभग भूल चुका है। अगर हम भारत के इतिहास का अध्ययन करें तो हमें बहुत सारे साम्राज्य और राजवंश मिलते हैं। उन्होंने कई वर्षों तक भारत पर शासन किया। त्रिपुरा भारत का तीसरा सबसे छोटा राज्य जरूर है पर उसकी विरासत बहुत महत्वपूर्ण है और उसका केंद्र-बिंदु 'त्रिपुरा का राजवंश' है। भारत के इतिहास की बात आते ही मौर्य और गुप्त साम्राज्य का जिक्र किया जाता है या फिर दिल्ली सल्तनत और मुगल साम्राज्य का। इसमें से सबसे लम्बे समय (330 साल) तक मुगल साम्राज्य द्वारा शासन किया गया। परन्तु भारत के उत्तर-पूर्व में स्थित छोटे से राज्य त्रिपुरा में माणिक्य साम्राज्य ने लगभग 550 साल तक शासन किया। भारतीय इतिहास में असम के 'अहोम राजवंश' के बाद इस राजवंश ने इतने साल तक शासन किया।

त्रिपुरा को प्राचीन भारत की सबसे पुरानी रियासतों में से एक माना जाता है। त्रिपुरा की रियासतों ने महाभारत के चंद्र-वंश के ययाति राजवंश के वंशज होने का दावा किया था। राजा ययाति के उत्तराधिकारी राजा द्रुहय, राजा बावरू, राजा त्रिपुर और राजा त्रिलोचन थे।

राजा 'बावरू' ने अयोध्या के सम्राट 'दशरथ' के 'अश्वमेध यज्ञ' में भी भाग लिया था। राजा 'त्रिपुर' महाभारत काल के राजा 'युधिष्ठिर' के समकालीन थे। कहा जाता है कि राजा 'त्रिलोचन' ने महाभारत युग के राजा 'युधिष्ठिर' के राजसूय यज्ञ में भाग लिया था। राजा 'त्रिलोचन' एक धर्मपरायण राजा थे, जो भगवान शिव के उपासक थे।

त्रिपुरा के शाही वंश 'माणिक्य राजवंश' की शुरुआत सन् 1400 ई. से हुई, इसके प्रथम राजा 'महाराजा महा माणिक्य' थे। पौराणिक कथा के अनुसार माणिक्य वंश का नाम एक रत्न (संस्कृत में 'मणि') से लिया गया था जो एक मेंढक से प्राप्त किया गया था। महाराजा महा माणिक्य पहले शासक थे जिन्होंने राज्य को माणिक्य की शाही उपाधि से नवाजा। महाराजा महा माणिक्य के शुरुआती उत्तराधिकारियों ने बंगाल, असम और बर्मा के क्षेत्र पर विजय प्राप्त करते हुए काफी सैन्य सफलता (military success) हासिल की। 16वीं शताब्दी में 'धन्य माणिक्य' और 'विजय माणिक्य द्वितीय' जैसे प्रमुख राजाओं के समय यह



राजवंश अपने चरम पर पहुंच गया, इसकी भूमि उत्तर में गारो पहाड़ियों से लेकर दक्षिण में बंगाल की खाड़ी तक फैली हुई थी। एक हिंदू राज्य के सम्राट के रूप में, माणिक्यों ने बंगाल के मुस्लिम शासकों के साथ प्रतिद्वंद्विता की शुरुआत की। त्रिपुरा की राजधानी सन् 1760 तक उदयपुर शहर (अगरतला से 51 कि.मी.) थी, जो गोमती नदी के तट पर स्थित था। हालांकि, बंगाल के नवाबों द्वारा लगातार हमलों और राजनीतिक साजिशों के कारण राजधानी को अगरतला में स्थानांतरित कर दिया गया। सन् 1761 में त्रिपुरा ब्रिटिश प्रभाव के आगे झुक गया और एक रियासत बन गया, हालांकि इस क्षेत्र का नियंत्रण अभी भी माणिक्य वंश के अधीन ही था। सन् 1862 में 'बीर चंद्र माणिक्य' राजा बने और उन्होंने अगरतला के शहरीकरण को गति दी जिसके अंतर्गत सन् 1871 में अगरतला नगरपालिका (Agatala

Municipality) की स्थापना हुई। उन्होंने कई प्रशासनिक सुधार किए जिससे राज्य के काम-काज को सुव्यवस्थित किया जा सका। 1871 ई. में ही उनके द्वारा त्रिपुरा में दास प्रथा और 1888 में सती प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन किया गया। उन्हें फोटोग्राफी का भी शौक था और उन्होंने एक व्यक्तिगत फोटो स्टूडियो की स्थापना की और अगरतला में एक वार्षिक फोटो प्रदर्शनी का भी शुभारंभ किया। उन्होंने 1890 में अगरतला में उमाकांता अकादमी की स्थापना के साथ-साथ अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले 1896 में कोमिला में बीरचंद्र पब्लिक लाइब्रेरी की स्थापना करके शिक्षा-क्षेत्र को भी बढ़ावा दिया।

उनके बेटे 'राधा किशोर माणिक्य' और पोते ने अपने आधुनिक विचारों को आगे बढ़ाया और अपने राज्य के विकास के लिए बड़े पैमाने पर काम किया। राधा किशोर रवींद्रनाथ ठाकुर के बहुत अच्छे मित्र थे और उन्होंने शांति निकेतन में विश्व-भारती विश्वविद्यालय की स्थापना में उनका समर्थन किया था। हालांकि, १२ जून, 1896 को उत्तर-



पूर्वी भारत में आए एक बड़े भूकंप ने अगरतला शहर को तबाह कर दिया। इस भूकंप में शाही महल सहित अगरतला का अधिकांश भाग ध्वस्त हो गया था। राधा किशोर माणिक्य ने अपने मित्र, प्रसिद्ध कवि रवींद्रनाथ ठाकुर के परामर्श से अगरतला में एक नया महल बनाने का फैसला किया। कहा जाता है कि रवींद्रनाथ ठाकुर ने ही इस महल का नाम उज्जयंता रखा था।

547 वर्षों की लंबी अवधि में कई राजा महाराजाओं ने त्रिपुरा राज्य पर शासन किया। महाराजा बीर बिक्रम किशोर माणिक्य, जिन्होंने 1923 से 1947 की अवधि तक शासन किया, वे एक दूरदर्शी राजा थे, जिनकी मृत्यु 17 मई, 1947 को हुई थी। त्रिपुरा की रियासत के अंतिम शासक 'किरीट बिक्रम किशोर माणिक्य देबबर्मन' थे, जिन्होंने 1947 से 1949 तक

अगरतला में शासन किया। स्वर्गीय महाराजा किरीट बिक्रम किशोर माणिक्य देबबर्मन की विधवा, महारानी कंचन प्रभा देवी ने अपने बेटे किरीट बिक्रम किशोर माणिक्य की ओर से 9 सितंबर, 1949 को दिल्ली में त्रिपुरा विलय समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस प्रकार मूल रियासत का 15 अक्टूबर, 1949 को भारत में विलय हो गया। 1 जुलाई, 1963 को त्रिपुरा एक केंद्र शासित प्रदेश बन गया और 21 जनवरी 1972 को पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त किया। वर्तमान में माणिक्य वंश के उत्तराधिकारी 'किरत प्रद्योत किशोर माणिक्य देबबर्मन' हैं। मैं आशा करती हूँ कि त्रिपुरा के माणिक्य वंश का नाम शीघ्र ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर फैल जाए और यह इतिहास भारतीय इतिहास के पाठ्यक्रम में राष्ट्रीय स्तर पर संलग्न किया जाए।

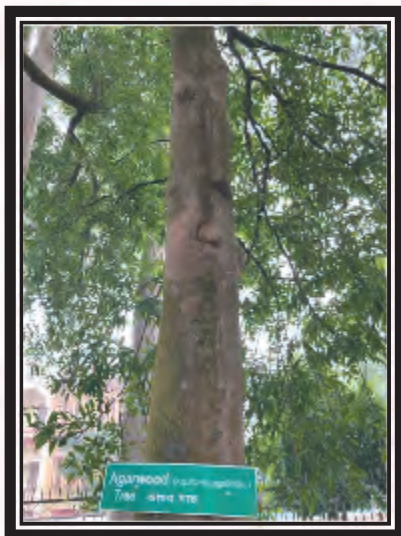


‘त्रिपुरा’ एवं ‘अगरतला’ के नामकरण का इतिहास



श्री पुष्पेंद्र कुमार, आं.प्र.प्र.

त्रिपुरा उत्तर-पूर्वी सीमा पर स्थित भारत का एक राज्य है। यह भारत का तीसरा सबसे छोटा राज्य है। इसके उत्तर, पश्चिम और दक्षिण में बांग्लादेश स्थित है जबकि पूर्व में असम और मिजोरम स्थित है। ‘अगरतला’ त्रिपुरा की राजधानी है। यहां कि मुख्य भाषाएं ‘बंगाली’ और ‘कोकबोरोक’ हैं। त्रिपुरा के शाही कालक्रम ‘राजमाला’ के अनुसार 15 अक्टूबर 1949 को भारतीय संघ में विलय से पहले राज्य पर कुल 184 राजाओं ने शासन किया। 26 जनवरी 1950 को त्रिपुरा को ‘सी’ श्रेणी के राज्य का दर्जा दिया गया था और 1 नवंबर,



1956 को इसे केंद्रशासित प्रदेश के रूप में मान्यता दी गई। त्रिपुरा के लोगों के निरंतर प्रयासों से इसे 21 जनवरी 1972 को उत्तर-पूर्व पुनर्गठन अधिनियम, 1971 के अनुसार पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ। त्रिपुरा के नाम की उत्पत्ति अभी भी इतिहासकारों और शोधकर्ताओं के बीच विवाद का विषय है।

कई शोधकर्ता ‘त्रिपुरा’ नाम की व्युत्पत्ति से इसकी व्याख्या करते हैं। त्रिपुरा शब्द दो अलग-अलग शब्दों, ‘तुई’ (पानी) एवं ‘प्रा’ (निकट) जिसका समग्र अर्थ ‘पानी के पास’

है। राज्य की भौगोलिक स्थिति पूर्वी बंगाल के विशाल जलसंसाधनों से निकटता के साथ-साथ राज्य के मूल निवासियों की सामान्य पहचान 'टिपरा' के रूप में राज्य के नाम की इस व्याख्या को स्पष्ट रूप से उचित ठहराती है। अगरतला, भारत के त्रिपुरा प्रांत की राजधानी है और पूर्वोत्तर भारत के सबसे बड़े शहरों में से एक है। यह बांग्लादेश की राजधानी 'ढाका' से लगभग 90 किमी पूर्व में, बांग्लादेश की सीमा के पास, हाओरा नदी के तट पर स्थित है। यह मुम्बई और चेन्नई के बाद भारत का तीसरा अन्तर्राष्ट्रीय इंटरनेट गेटवे है। अगरतला की स्थापना 'कृष्ण किशोर माणिक्य बहादुर' द्वारा की गई थी। अगरतला उस समय प्रकाश में आया जब माणिक्य वंश ने इसे अपनी राजधानी बनाई। आज अगरतला जिस रूप में दिखाई देता है, दरअसल इसकी परिकल्पना 1940 में महाराजा बीर बिक्रम किशोर माणिक्य बहादुर ने की थी। उनके इस योगदान को देखते हुए ही अगरतला को 'बीर बिक्रम सिंह माणिक्य बहादुर का शहर' भी कहा जाता है।

यह माना जाता है और कई सन्दर्भों द्वारा समर्थित है कि अगरतला नाम 'अगर' और 'तला' शब्दों से लिया गया है जो इस क्षेत्र में अगरवुड के पेड़ों के घनत्व का उल्लेख है। ऐतिहासिक रूप से अगरतला में 'अगर' को महान राजा रघु के संदर्भ में भी संदर्भित किया जाता है, जिन्होंने लौहित्य के तट पर अपने हाथी के पैरों को 'अगर' के पेड़ से बांध दिया था।



त्रिपुरा और संविधान की छठी अनुसूची



श्री प्रतीक बिरिंग, एमटीएस

भारतीय संविधान की छठी अनुसूची में असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम में आदिवासी क्षेत्रों के प्रशासन के प्रावधान शामिल हैं। यह विशेष प्रावधान भारतीय संविधान के 'अनुच्छेद 244(2)' और 'अनुच्छेद 275(1)' के तहत प्रदान किया गया है। यह कानून 1949 में संविधान सभा द्वारा पारित किया गया था जो स्वायत्त जिला परिषदों (ए.डी.सी.) के गठन के माध्यम से आदिवासी आबादी के अधिकारों की रक्षा करना चाहता है।

समस्त स्वायत्त जिला परिषदों को संविधान के द्वारा राज्य विधायिका के भीतर स्वायत्तता की विभिन्न शक्तियां प्रदान की गई हैं।

इन राज्यों के राज्यपालों को जनजातीय क्षेत्रों की सीमाओं को पुनर्गठित करने का अधिकार दिया गया है। सरल शब्दों में, राज्यपाल किसी भी क्षेत्र को स्वायत्त जिलों में शामिल या बहिष्कृत कर सकते हैं, इसकी सीमाओं को बढ़ाने या घटाने और दो या अधिक स्वायत्त जिलों को एक साथ जोड़ने का विकल्प भी चुन सकते हैं। वे बिना किसी अलग कानून के स्वायत्त क्षेत्रों के नाम परिवर्तित सकते हैं। छठी अनुसूची के अंतर्गत आने वाले राज्यों के राज्यपाल इनमें से प्रत्येक मामले के लिए उच्च न्यायालयों के अधिकार क्षेत्र को निर्दिष्ट करते हैं। कुल मिलाकर, पूर्वोत्तर में 10 ऐसे क्षेत्र हैं जो स्वायत्त जिलों के रूप में पंजीकृत हैं - असम, मेघालय और मिजोरम प्रत्येक राज्य में तीन-तीन और त्रिपुरा में एक है। प्रत्येक स्वायत्त जिला और क्षेत्रीय परिषद में 30 से अधिक सदस्य नहीं हो सकते हैं, इनमें से चार राज्यपाल मनोनीत कर सकते हैं और शेष चुनाव के माध्यम से चुने जाते हैं। इनका कार्यकाल 5 वर्ष का होता है।

‘त्रिपुरा जनजातीय क्षेत्र स्वायत्त जिला परिषद्’ (त्रि.ज.क्षे.स्वा.जि.प.), भारत के त्रिपुरा राज्य के टिपरा बहुल क्षेत्रों पर प्रशासनिक अधिकार रखने वाली एक स्वायत्त जिला परिषद् है। इसकी परिषद् और विधानसभा ‘खुमुलंग’ में स्थित है। त्रिपुरा जनजातीय क्षेत्र स्वायत्त जिला परिषद (त्रि.ज.क्षे.स्वा.जि.प.) का गठन त्रिपुरा जनजातीय क्षेत्र स्वायत्त जिला परिषद (त्रि.ज.क्षे.स्वा.जि.प.) अधिनियम-1979 के तहत किया गया था। इसके वर्तमान अध्यक्ष श्री जगदीश देबबर्मा हैं और मुख्य कार्यकारी सदस्य पूर्णा चंद्र जमातिया हैं।

त्रिपुरा जनजातीय क्षेत्र स्वायत्त जिला परिषद (त्रि.ज.क्षे.स्वा.जि.प.) को कई शक्तियाँ प्रदत्त की गई हैं जिन्हें निम्नानुसार वर्गीकृत किया जा सकता है:-

कार्यकारी शक्तियाँ :- त्रिपुरा जनजातीय क्षेत्र स्वायत्त जिला परिषद (त्रि.ज.क्षे.स्वा.जि.प.) की एक नियमित प्रशासनिक संरचना है। 10 सदस्यों और मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) से बनी ‘कार्यकारी समिति’ प्रशासन की प्रमुख होती है। कार्यकारी शक्तियाँ कार्यकारी समिति में निहित होती हैं, जिसका नेतृत्व मुख्य कार्यकारी सदस्य (सीईएम) करता है, जो ट्रेजरी बेंच के सदस्यों में से चुना जाता है।

भारतीय संविधान की छठी अनुसूची राज्य की स्वदेशी टिपरा आबादी के स्व-शासन के लिए जिला परिषद को पर्याप्त शक्तियां प्रदान करती है। नियुक्ति नियमों के अनुसार जिला परिषद के पास अपने स्वयं के कर्मचारियों को नियुक्त करने की अपनी शक्तियाँ हैं। प्रशासन, वित्त, ग्रामीण विकास, योजना, विकास और समन्वय आदि जैसे कार्यकारी विभागों के लिए प्रशासन का नेतृत्व मुख्य कार्यकारी अधिकारी और टीसीएस ग्रेड- I के एक उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी और 6 कार्यकारी अधिकारी मिलकर करते हैं।

विभागीय प्रमुख के रूप में एक प्रधान अधिकारी की अध्यक्षता में विभिन्न विभाग आते हैं जो निम्नलिखित हैं :-

1.कृषि 2.पशुपालन 3.सहकारी संचालन 4.शिक्षा (स्कूल और सामाजिक शिक्षा) 5.मछली पालन 6.जंगल 7.स्वास्थ्य और परिवार कल्याण 8.उद्योग 9.कोकबोरोक स्थानीय अनुसंधान भाषा 10.भूमि अभिलेख और बंदोबस्त 11.कानून 12. आदिवासी कल्याण 13.ग्राम समिति 14.लोक निर्माण विभाग

विधायी शक्तियां :- जिला परिषद के विधायी विभाग का एक अध्यक्ष होता है, जो समय-समय पर बजट के अनुमोदन, ट्रेजरी बेंच द्वारा प्रस्तुत विधेयकों, नियमों और विनियमों पर चर्चा और उसे पारित करने के संबंध में परिषद की बैठक बुलाता है। परिषद में 30 सदस्य होते हैं, जिनमें से 28 सदस्य वयस्क मताधिकार द्वारा चुने जाते हैं और 2 सदस्य त्रिपुरा के राज्यपाल द्वारा मनोनीत होते हैं। अध्यक्ष का अपना सचिवालय होता है जिसकी अध्यक्षता जिला परिषद के सचिव करते हैं।

न्यायिक शक्तियां :- एडीसी को दीवानी और न्यायिक शक्तियां प्राप्त हैं, जो जनजातियों से जुड़े मामलों की सुनवाई के लिए अपने अधिकार क्षेत्र में ग्राम अदालतों का गठन कर सकते हैं। एडीसी के साथ, छठी अनुसूची एक स्वायत्त क्षेत्र के रूप में गठित प्रत्येक क्षेत्र के लिए अलग क्षेत्रीय परिषदों का भी प्रावधान करती है।

जिला परिषद की स्थापना से पहले, इसके अधिकार क्षेत्र में शामिल गांवों में राज्य के बाकी हिस्सों की तरह ग्राम पंचायतें थीं। परिषद की स्थापना के बाद, त्रिपुरा पंचायत राज अधिनियम उस क्षेत्र में प्रभावी नहीं रहा। वर्ष 2006 में, राज्य सरकार ने राज्य के अन्य हिस्सों की ग्राम पंचायतों के समान ही ग्राम परिषदों के चुनाव कराने का फैसला किया, क्योंकि छठी अनुसूची में इस तरह की कार्यवाई पर कोई रोक नहीं है।

निष्कर्ष :- स्वायत्त जिला परिषद की स्थापना का मुख्य उद्देश्य स्वदेशी लोगों को खुद पर शासन करने के लिए सशक्त बनाना और पिछड़े लोगों में सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देना है ताकि उनकी संस्कृति, रीति-रिवाजों और परंपराओं का संरक्षण किया जा सके। हाशिए के वर्गों के लिए वास्तव में विशेष संवैधानिक सुरक्षा की आवश्यकता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उनके साथ भूतकाल में की गई गलतियाँ दोहराई न जाएँ। इसलिए, सरकार और अन्य संस्थाओं को इस संवेदनशील मुद्दे से निपटने के लिए क्षेत्र के आदिवासियों और गैर-आदिवासियों का विश्वास जीतने और उनमें सुरक्षा और अपनेपन की भावना लाने की जरूरत है।



त्रिपुरा के ग्रीष्मकालीन अतिथि



श्री दीपायन चक्रवर्ती, सहा. पर्यवेक्षक

“पक्षियों को दुनिया की परवाह किए बिना आकाश में उड़ने का सौभाग्य प्राप्त होता है।”

पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों की अलग-अलग जीवन-प्रणाली होती है, जिसमें भोजन, घोंसला बनाना, प्रजनन और व्यवहार इत्यादि शामिल हैं। अलग-अलग जीवन प्रणाली की तरह उनका अलग-अलग प्रवासन प्रक्रिया भी होती हैं और इसलिए, कुछ पक्षियां सर्दियों में और कुछ ग्रीष्म ऋतू में प्रवास करते हैं।

भारतीय उपमहाद्वीप प्रचुर मात्रा में प्रवासी पक्षियों का मेजबान है जो देश के विभिन्न हिस्सों में ग्रीष्मकाल बिताते हैं। पक्षी कई कारणों से पलायन करते हैं; यह भीषण सर्दी या भोजन के स्रोतों की कमी से बचने के लिए हो सकता है। कारण जो भी हो, प्रवासी पक्षियों की लगभग 100 से अधिक प्रजातियां भारत में साल भर में उड़ान भरती हैं और उनके लिए अस्थायी प्राकृतिक आवास की सेवा के लिए भारत में बहुत सारे वन्यजीव अभयारण्य स्थापित किए जाते हैं। देश-विदेश के पक्षी प्रेमी दुनिया के कुछ दुर्लभ प्रजाति के पक्षियों को देखने के लिए इन अभयारण्यों में आते हैं। ऐसा ही एक पक्षी है जो ग्रीष्म ऋतू में भारत आता है, जिसका नाम ‘हूडेड पिट्टा’ जो इस साल त्रिपुरा में पहली बार देखा गया है।

हूडेड पिट्टा (वैज्ञानिक नाम : पिट्टा सॉर्डिडा) पिट्टीडे परिवार में एक राहगीर पक्षी है। यह पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी एशिया और समुद्री दक्षिण पूर्व एशिया में आम है, जहां यह कई प्रकार के जंगलों के साथ-साथ वृक्षारोपण और अन्य खेती वाले क्षेत्रों में रहता है। यह एक हरे रंग का पक्षी है जिसका सिर काला और शाहबलूत का ताज होता है। यह कीड़ों और उनके लार्वा के लिए जमीन पर चारा बनाता है, और जामुन भी खाता है। यह



फरवरी और अगस्त माह के बीच प्रजनन करता है, यह जोड़ा दृढ़ता से क्षेत्रीय है और जमीन पर अपना घोंसला बनाता है। बच्चों का इनक्यूबेशन और देखभाल माता-पिता दोनों के द्वारा

किया जाता है। इस पक्षी की एक विस्तृत श्रृंखला है और प्रकृति के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ ने "कम से कम चिंता" के रूप में इसकी संरक्षण स्थिति का आकलन किया है। लगभग सभी पिट्टा की तरह, हुड वाला पिट्टा शर्मीले और आमतौर पर देखने में बहुत मुश्किल होते हैं।

इस साल त्रिपुरा में भी हुडेड पिट्टा का अच्छा खासा आगमन हुआ है। इस पक्षी को देखकर और इसकी फोटो लेकर मुझे बहुत खुशी मिली है। साथ ही मेरे द्वारा कैमरे में कैद की गई कुछ अद्वितीय तस्वीरें जो आप सभी पाठकगणों के लिए ज्ञानवर्धक भी साबित होंगी:-





बया वीवर (Baya Weaver)



ब्लू थ्रॉटेड बारबेट (Blue Throated Barbet)



बंगाल बुशलार्क (Bengal Bushlark)

त्रिपुरा की लुप्तप्राय ब्रू (रियांग) जनजाति



श्री किशोर जमातिया, व.ले.प.

पूर्वोत्तर भारत में स्थित त्रिपुरा, अन्य राज्यों के क्षेत्रफल की तुलना में एक छोटा राज्य है। अपनी समृद्ध संस्कृति के कारण इतिहास में इसका विशिष्ट स्थान है। रियांग जनजाति त्रिपुरा में अवस्थित 19 आदिवासी समुदायों में से एक है। इस जनजाति को ब्रू (रियांग) के नाम से भी जाना जाता है। इसके अलावा, ब्रू (रियांग) मिजोरम, मणिपुर और असम के विभिन्न हिस्सों में भी बसे हैं। इसका मुख्य कारण है झूम की खेती। झूम की खेती के उद्देश्य से किसान खानाबदोशों की भांति स्थान बदलते रहते हैं। इस प्रक्रिया को पूर्ण रूप देने के लिए वे असम अथवा मिजोरम की ओर प्रस्थान कर जाते हैं। कई वर्षों के पश्चात वे फिर से लौट आते हैं, क्योंकि इस समय पुरानी भूमि पुनः उर्वर हो जाती है।

ब्रू (रियांग) जनजाति, त्रिपुरा की दूसरी सबसे बड़ी स्थानीय आबादी है। रियांग की भाषा 'काऊ-ब्रू' कहलाती है, जिसमें काऊ का अर्थ 'भाषा' एवं ब्रू का अर्थ 'मनुष्य' है, जो रियांग समुदाय के प्राचीन देवी-देवता, देवलक्ष्मी और देवतारानी के पुत्र हैं। शोधकर्ताओं का मानना है कि मूल सिनू तिब्बती बर्मी हैं। उनकी आजीविका का एक स्रोत हुक फार्मिंग है। मैंने उस 'हुक फार्मिंग' या झूम खेती में ही त्रिपुरा एवं भारत में अप्रकाशित या अज्ञात विलुप्त प्रथा में, श्रम के बदले श्रम प्रदान करने की प्रथा यानि सम्पूर्ण जीवन, संघर्ष करने का अभ्यास है, इस तथ्य को पाया।

जून 2017 में मुझे कुछ कार्यालयी कार्य के निर्वहन करने के उद्देश्य से, 'राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल गतिविधियाँ' नामक कर्मसम्पादन निरीक्षण के लिए चयनित किया गया था। 9 जून 2017 को हमने अंबासा ब्लॉक के तहत, पुष्पराम पाड़ा और डाबाराम पाड़ा के लाभार्थियों का साक्षात्कार करने और काम की वास्तविकता को सत्यापित करने के लिए हम दो लोग: मैं एवं वाईखोम ब्रोनान्द्रो मेईतेई पेयजल एवं स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत, एक जूनियर इंजीनियर के साथ रवाना हुए। कार अंबासा से गोंडाछारा के तरफ अग्रसर थी। थोड़ी देर चलने के बाद, मैंने पक्की सड़क छोड़ दी और दाहिनी तरफ ईंट की पक्की सड़क पर चल दिया। उस स्थान का नाम ज्यूलछड़ा था। वहाँ से पहाड़ी रास्ते की ओर चल दिये। हम बहुत तनाव सहने के बाद मसुरापाड़ा तक पहुँच गए। फिर कार वहीं पार्क करके कुछ आवश्यक कागजात, जैसे कागज़, कैमरा, बैग, पानी की बोतल आदि साथ लेकर पैदल ही चल पड़े ताकि लाभार्थियों से बात कर सकें। रास्ते में, हम दो लोगों से मिले जो पुष्पराम पाड़ा के निवासी

थे। उनमें से एक का नाम दंडराम रियांग था। उन दो रियांग साथियों ने हमारा ध्यान रखा, ताकि हमें चलने में ज्यादा कठिनाई न हो। पहले दोनों रियांग दादा, एक बहुत खड़ी सड़क पर चढ़ गए। उनके पीछे हम भी चढ़ गए। पहाड़ी की चोटी पर प्रतीक्षा करते हुए मैंने अपने साथियों से पूछा कि पुष्पराम पाड़ा कितनी दूर है? "बहुत दूर नहीं, आधी सड़क बची है।" एक साथी ने जवाब दिया। अंत में, हमने बीहड़ जंगली पहाड़ी सड़क के किनारे चलना शुरू किया। थोड़ी देर चलने के बाद, मैंने एक जगह पर पहाड़ी की ढलान से बीच में एक झूमता हुआ काइरेंग देखा। उस समय, काइरेंग में कुछ रियांग थे जो झूम के आँगन को साफ करने के लिए खड़े थे। काइरेंग में दोपहर के समय वे लोग कुछ देर के लिए आराम कर सकते थे। और साथ ही केमिट्रो, मुइखुमु, और लाईफांग जैसी जंगली सब्जियों के मिश्रण के साथ पेड़ों में भी पकाते हैं। इसी बीच, उस काइरेंग में कुछ मिनट बिताने के बाद मैं बहुत पीछे हो चला था परन्तु बाकी लोगों ने चलना बंद नहीं किया था।

आखिरकार, हम पुष्पराम पाड़ा पहुंच गए और लाभार्थियों के साथ वास्तविक सत्यापन और साक्षात्कार के लिए निकल पड़े। हम पुष्पराम पाड़ा के लोगों का साक्षात्कार लेना चाहते



थे। लेकिन भाषाई समस्याएं भी थी। कनिष्ठ अभियंता के साथ ब्रोनान्द्रो थे। इस बीच, मेरे मामले में, एक समस्या स्थानीय भाषा भी थी। कॉकबोरोक भाषा के शब्द विभिन्न कारणों से खो गए हैं, लेकिन लापता कॉकबोरोक बोलने वाले अभी भी रियांग लोगों के बीच पाए जाते हैं। दोपहर को वे खाना पकाकर हुक (झूम) पर खाते हैं। वे दोपहर को झूम से घर आना और खाना पसंद नहीं करते। हालांकि कुछ लोग

घर का बना खाना झूम फील्ड में ले जाते हैं। अधिकांश समय जंगली सब्जियों को गाइडिंग में दोपहर के भोजन के लिए पकाया जाता है और परोसा जाता है। इसीलिए काम के मौसम में लोगों का घर पर साक्षात्कार लेना मुश्किल था। इस तरह मैं कुछ लोगों का ही साक्षात्कार ले सका। उनमें से एक उल्लेखनीय है क्योंकि हमने उनसे साक्षात्कार के दौरान विशिष्ट प्रश्न पूछे थे, जिनके उन्होंने उत्तर भी दिये। लेकिन उन्होंने हमसे पूछा "चुंग बीफु नुन्यकनया ताई कहम मिन्नै"? अर्थात् "हमें पीने का स्वच्छ पानी कब मिलेगा?" हम तुरंत जवाब नहीं दे सके। थोड़ी देर सोचने के बाद, मैंने उसे कॉकबोरोक भाषा में कहा कि यह कहना मुश्किल है कि आपके लिए स्वच्छ जल की



व्यवस्था कब होगी क्योंकि, हम सिर्फ इस वास्तविकता की जांच करने आए हैं कि आपको पानी मिल रहा है या नहीं। संयोग से, हम दोनों पीने के पानी का स्रोत देखने के लिए एवं कुछ तस्वीरें लेने मौके पर गए।

ब्रोनान्द्रो की हालत खराब थी। ब्रोनान्द्रो की हालत देखकर मैं डर गया। वह थोड़ी देर के लिए लेट गया और फिर लाल आँखों के साथ उठ बैठा। दोपहर के करीब एक बजे थे।



अतः हम बिना देर किए डाबाराम पाड़ा की ओर वास्तविकता को सत्यापित करने निकल पड़े। बाद में हमने सोचा कि साक्षात्कार के लिए घर-घर जाना संभव नहीं होगा। अतः वहाँ जाना उचित है जहाँ झूम खेती चल रही है।

हमने डाबाराम पाड़ा की ओर रुख किया। कुछ समय के लिए, उस ढलान वाली जगह पर जाने के बाद, गाइडिंग में कम से कम 13-14 लोग

दिखाई दिये। प्रायः सुबह से दोपहर तक झूम फार्मिंग का काम करने के बाद सभी जन एक गर्म दोपहर में गाइडिंग में एक साथ खाना बना रहे होते हैं और भोजन के बाद थोड़ा आराम करते हैं। यहां पर उनका साक्षात्कार लेना बेहतर था। लेकिन एक और समस्या थी कि जिन लोगों से हम साक्षात्कार के उद्देश्य से गाइडिंग में मिले थे, उनमें से सबसे पहले साक्षात्कार कौन देगा। एक उमदराज़ महिला को छोड़कर लगभग हर कोई उम्र में उनसे कम था। वे शर्म के कारण खुलकर बोल नहीं पा रहे थे। अंततः एक आदमी ने पहला इंटरव्यू



दिया। मैंने पहली बार पूछा “निन्नी मुंग ताम? अर्थात तुम्हारे नाम का क्या मतलब है? उसने उत्तर दिया, “खिपैहा”। यह नाम मुझे अत्यंत अद्भुत लगा। खिपैहा का अर्थ ‘झुका हुआ’ या ‘कार्य समाप्त’ हो सकता है। उनमें से कई ने अपना प्रथम या अंतिम नाम नहीं बोला। अंत में एक शर्मीली महिला के साथ साक्षात्कार हुआ। मैंने पूछ लिया “आइबिनि मुंग ताम”? अर्थात दीदी का नाम क्या है? उत्तर प्राप्त हुआ, लोती रंग रियांग। इस तरह, लगभग सभी का एक-एक करके साक्षात्कार हुआ। उनके जल स्रोतों के बारे में भी बहुत कुछ जाना। हां, तो इस तरह इंटरव्यू का एपिसोड खत्म हो गया। पानी के स्रोत के बारे में जानकारी भी हासिल हुई। अब वापस लौटने का समय था। हमने कार को दूर मसुरा में छोड़ दिया था। जून की दोपहर की गर्मी में, गाइडिंग की छाया में थोड़ा आराम करने के बाद, शरीर का पसीना भी थोड़ा सूख

गया था। चलते-चलते मेरे मन में एक साथ कई विचार एवं सवाल उठने लगे। अगर वे वास्तव में गरीब हैं तो झूम के मालिक इतने लोगों को दैनिक मजदूरी कैसे देते हैं? यह सवाल मेरे मन में उठने लगा। फिर से उस गाइडिंग के पास जाकर, मैं थोड़ा डर गया और पूछा, आता-आमचाय-अ इया गुलोनी रांग बोशो? अर्थात् इस क्षेत्र में दैनिक मजदूरी कि दर क्या है? मैंने जिस व्यक्ति से पूछा, उसने सीधे जवाब नहीं दिया, लेकिन उसके पास एक बुजुर्ग महिला से बात की। काऊ-बू भाषा के साथ, मैं समझा नहीं सकता कि उनके बीच क्या चल रहा था। थोड़ी देर बाद जवाब आया। इसका उत्तर है, “इया गुलोनी रांग रोजाले कौज”, जिसका अर्थ है कि आपको उपस्थित होने के लिए भुगतान नहीं किया जाता है। मुझे यह बात समझ में नहीं आई, इसलिए मैंने स्पष्टीकरण मांगा। फिर रियांग दादा ने कहा, “इजगुल खिल्लाइम से” कई सवालों के जवाब देने के बाद, मैंने असली मुद्दे को समझा। मुझे पता चला कि एक दादा और एक छोटी बहन अपने झूम की खेती पर, जंगल को साफ करने के लिए काम करने आए थे। उस काम को छोड़कर, अन्य सभी 12 लोग, उस सहोदर के झूम कार्य के लिए यहां आए हैं। इस उपस्थिति का भुगतान नहीं किया जाता है। यही श्रम के बदले में श्रम देने की प्रथा है। यह कब शुरू हुआ, यह शोध का विषय है, लेकिन यह अभ्यास अभी भी अस्तित्व में है।

श्रम के बदले में श्रम देने की प्रथा: जीवन संघर्ष का अभ्यास झूम की खेती

पृष्ठभूमि:- एक समय में झूम खेती बू / रियांग जनजाति की एकमात्र आजीविका थी। घने बाँस के जंगल को झूम स्थान के रूप में चुना जाता है। पहले जंगल काटने या समाशोधन प्रकरण होता है। वनों की कटाई के तीन महीने बाद, यानी पौष के महीने से जब वनों की कटाई शुरू होती है, और चैत्र महीने के अंत में, ग्रीष्म ऋतु को पूरा किया जाना चाहिए। चैत्र महीने के अंत में बहुत लोग बीजारोपण कर देते हैं। इतना सब कुछ एक परिवार द्वारा किया जाना संभव नहीं है। पड़ोस में हर कोई एक साथ खेती करता है। इस प्रथा को “याहगु-कुस्लिम” कहा जाता है। मान लीजिए कि एक पड़ोस में 25 परिवार हैं। तब प्रत्येक परिवार से एक यहगू (श्रमिक) वास्तव में 25 श्रम दिवस बनाएगा। वे 25 लोग एक निश्चित परिवार के झूम क्षेत्र में एक दिन काम करेंगे। अगले दिन एक अन्य परिवार के झूम क्षेत्र में फिर दूसरे परिवार के फ़ील्ड में। इस तरह, 25 परिवारों के खेतों में काम पूरा करने के बाद, वे उन परिवारों के खेतों में लौट आएंगे, जिनके खेतों में पहला काम किया गया था। कुछ परिवारों में एक से अधिक कर्मचारी होते हैं। नतीजतन, मजदूरों के दिवस खातों को बनाए रखना पड़ता है। प्रत्येक मजदूर के पूरे दिवस खाते भी बहुत अच्छी तरह से बनाए हुए हैं। क्रेडिट में श्रमिक दिवस को “जाईगु-कुथांग” कहा जाता है। और भुगतान किए गए श्रम दिवस को “जाईगु-कुथुई” कहा जाता है। इस सुंदर अभ्यास के नियम आज तक लिखित रूप में मौजूद नहीं हैं और इसकी आवश्यकता भी नहीं है।

काइरेंग में कोई घड़ी नहीं है। ग्रेट ब्रिटेन में बिग बेन की घड़ी की तरह जंगल में पशु पक्षी, कीट पतंगे उन्हें समय का बोध कराते हैं। दोपहर – स्वयं की छाया खुद के पैरों तले होने का मतलब दोपहर है। अनुमानतः संध्या लगभग 4 बजे 'ताओकुंग' पक्षी का कलरव बाज़ार जाने का संकेत देती है। 'आयुंग माई' अथवा 'ईजंग सरीय' कीट-पतंग शाम ढलने का इशारा देते हैं। प्रकृति के इन सभी जीवों के साथ, झूम खेती की दुनिया को चलाया जाता है। मैं रियांग लोगों के पड़ोस में गया, वहाँ के लोगों से बात की और श्रम के बदले में श्रम देने की अज्ञात विलुप्त प्रथा को समूहीकृत करके जीवन के संघर्ष के बारे में सीखा।

काइरेंग से साक्षात्कार समाप्त करने के बाद, हम मसुरा के लिए रवाना हुए। थोड़ी देर चलने के बाद हम उस तीन तरफ़ वाली सड़क पर आ गए। एक और सड़क दिखी। कुछ क्षण चलने के पश्चात, एक रियांग मध्यम आयु की महिला देर दोपहर में चार या पांच गायों को ले जा रही थी। हमने उससे पूछा। इयांग तोई जो मसुराज कामी-अ थाँगोई-दे मान'? मेरा मतलब है, क्या आप इस रास्ते से मसुरा जा सकते हैं? एक छोटे से उत्तर में, महिला ने कहा, 'थाँगोई मान' लेकिन कुछ समय के लिए उत्तर दिशा में जाने के बाद रास्ते में रुकावट आई। दूर-दूर तक मसुरा का कोई नाम-ओ- निशां नहीं था। लगभग दो-तीन किलोमीटर चलने के बाद भी मसुरा नहीं आया। आखिर में अचानक हमें एक रास्ता मिला: आधुनिक तकनीक। मैं नेटवर्क पाने के लिए ऊंची पहाड़ियों पर चढ़ गया। नेटवर्क मिलने पर यह पता चला कि हम मसुरा से उत्तर की ओर बहुत दूर आ चुके हैं। थोड़ी देर चलने के बाद, मुझे दक्षिण-पूर्व की सड़क मिली। लेकिन हम नहीं जानते थे कि क्या हम इस सड़क पर चलते हुए मसुरा जा सकते हैं। अंत में, मेरे नेतृत्व में, हम मसुरा की तलाश में निकल पड़े। थोड़ी देर जाने के बाद, मुझे एक बंधी हुई गाय दिखाई दी। तब मेरे मन में आशा की ज्योति जाग उठी। फिर 9-10 मिनट चलने के बाद हम परिचित सड़क पर पहुँच गए, जिस मार्ग से हम मसुरा के लिए कार से आए थे। हमें कम से कम दो से तीन किलोमीटर दक्षिण की ओर चलना था। हमने सोचा कि हम ड्राइवर को बुलाएंगे। लेकिन नेटवर्क नहीं होने के कारण ड्राइवर को नहीं बुलाया जा सका। दो-ढाई किलोमीटर के बाद, हम मसुरा पहुँचे, जहाँ हमने कार छोड़ी। कार स्टार्ट करके उत्तर की ओर पार्क करने के लिए एक अच्छी जगह मिली। मैं कार में सवार होकर अंबासा के लिए रवाना हो गया। मेरे लिए सबसे नई बात यह थी कि रियांग लोगों में अभी भी श्रम के बदले श्रम देने की परंपरा थी। वास्तव में, त्रिपुरा के स्थानीय लोगों के बीच, विभिन्न अज्ञात रिवाज़ अभी भी प्रचलित हैं। हालाँकि बहुत सी बातें लिखी गई हैं, फिर भी बहुत सी बातें अव्यक्त हैं।



सचिन देव बर्मन (एस.डी. बर्मन) और राहुल देव बर्मन (आर.डी. बर्मन)

“हैं अपना दिल तो आवारा
न जाने किस पे आएगा ...”

सामग्री संकलन : अमर आनन्द मिंज, क. हिंदी अनुवादक
प्रेरणा : माननीय प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा

(फिल्म: सोलवाँ साल, 1958, अभिनीत: देवानंद, वहीदा रहमान, संगीतकार: सचिन देव बर्मन)

सचिन देव बर्मन सरल और सहज शब्दों से अपनी धुनों को कुछ इस तरह सजाते थे कि उनके गीत दिल की गहराइयों को छू जाते थे। सचिन देव बर्मन का जन्म 1 अक्टूबर, 1906 को त्रिपुरा में हुआ था। उनकी जन्मभूमि अभी वर्तमान बांग्लादेश में है। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा अगरतला के कुमार बोर्डिंग स्कूल में हुई थी। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी. ए. की शिक्षा प्राप्त की। उनके बेटे का नाम राहुल देव बर्मन है। 'प्यासा', 'गाइड', 'बंदिनी', 'टैक्सी ड्राइवर', 'बाज़ी' और 'अराधना' जैसी फिल्मों के मधुर संगीत के जरिए एस.डी. बर्मन आज भी लोगों के दिलों दिमाग पर छाए हुए हैं। अपने करीब तीन दशक के फ़िल्मी जीवन में सचिन देव बर्मन ने लगभग 90 फ़िल्मों के लिये संगीत दिया। सचिन देव बर्मन की मृत्यु 69 साल की उम्र में 31 अक्टूबर 1975 को ब्रेन स्टोक से हुई।



एक पूर्वाभ्यास के दौरान, आशा भोसले (बाईं ओर), राहुल देव बर्मन उर्फ पंचम दा (बाएं से दूसरे), और, अपने बेटे के कंधे पर हाथ रखते हुए, सचिन देव बर्मन। साभार: अभिजीत दासगुप्ता ।

संगीत के जादूगर राहुल देव बर्मन को भारतीय फिल्म जगत का हर संगीतकार अपना गुरु मानता है। राहुल देव बर्मन (पंचम दा) का जन्म 27 जून, 1939 को कोलकाता में हुआ। इनके पिता सचिन देव बर्मन जो खुद हिन्दी सिनेमा के बड़े संगीतकार थे। छोटी सी उम्र में पंचम दा ने “सर जो तेरा चकराये ...” की धुन तैयार कर ली जिसे गुरुदत्त की फ़िल्म “प्यासा” में ले लिया गया। “प्यासा” फिल्म का यह गाना आज भी लोगों के जुबान पर सुना जा सकता है। सत्तर के दशक के आरंभ में आर डी बर्मन भारतीय फिल्म जगत के एक लोकप्रिय संगीतकार बन गए। उन्होंने लता मंगेशकर, आशा भोसले, मोहम्मद रफी और किशोर कुमार जैसे बड़े फनकारों से अपने फिल्मों में गाने गवाए। 1970 में उन्होंने छह फिल्मों में अपनी संगीत दी जिसमें कटी पतंग काफी सफल रही। यहां से आर. डी. बर्मन संगीतकार के रूप में काफी सफल हुए। बाद में ‘यादों की बारात’, ‘हीरा पन्ना’, ‘अनामिका’ आदि जैसे बड़े फिल्मों में उन्होंने संगीत दिया। आर. डी. बर्मन की बतौर संगीतकार अंतिम फिल्म 1942 लव स्टोरी रही। वर्ष 1994 में इस बड़े संगीतकार का देहांत हो गया।

डाक टिकट और त्रिपुरा

सामग्री संकलन : अमर आनन्द मिंज,
प्रेरणा : माननीय प्रधान महालेखाकार महोदय

डाक टिकट, डाक की प्राप्ति के प्रतीक में कागज के एक टुकड़े के रूप में शुरू हुआ। स्वतंत्रता के बाद शुरुआत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ-साथ देश की उपलब्धियों को उजागर करने के लिए पंचवर्षीय योजनाओं, इस्पात संयंत्रों, बांधों आदि जैसे विषयों को चित्रित करने के लिए डाक टिकटों का इस्तेमाल किया गया था। इसके बाद, देश की समृद्ध सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत को प्रदर्शित किया गया और कला, वास्तुकला, शिल्प, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, रक्षा और सिनेमा पर विषयगत सेटों में कई सुंदर टिकट जारी किए



गए। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के महान नेताओं को भी डाक टिकटों से सम्मानित किया गया है, जिनमें सबसे प्रमुख महात्मा गांधी हैं। चित्रकला, साहित्य, विज्ञान, संगीत, सामाजिक उत्थान आदि क्षेत्रों में अपार योगदान देने वाली हस्तियों को भी सम्मानित किया गया है। त्रिपुरा राज्य से घनिष्ठ संबंध रखने वाले संगीतकार आर. डी. बर्मन और एस. डी. बर्मन के सम्मान में भारत सरकार द्वारा डाक टिकट जारी किये गए हैं।

माई स्टाम्प योजना :, भारत सरकार की इस योजना के तहत कोई आम आदमी भी अपनी फोटो डाक टिकट पर छपवा सकता है। माई स्टाम्प योजना साल 2011 में आयोजित विश्व फिलैटली (Philately) प्रदर्शनी के दौरान शुरू की गई थी। इस योजना के तहत महज 300 रुपये का मामूली शुल्क जमा करके आप अपनी तस्वीरों वाले 12 डाक टिकट जारी करवा सकते हैं। इन माध्यम से आप देश के किसी कोने में पोस्ट भी भेज सकते हैं। फोटो वाले डाक टिकट जारी करवाने के लिए केवल एक शर्त है कि जिस व्यक्ति की तस्वीर का आप डाक टिकट जारी करवाना चाहते हैं, वह व्यक्ति जीवित होना चाहिए। स्वयं के फोटो वाले डाक टिकट जारी करने के लिए नीचे लिंक की सहायता ले सकते हैं:

<https://www.indiapost.gov.in/Philately/Pages/Content/My-Stamp.aspx>



त्रिपुरा राजवंश की कला और संस्कृति की समृद्ध विरासत



श्री रूपक देबबर्मा, स.ले.प.अधिकारी

त्रिपुरा भारत के प्राचीन रियासतों में से एक था। इसकी भौगोलिक अवस्था लगभग 22°56' एवं 24°32' उत्तरी अक्षांश के बीच और 91°10' एवं 92°30' पूर्वी अक्षांश के बीच स्थित है। इसका विशाल साम्राज्य बंगाल में सुंदरबन से लेकर उत्तरी म्यांमार तक फैला हुआ था। किंतु इसका बहुत बड़ा क्षेत्र पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) में चला गया। महाराजाओं की निजी जमींदारी, चकला रोशनाबाद विभाजन में चली गई थी। राजमाला (राजाओं के इतिहास) के अनुसार त्रिपुरा के राजा चंद्र वंश के छठे वंशज ययाति के वंशज थे। त्रिपुरा पर 184 राजाओं ने संप्रभुता और स्वतंत्रता के साथ शासन किया। इसके अंतिम शासक राजा बीर बिक्रम किशोर देबबर्मन की मृत्यु के बाद वर्ष 1949 में त्रिपुरा रियासत का भारतीय संघ में विलय हो गया।

त्रिपुरा के इतिहास का आधुनिक काल बीरचंद्र माणिक्य के समय से शुरू हुआ। इन्होंने वर्ष 1862 से 1896 तक शासन किया। बीरचंद्र माणिक्य ने अपने राज्य में ब्रिटिश व्यवस्था पर आधारित अपनी सरकार की प्रशासनिक सुधारों की एक श्रृंखला पेश की। उन्होंने सन् 1871 ई. में अगरतला नगरपालिका की स्थापना की।

महाराजा बीरचंद्र माणिक्य समाज सुधारक, आधुनिक कानून व्यवस्थापक, कवि, संगीत साहित्य कला और संस्कृति के अग्रदूत थे। वे स्वयं भी ब्रजावली में वैष्णव पदावली के एक महान कवि थे, एक गीतकार, एक संगीतज्ञ, एक संगीतकार, एक महान चित्रकार और एक फोटोग्राफर थे। वे उर्दू में उतनी ही धाराप्रवाह से बोलने में सक्षम थे जितना कि वे अपनी मातृभाषा में बोल सकते थे। उन्होंने 'होरी', 'उच्छास', 'सुहाग', 'श्रीश्रीझुलनगीति', 'प्रेम मरीचिका' एवं 'आकाश कुसुम' नामक काव्यग्रन्थों की रचना की। फोटोग्राफी में उनकी असाधारण दक्षता थी। महाराजा ने 'मानाघर' नाम से



महाराजा बीरचंद्र माणिक्य

अपना खुद का स्टूडियो बनवाया और फोटोग्राफी से संबंधित कामों को स्वयं करते थे। उनके स्टूडियो में किसी का भी प्रवेश वर्जित था। साधारण से असाधारण एवं न्यूड फोटो इत्यादि उन्होंने बहुत ही कुशलता के साथ बनाए। उस समय देश के कुछ महंगे और अच्छे कैमरों में से एक उनके पास था। उन्होंने पूर्वी भारत में डगुएरियोटाइप तस्वीरों (Daguerreotype photography) का प्रचलन किया था। उनके दरबार में उच्चकोटि के योग्य कलाकारों की उपस्थिति के कारण उनके दरबार सभा की तुलना राजा विक्रमादित्य की नवरत्न सभा से की जाती थी। विख्यात ध्रुपद् गायक 'जदुभट्टक', लखनऊ के प्रसिद्ध संगीतज्ञ 'उस्ताद कशेम अली खान' और उनकी पत्नी, ग्वालियर के महान एस्राज वादक 'हैदरखान', उत्तर प्रदेश के सितार और वीणावादक 'उस्ताद निशांत हुसैन खान', पखोवाज वादक 'केशबचन्द्र मित्र', खेयाल और टप्पा गायक 'भोलानाथ चक्रवर्ती', सितारवादक 'नवीनचन्द्र गोस्वामी', वाँयलिन वादक 'हरिश्चन्द्र बर्धन', कोलकाता के कीर्तनगायक 'प्रतापचन्द्र मुखर्जी', ढाका के तबला वादक 'हंसुर उस्ताद', रामपुर के 'इमाम बाईजी', बनारस के 'चन्द्रबाईजी', कश्मीर के उस्ताद 'कलंदर बक्स' इत्यादि महाराजा बीरचन्द्र की सभा की शोभा बढ़ाते थे।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के विश्व की कई महान हस्तियों के साथ घनिष्ठ संबंध थे, लेकिन त्रिपुरा के राजाओं के साथ उनका संबंध अपनी विशिष्टता में उत्कृष्ट था। वर्ष 1882 में महाराज बीरचंद्र के शासनकाल के दौरान रवीन्द्रनाथ टैगोर की त्रिपुरा से संपर्क की शुरुआत हुई। उस समय कवि की उम्र 21 वर्ष थी। लेकिन उस उम्र में भी, जब उनका नाम बंगाल में भी नहीं सुना जाता था, युवा कवि को त्रिपुरा के शासक द्वारा हार्दिक अभिनंदन दिया गया था। महाराजा बीरचंद्र माणिक्य ने अपने सचिव राधा रमण घोष को उस समय की उनकी एकमात्र काव्यरचना 'भग्ना-हृदय' (Broken Heart) के लिए सर्वश्रेष्ठ कवि का गौरव प्रदान करने के लिए कलकत्ता भेजा था। राजा के दूत को देखकर टैगोर भी आश्चर्यचकित हो गए। कैसे 1913 के नोबेल पुरस्कार विजेता को दूर देश के एक राजा ने वर्ष 1882 में खोजा?

रवीन्द्रनाथ टैगोर त्रिपुरा के शासकों की चार पीढ़ियों के मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक बन गए थे। कला, साहित्य, विज्ञान और संस्कृति के विकास हेतु टैगोर ने जब भी त्रिपुरा के राजाओं से संपर्क किया, तो उनकी जो भी मांग रही उन्हें सहृदय स्वीकृति मिली। टैगोर द्वारा 'विश्वभारती', जो आज दुनिया भर से कला और संस्कृति के प्रशंसकों को अपनी ओर आकर्षित करती है, की स्थापना में त्रिपुरा के शासकों का बहुत बड़ा योगदान था। महाराजा राधा किशोर (1896-1909 ए.डी.) की सहायता के बिना टैगोर के विश्वभारती का सपना अधूरा रह जाता। तदर्थ अनुदान के अलावा, भवनों और अस्पतालों के निर्माण में योगदान, वैज्ञानिक उपकरणों की खरीद, के साथ-साथ विश्वभारती को रुपये एक हजार का वार्षिक अनुदान लगभग आधी सदी तक त्रिपुरा राज्य से प्राप्त होता था। प्रसिद्ध वैज्ञानिक आचार्य जगदीशचन्द्र बोस जब आर्थिक तंगी के कारण अपने वैज्ञानिक अनुसंधानों छोड़ने वाले थे।

तब रवीन्द्रनाथ टैगोर ने जगदीशचन्द्र बोस के लिए महाराजा राधाकिशोर माणिक्य से आर्थिक सहायता की मांग की। उस समय राज्य की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के बावजूद भी महाराजा ने उनको कई किस्तों में ₹ 50,000/- देकर आर्थिक सहायता की एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर से इस सहायता के बारे में किसी को भी ना बताने का अनुग्रह किया। महाराजा की मृत्यु के 10 साल बसु विज्ञान मंदिर की स्थापना के समय आचार्य जगदीश चन्द्र बोस ने अत्यंत उदारता की इस कहानी को सार्वजनिक किया। बाद में जगदीशचन्द्र बोस को उसी वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। महाराजा बीर बिक्रम किशोर माणिक्य ने टैगोर को 'भारत-भास्कर' की उपाधि से सम्मानित किया।

महाराजा राधाकिशोर के पुत्र बीरेन्द्रकिशोर (1909-1923 ए.डी.) एक उच्चकोटि के चित्रकार थे। उनके तैल-चित्र 'सन्यासी', 'झूलन', 'बंशीवादन शिक्षा' इत्यादि न केवल भारत बल्कि विश्व के चित्र-समालोचकों को अचंभित किया। त्रिपुरा के नाट्य-जगत में वह एक किंवदंति पुरुष थे। वह नाट्यकार, सुरकार और निर्देशक के रूप में विख्यात थे। वह सितार, एसाज, मणिपुरी खोल और बांसुरी के उच्चश्रेणी कलाकार थे। उन्होंने त्रिपुरा से विख्यात मणिपुरी नृत्यशिल्पी 'बुद्धिमंत सिंह को शांतिनिकेतन में नृत्य-शिक्षक के रूप में भेजा था।

महाराजा बीर बिक्रम किशोर (1923-1947 ए.डी.) को साहित्य, संगीत और कला के प्रति रुचि उत्तराधिकार में प्राप्त हुई थी। उनके रचित नाटक 'श्रीराधाकृष्णोर लीला बिलास' वर्ष 1934 में कलकत्ता (त्रिपुरा हाउस) में प्रदर्शित हुआ। वह भी पिता बीरेन्द्रकिशोर की भांति सितार, एसाज और बांसुरी के विख्यात कलाकार थे। उन्होंने अपने वादनकला को रिकॉर्ड किया था लेकिन प्रकाशित करने की अनुमति नहीं दी थी। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के 80वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य पर सारे देश में एकमात्र त्रिपुरा के महाराजा ने कवि को 'भारत-भास्कर' की उपाधि से सम्मानित किया।

त्रिपुरा राजवंश में शाही परिवार के दूसरे सदस्य भी साहित्य, संगीत और चित्रकला में उत्कृष्ट कलाकार थे। जिनमें राजकुमारी अनंगमोहिनी देवी, महाराज कुमार समरेन्द्र चन्द्र देबबर्मन, महाराज कुमार महेन्द्र देबबर्मन, धीरेन्द्र कृष्ण देबबर्मन, कर्नल महीमचन्द्र देबबर्मन, राजकुमारी कमलप्रभा देवी और विख्यात संगीत निदेशक सचिन देबबर्मन एवं उनके पुत्र राहुल देबबर्मन आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

कला एवं साहित्य के साथ त्रिपुरा का ऐतिहासिक लगाव रहा है। जिसका उचित मूल्यांकन कालांतर में नहीं हो सका। संगीत, साहित्य कला के क्षेत्र में त्रिपुरा राजपरिवार के सदस्यों के उच्चकोटि सृजनशीलता आज भी अविस्मरणीय है।



मातृभाषा हिंदी से अटूट प्रेम करने वाले शख्स : फादर कामिल बुल्के

सबसे मशहूर अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश रचने वाले फादर कामिल बुल्के का जन्म बेल्जियम में हुआ था। यहां आकर उन्होंने हिंदी सीखने के लिए अपना आजीवन जुनून विकसित किया उन्होंने लिखा है :-

“मैं जब 1935 में भारत आया तो अचंभित और दुःखी हुआ। मैंने महसूस किया कि यहां पर बहुत पढ़े-लिखे लोग भी अपनी सांस्कृतिक परंपराओं के प्रति जागरूक नहीं हैं। यह भी देखा कि लोग अंग्रेजी बोलकर गर्व अनुभव करते हैं। तब मैंने निश्चित किया कि आम लोगों कि इस भाषा (हिंदी) में मैं महारथ हासिल करूंगा।”

यह जानकर आश्चर्य होता है कि किसी इसाई मिशनरी की सर्वश्रेष्ठ कृति हिंदू देवता राम से संबंधित हो सकती है। यह सच है कि ज्यादातर आलोचकों कि नजर में फादर कामिल बुल्के द्वारा रचित ‘रामकथा : उत्पत्ति और विकास’ उनकी श्रेष्ठ कृति है। यूं तो उन्होंने इस विषय पर ही अपनी पीएचडी थिसिस जमा की थी लेकिन इस विषय पर बाद में वे 18 साल तक काम करते रहे। इस ग्रंथ के बारे में उनके गुरु और हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने लिखा है :-

“इसे रामकथा संबंधी समस्त सामग्री का विश्वकोश कहा जा सकता है। वास्तव में यह शोधपत्र अपने ढंग की पहली रचना है। हिंदी क्या किसी भी यूरोपीय या भारतीय भाषा में इस प्रकार का कोई दूसरा अध्ययन उपलब्ध नहीं है।”

भारत में फादर कामिल बुल्के मृत्युपर्यंत हिंदी, तुलसीदास और वाल्मीकि के भक्त रहे हैं। इन्हें साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा सन् 1974 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया।



कार्यालयीन गतिविधियां

माननीय प्रधान महालेखाकार द्वारा कैमरे में कैद किए गए त्रिपुरा के कुछ आकर्षक छायाचित्र





खुमलुंग पार्क, टीटीएडीसी क्षेत्र



तृष्णा वन्यजीव अभ्यारण्य, त्रिपुरा के बटरफ्लाई पार्क की तस्वीर



भारत - बांग्लादेश मैत्री गार्डन, राजनगर ब्लॉक

माननीय प्रधान महालेखाकार द्वारा खींचे गए कुछ अन्य
छायाचित्र



हिंदी पखवाड़ा समारोह

प्रतिभागियों को पुरस्कृत करते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय।



कार्यक्रम के दौरान उपमहालेखाकार महोदय अभिभाषण पढ़ते हुए



एम नागेश्वर रेड्डी,
उप महालेखाकार

दिनांक 15.07.2021 से 17.07.2021 माननीया ए.डी.ए.आई. (सी.ए.जी.), सुश्री संगीता चौरा के कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) त्रिपुरा में निरीक्षण के समय की कुछ झलकियां





हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2021-22 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	क क्षेत्र	ख क्षेत्र	ग क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 100%	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 90%	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन /की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद।	100%	100%	100%

11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति	वर्ष में 2 बैठकें		
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)		
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हो।	40%	30%	20%

(न्यूनतम अनुभाग)

सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।

वसुधैव कुटुम्बकम्

सामग्री संकलन : श्री बिभास रंजन मंडल, माननीय प्रधान महालेखाकार

भारत की संस्कृति और विरासत के संबंध में वैदिक साहित्य के प्रभाव में अक्सर कई बुद्धिमान पुरुषों द्वारा बोली जाने वाली एक वाक्यांश है “वसुधैव कुटुम्बकम्”, जिसका अर्थ है कि “पूरी दुनिया एक परिवार है।” प्रश्न यह है कि यह वाक्यांश किस ग्रन्थ और श्लोक से लिया गया है? प्रसिद्ध प्राचीन ग्रंथों में से एक **हितोपदेश** कहता है :-

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

अर्थात् : यह मेरा है, यह उसका है, ऐसी सोच संकुचित चित्त वाले व्यक्तियों की होती है, इसके विपरीत उदारचरित लोगों के लिए तो यह सम्पूर्ण धरती ही एक परिवार जैसी होती है। लेकिन **हितोपदेश** इस वाक्यांश का बहुत बाद का स्रोत है। मूलरूप से यह **महोपनिषद्** से लिया गया है:-

अयं बन्धुरयं नेति गणना लघुचेतसां।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकं ॥ (महोपनिषद् अध्याय-6)

अर्थात् : यह अपना बन्धु है और यह अपना बन्धु नहीं है, इस तरह की गणना छोटे चित्त वाले लोग करते हैं। उदार हृदय वाले लोगों की तो सम्पूर्ण धरती ही परिवार है।

उदारः पेशलाचारः सर्वाचारानुवृत्तिमान

अन्तःसङ्ग-परित्यागी बहिः संभारवानिव

अन्तर्वैराग्यमादाय बहिराशोन्मुखेहितः

अयं बन्धुरयं नेति गणना लघुचेतसां

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकं

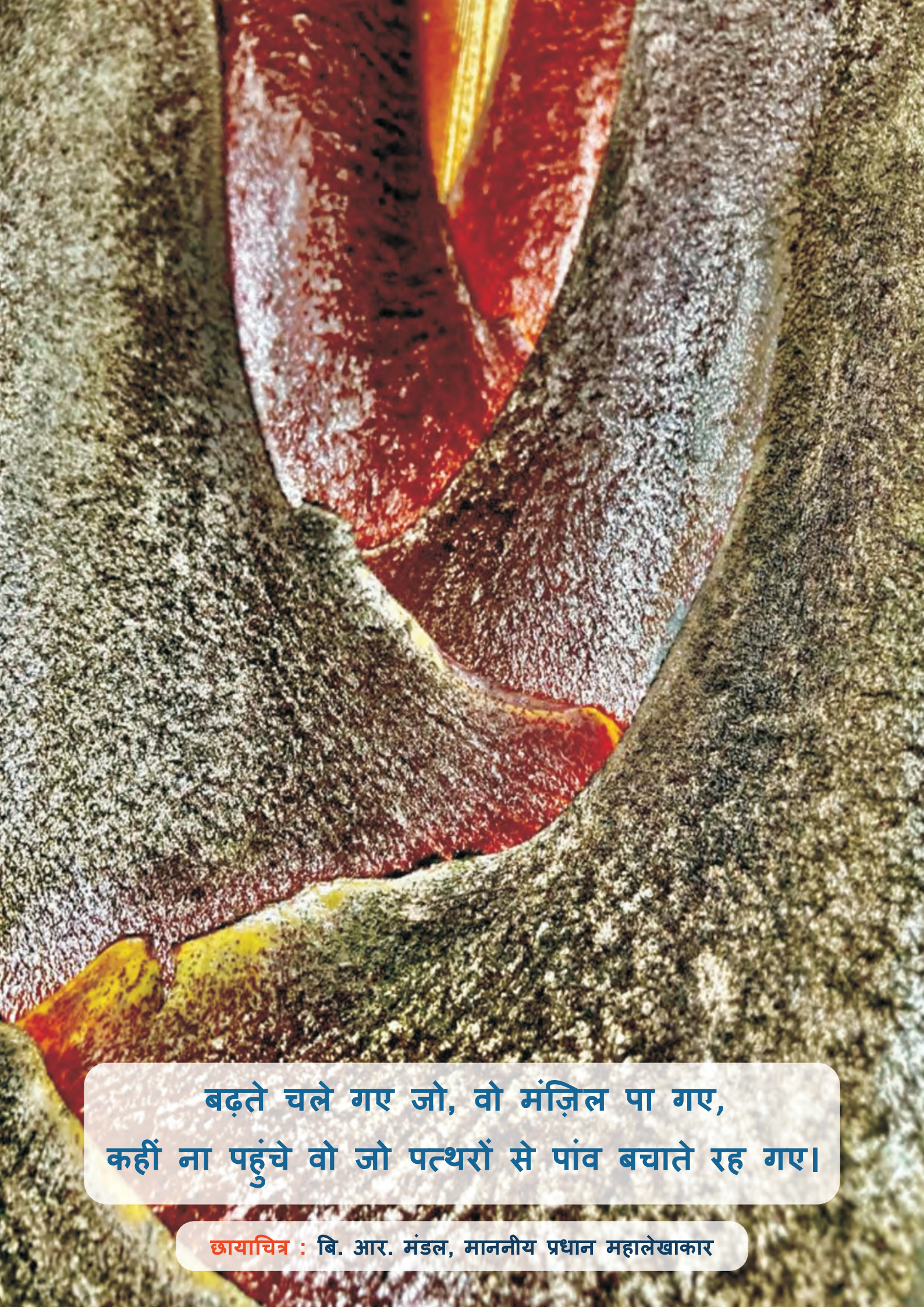
भावाभाव विनिर्मुक्तं जरामरणवर्जितं

प्रशान्त कलनारभ्यं नीरागं पदमाश्रय

एषा ब्राम्ही स्थितिः स्वच्छा निष्कामा विगतामया

आदाय विहरन्नेवं संकटेषु न मुह्यति (महोपनिषद् अध्याय-6)

अर्थात् : ब्राह्मी स्थिति में श्रेष्ठ रहने वाला व्यक्ति उदार, आचरण के स्थापित मानदंडों के अनुसार व्यवहार में हमेशा स्वच्छ और जीवन के सभी बंधनों से मुक्त होता है। भले ही बाहरी रूप से वे सांसारिक कर्तव्यों का पालन करते हुए प्रतीत होते हैं, लेकिन अंदर से वे सब कुछ त्याग चुके हैं। वे एक सामान्य नश्वर प्राणी की तरह किसी के साथ भेदभाव नहीं करते हैं। वे बुढ़ापे और मृत्यु जैसी सामान्य जीवन की सभी बाधाओं से मुक्ति प्राप्त कर चुके हैं, उनकी आग बुझ गई है और उन्होंने किसी भी बंधन को कोई आश्रय नहीं दिया है। इस प्रकार ब्राह्मी स्थिति, पूर्णतः शुद्ध है जो सभी तृष्णाओं और कष्टों से परे है। इस तरह के गुणों से भरपूर वे इस धरती पर निर्भय होकर, किसी भी विपत्ति का सामना करने के लिए स्वतंत्र रूप से घूमते हैं। "पंचतंत्र" की कहानियां भी इसी बारे में बात करती हैं जिसमें दुनिया के लिए अंध-प्रेम के खिलाफ चेतावनी दी गयी है।



बढ़ते चले गए जो, वो मंज़िल पा गए,
कहीं ना पहुंचे वो जो पत्थरों से पांव बचाते रह गए।

छायाचित्र : बि. आर. मंडल, माननीय प्रधान महालेखाकार